2017-18 - Sl. No.-01

ISSN : 2347-4319

शोधार्थी

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
शोध-पत्रिका

2017

प्रकाशक
मैथिली शोध छात्र परिषद्
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ओल्ड पी.जी. कैम्पस, ति.मां. भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर - 812007

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:29:47 +05'30'

*** ति.मा. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर**

11. जीवनदृष्टिमे 'तमस'क अनुवाद – निक्की प्रियदर्शिनी 41

12. बंगला सँ मैथिलीमे अनूदित 'अनुभव' एवं 'बदलि जाइछ घरेटा' – बिकेश कुमार 45

13. कलात्मक कृतिक अनुवादक 'रामदेव झा' – श्वेता भारती 49

14. मैथिली अनुवादमे 'छओ बिगहा आठ कट्ठा' – स्वीटी कुमारी 53

15. अनुवादक आशय कँ देखैत 'अरण्य फसिल' – लक्ष्मी टुडू 57

16. मैथिली अनूदित साहित्यमे 'ई राजधानी' – रूबी कुमारी 60

17. पंडित त्रय ओ 'पुरुष परीक्षा'क अनुवाद – बीरेन्द्र कुमार सिंह 63

18. नारी चेतना कँ जगबैत 'उल्लंघन' – राहुल कुमार मिश्र 68

ooo

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:30:14 +05'30'

मैथिली अनुवादमे 'छओ बिगहा आठ कट्ठा'

✍ स्वीटी कुमारी

मैथिली साहित्यमे समीक्षात्मक निबंध, आलोचनांक संग समसामयिक सामाजिक, सांस्कृतिक विमर्शपर लगातार लिखए वला व्यक्तित्व मे रमानन्द झा 'रमण' छथि। साहित्यकला ओ आलोचना पर लिखल हिनक मौलिक ओ सम्पादित दू दर्जन सँ बेसी पुस्तक प्रकाशित भए चुकल अछि जे सभक ध्यान आकृष्ट करैत अछि। एही कड़ीमे हिनक नवीनतम अनूदित पोथी –'छओ बिगहा आठ कट्ठा' अछि।

रमानन्द झा 'रमण'क जन्म 2 जनवरी 1949क सरिसब पाही मधुबनी जिलामे भेल छनि। भारतीय बैंकिंग सेवामे रहितो रमण जी मैथिली भाषा साहित्यक अनन्य भक्त ओ उपासक रहलाह अछि। अवकाशग्रहण कएलाक बाद सँ हिनक जीवन सांस्कृतिक, साहित्यक विघटक एक प्रतिष्ठित संस्थाक सेवामे बीत रहल अछि। साहित्यक क्षेत्रमे अपन रचना सम्पादन ओ अनुवादक क्षेत्रमे हिनक प्रतिष्ठा रहल अछि। हिनका 'छओ बिगहा आठ कट्ठा' लेखक फकीर मोहन सेनापति उड़िया उपन्यासक मैथिलीमे अनुवादक हेतु प्रतिष्ठित सम्मान 'भाषा भारतीय सम्मान' भारतीय भाषा संस्थान मैसूर द्वारा 2006 मे देल गेल अछि।

हिनक मौलिक पोथी मे बेसाहल (2003), भजारल (2005), अखियासल (1995), मैथिली साहित्य ओ राजनीति (1994), मैथिली नव कविता (1993), नवीन मैथिली कविता (1981) आदि अछि। सम्पादन मे लगभग 20 गोट ग्रन्थ अछि जाहिमे मैथिलीक आरम्भिक कथा, श्यामानन्द रचनावली, जनार्दन झा 'जनसीदन' कृत 'निर्दयी सासु' आ 'पुनर्विवाह', पं. चेतना झाक कृति 'श्री जगन्नाथपुरी यात्रा', पं. तेजनाथ झाक कृति 'सुरराजविजय नाटक', रासबिहारी दास कृति 'सुमित', जीवछ मिश्र कृत 'रामेश्वर', पं. गोविन्द झाक 'अर्चा ओ चर्चा', 'रूचय तँ सत्य ने तँ फूसि, पं. पुण्यानन्द झाक कृति 'मिथिला दर्पण', 'यदुवर रचनावली' उग्रानन्दकृत 'शिवगंगा', 'मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज', श्रीबल्लभ झाकृत 'विद्यापति विवरण', 'कवीश्वर चेतना', मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य, जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सनकृत गीत दीनाभद्रीक ओ गीत नेवारक तथा मैथिली व्याकरण आदि, अनुवादमे– मौलियरक दू नाटक, छओ बिगहा आठ कट्ठा, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा (यूनीकोड) टाकाक गाछ एवं लखपति जी लुटेरा (रिजर्व बैंक) मैथिली व्याकरण आदि।"[1]

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:30:34 +05'30'

2017-18 Sl. No.-2

ISSN 2229-5291 MAITHILI

मैथिली

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

शोध-पत्रिका

12

2017

प्रकाशक

मैथिली साहित्य परिषद्

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

नरगौना पैलेस

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा 846008

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:30:56 +05'30'

अनुक्रमणिका

1.	मैथिली साहित्यमे मङरौनीक योगदान	प्रो. भीमनाथ झा	9
2.	कविवर लाल दास : राम काव्य	प्रो. वीणा ठाकुर	13
3.	रचनाधर्मिता आ सामाजिक सरोकार	प्रो. नीता झा	18
4.	नेपाल आ मैथिली	प्रो. धीरेन्द्र नाथ मिश्र	22
5.	व्यथा-कथा : एक विहगावलोकन	प्रो. रमण झा	25
6.	मुक्तिपथिक महिनाथ	डॉ. मित्रनाथ झा	28
7.	संस्कार गीतक सांस्कृतिक महत्त्व	डॉ. राजन कुमार सिंह	32
8.	'लिली रे'क "हम राजी छी" : हमर दृष्टिमे	डॉ. उषा चौधरी	34
9.	सोनाक खोप : एक विहंगम दृष्टि	डॉ. नरेन्द्र नाथ झा	37
10.	भारतीय भाषा संस्थान आ मैथिलीक विगत चारि वर्ष	डॉ. अजीत मिश्र	40
11.	मैथिलीक अनुवाद-साहित्य आ' 'एक भारतीय यात्री'	डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा	45
12.	परिणीता : वर्तमान संदर्भ संग ठाढ़ कथा-संग्रह	डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा	48
13.	आत्मकथा : विशिष्ट संदर्भ 'समयकें धङैत'	सुरेन्द्र भारद्वाज	52
14.	मैथिली कथा साहित्य संग 'परिणीता'	अभिलाषा	55
15.	मैथिली बाल साहित्यक बढ़ैत डेग : खिस्सा सुनू बाउ	रागिनी रंजन	59
16.	2011-15मे प्रकाशित प्रमुख मैथिली समीक्षाक पोथी	स्वीटी कुमारी	61
17.	जवारा नहितन; एक समीक्षात्मक दृष्टि	सुनीता कुमारी	63
18.	गृहिणी-विदुषी 'नीरजा रेणु'	सुनीता झा	65
19.	विगत पाँच वर्षक मैथिलीक कथा यात्रामे 'व्यथा-कथा'क स्थान	डॉ. अरुण कुमार ठाकुर	67
20.	युग प्रभा : एक अध्ययन	मनोज कुमार साह	70
21.	मैथिली काव्यमे फगुआ वर्णन	सोनी कुमारी	72

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:31:22 +05'30'

2011-15 मे प्रकाशित प्रमुख मैथिली समीक्षाक पोथी

स्वीटी कुमारी

मैथिली साहित्यक सृजन विविध विधामे निरंतर भऽ रहल अछि । विशेषत: एकैसम शताब्दीमे कविता, कहानी, लघुकथा, कथा, उपन्यास आ समीक्षा शास्त्रक सतत लेखन एवं प्रकाशन एकटा सुखद अनुभूतिक विषय अछि ।

विवेच्य आलेखमे हम 2011 मे प्रकाशित समीक्षाक बहुमूल्य पोथी 'मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन' डॉ. देवनारायण साह रचित अछि । एहि पोथीक प्रकाशन शेखर प्रकाशन पटनासँ भैल छैक, जे आठ अध्यायमे विभक्त छैक ।

एहि पोथीक विशेषता अछि जे 'निष्कलुष ग्राम्य वातावरणक प्रभावेँ डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' अपन एकान्त साधनासँ विभिन्न प्रवृतिजन्य मनोरम कविता सभक रचना कएने छथि जाहिमे प्रेमक मधुर संगीत अछि तँ यौवनक उद्दाम उत्साह सेहो देशक व्याकुल आह्वान अछि तँ प्रकृतिक मधुर सौंदर्य सेहो हिनक कवितामे सभसँ बढ़ि कए जे भाव प्रवाहित अछि ओ अछि मानवताक रक्षा लेल व्याकुल भावनाक अभिव्यक्ति । संगहि प्राकृतिक भावुक सौन्दर्य ओ विलासिताक वैभवसँ सेहो साक्षात्कार करबैत अछि ।"

भाव-विदग्धता ओ वागविदग्धता, सुन्दर ओ संतुलित समन्वयक कारणेँ ई ओहि साहित्यक रूपान्तरण भए सकलाह ।

दोसर प्रमुख पोथी जे 2015 मे प्रकाशित भेल छैक जकर शीर्षक छैक 'मैथिली महाकाव्यक शिल्पविकासमे चाणक्यक योगदान' जे प्रो. (डॉ.) रत्नेश्वर प्र. सिंह द्वारा रचित छैक आ आठ अध्यायमे विभक्त छैक संगहि शेखर प्रकाशन पटनासँ प्रकाशित छैक । 'एहिमे चाणक्य महाकाव्यक कथाशिल्प, चरित्रशिल्प, भावपक्ष, कलापक्ष एवं महाकाव्यक जीवन-दर्शनक संग महाकाव्यमे शिल्प संबंधी मौलिक प्रयोगशीलताक मीमांसा कएल गेल अछि जे उच्च कोटिक अछि । अलंकार शास्त्र निर्देशित महाकाव्य लक्षणक अक्षरश: अनुपालन अथवा परम्परा सँ संबद्ध रहैत नवीनता अनबाक प्रयास अछि ।"[2]

2014 मे 'चितिर-वितिर' डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क कृति अखियासल प्रकाशन मधुबनीसँ प्रकाशित छैक जाहिमे बत्तीसटा निबंधक समीक्षात्मक संचयन छैक जे मैथिली साहित्यक अनमोल निधि छैक । एहिमे संकलित लेख विभिन्न प्रयोजन एवं अवसरक लेल लिखल गेल अछि । 'एहि लेख सभमे व्यक्त विचारबोध आ प्रयुक्त स्रोत सामग्रीक चर्च लेखनकाल धरिक थिक । संकलित लेख सभमे संस्कृतिक संरक्षणक प्रसङ्ग अछि, संस्कृतिक पड़ि रहल प्रभावपर विचार अछि, मैथिलीक कार्यक्रमे विस्तारसँ भाषाक सरलीकरण प्रश्नक मैथिलीक प्रकृतिगत विशेषताक शरणक चिन्ता अछि । आठम दशकक किछु कथाकारक कृतिक विवेचना अछि, अवदानी व्यक्तिक कृतित्व-चर्चा आदि अछि ।"[3]

2014 मे 'देखल जा सकैछ' निक्की प्रियदर्शिनीक समीक्षात्मक निबंध संग्रह छैन्हि, विजया पब्लिकेशन दिल्लीसँ प्रकाशित भेल छैक जाहिमे उन्नैस गोट समीक्षात्मक निबंध छैक आ लेखिकाक प्रतिभाग उत्कृष्टताक दर्शन होइत छैक । संकलित पोथी मे सर्जनात्मक ओ समीक्षात्मक निबंधमे बालमन, युवामन ओ छात्रमनक नित्य नव-नव अनुभव, हृदयक भावाभिव्यक्ति मन मस्तिष्कक सतत चिन्तन ओ नवीन वैचारिक अभिव्यक्तिकेँ एहि पोथीक रूप

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:31:44 +05'30'

2017-18 SL. No.-06

THEMATICS
PUBLICATIONS PVT LTD
www.thematicsjournals.org

ISSN 0975-8313

THEMATICS

A PEER-REVIEWED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF ENGLISH STUDIES

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:32:13 +05'30'

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

From Routes to Roots: A Vision of the Indian Subcontinent in Salman Rushdie's Novels
Sajad Ahmad Ganie
42-54

Speech Act Theory: Its Usages and Significance
Shekhar Bhagwan Vispute
55-65

The Works Of Sri Sankaracharya
R. Subramony
66-71

Empowering Teachers: A New Epoch to Instigate
Suruchi Upadhyay
72-88

Indian Myths in New Avatar: A Study of Amish Tripathi's Immortals of Meluha
Deepak H. Shinde
89-95

Ideational meaning in Seamus Heaney's Poem *Had I not been awake*
Pratibha Bhimrao Bhosale
96 -108

Gallows View as a Detective Novel
Ranjit Annapa Bhadavankar
109-115

Mahesh Dattani, A Dramatist of Constraints And Commitment: A Critical Survey
Pinki Kumari
117-130

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:32:39 +05'30'

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:33:10 +05'30'

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE

THAMATICS

ISSN 0975-8313

Vol 8. Issue 1. Jan 2018. pp. 117-130

http://www.vishwabharati.in

Paper received: 20 Dec 2017.

Paper accepted: 02 Jan 2018.

© VISHWABHARATI Research Centre

Mahesh Dattani, A Dramatist of Constraints And Commitment: A Critical Survey

Pinki Kumari

It is a fact that regional playwrights started translating their plays or greeting their plays translated into English and Hindi after independence. "Though both English and Hindi. Continue to share the honour of being the two most important target languages of translation. English being the more important when it comes to print, making as it does for national visibility – Hindi outspaces English when it comes to performance and the issue of audience appeal."[1]

However, the original playwriting in English continues unabated despite the lack of scope for production in Theatre. It's a fact that in the last one hundred and seventy-seven years (i.e. between 1831 and 2007), We have hundreds of plays written in English in our country of these hardly fifteen to twenty dramatists have made their mark in that genre.

Notwithstanding a number of plays written earlier, Indian English drama has no tradition to fall back on. However, we have a few Indian English playwrights who have tried their hands at

Pinki Kumari: Reaearch Scholar, Dept. of English,Jai Prakash University, Chhapra

2017-18 Sl. No.- 08

ISSN 2395-3721

INDIAN LITERATURE AND CULTURE TODAY

An Inter-Disciplinary Peer-Reviewed International Research Journal

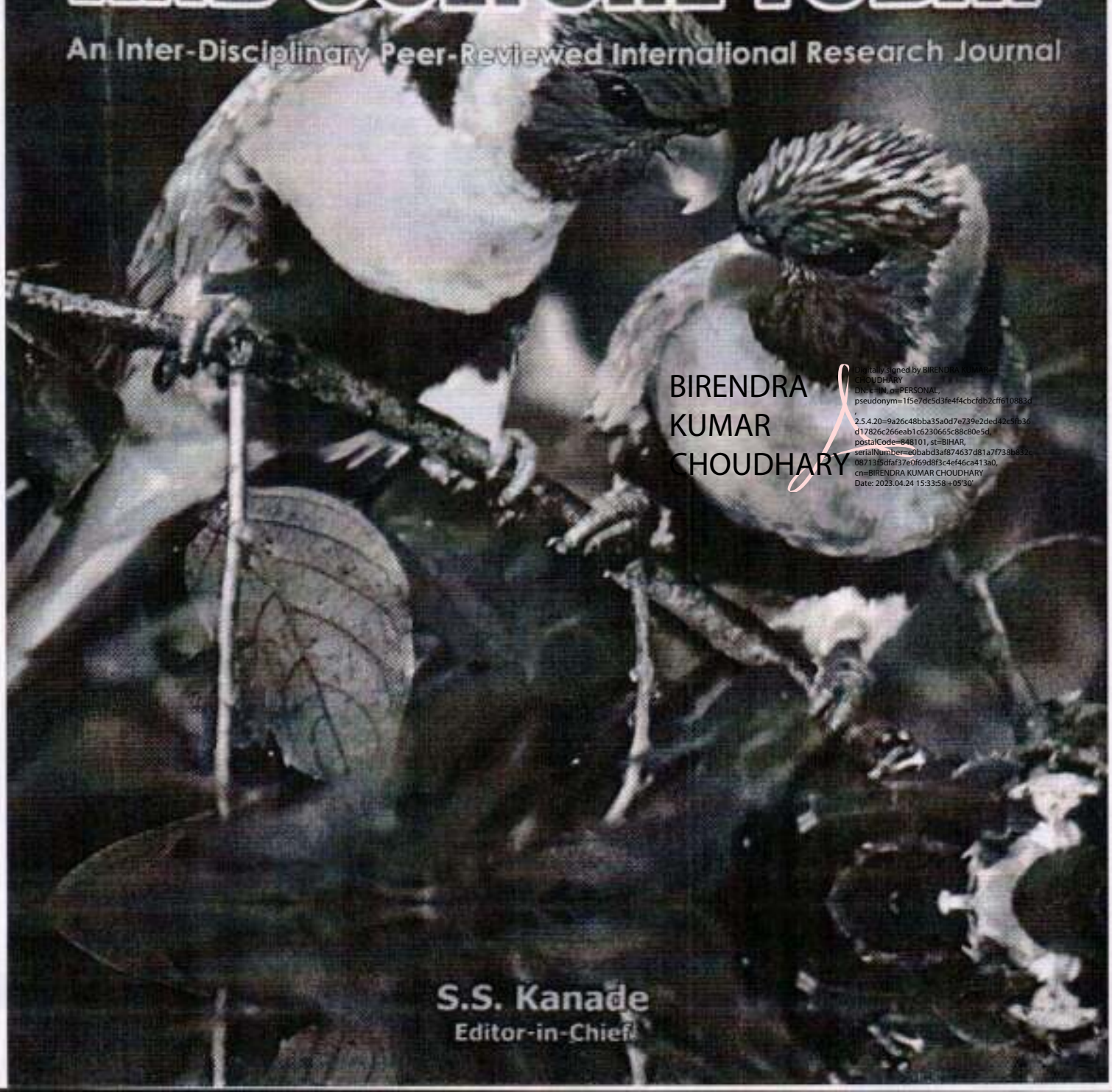

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42e5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=80babd3af874637d81a7f738b832c087135dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:33:58 +05'30'

S.S. Kanade
Editor-in-Chief

Difficult Daughters: Tradition and Modernity
Subhash V. Shelake
55 - 58

The Dramatic Contour and Context of Mahesh Dattani
Pinki Kumari
59-68

Indian Diaspora Fiction: Cry for Justice
Gharge Sunita Sunil
69 - 82

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:34:30 +05'30'

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

INDIAN LITERATURE AND CULTURE TODAY
ISSN 2395-3721
Vol 5. Issue 2. Feb 2018. pp. 59-68
http://www.vishwabharati.in
Paper received: 01 Jan 2018.
Paper accepted: 14 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:35:11 +05'30'

The Dramatic Contour and Context of Mahesh Dattani

Pinki Kumari

For the healthy growth of any art, both feeling and form should move together. However deep and profound the feeling of an artist be, it fails to arouse poetic response in readers if it is not well- formed. Both feeling and form are reciprocal. They are not two separate entities but they are just like train and engine or boat and boatsman; They are like a tree in which its different parts make an organic whole. A true art is not meant for teaching and preaching. Its primary duty is to give delight; its purpose is chiefly aesthetic. History is replete with several instances where only those poets and artists reached the zenith of perfection who maintained a perfect blending of both feeling and form. Mahesh Dattani belongs to such category of writers who champion the cause of true art- free from any theory, universal in taste and flavour, appealing to all sections of society, never bound to any caste, class and creed.

Theatre, according to Mahesh Dattani, "is a reflection of what you observe. To do anything more would be to become didactic

Pinki Kumari: Research Schlor, Dept. of English Jai Prakash University, Chapra, Bihar.

2017-18 Sl. No.- 09

ISSN 2395-3721

INDIAN LITERATURE AND CULTURE TODAY

An Inter-Disciplinary Peer-Reviewed International Research Journal

Vol 4 Issue 10 October 2017

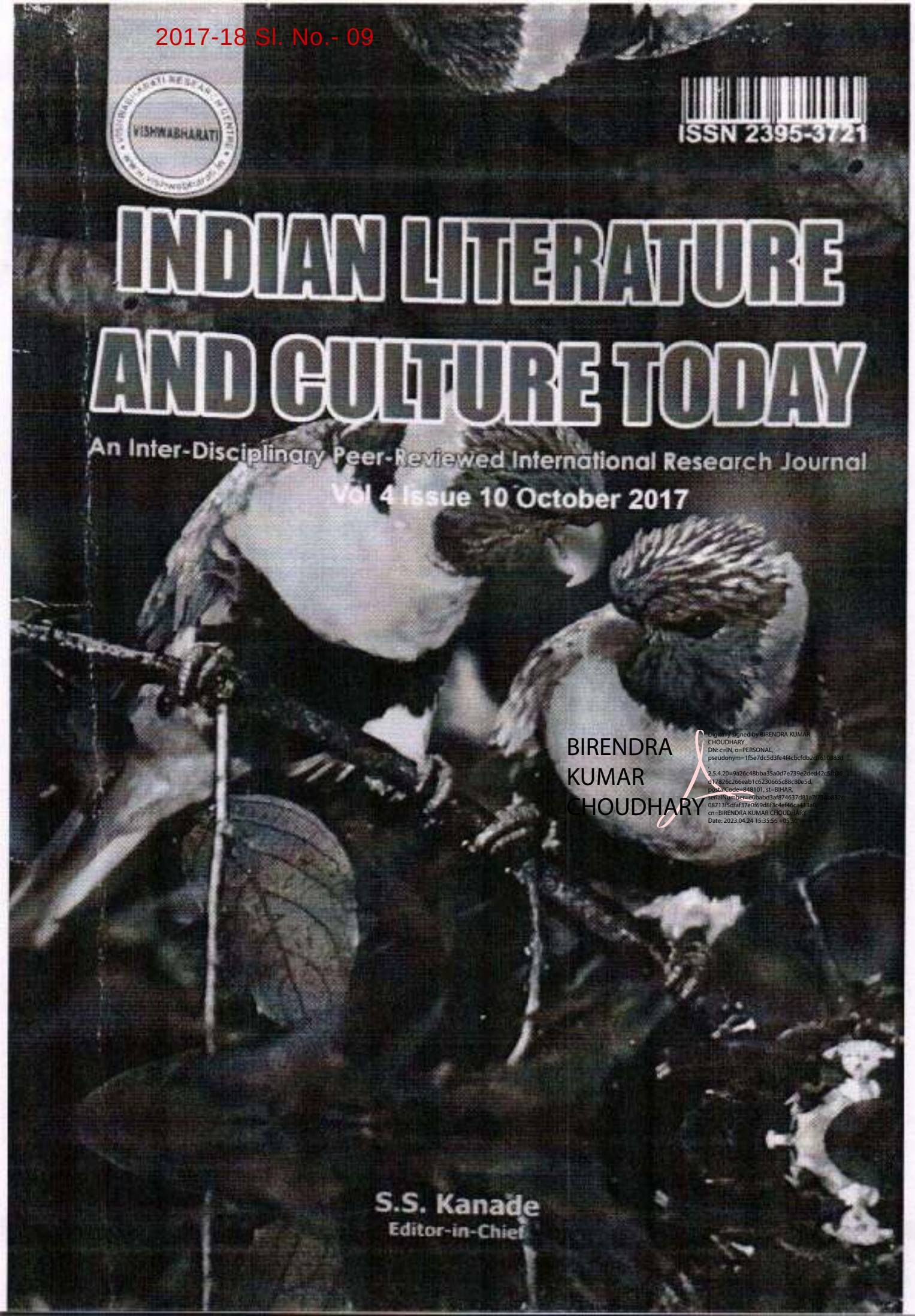

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cd1d10883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5d36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f798b8320871 3f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46c3413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:35:56 +05'30'

S.S. Kanade
Editor-in-Chief

Quest for Self in the Fiction of Shashi Deshpande
S.B. Radhika Bai
60 - 68

Pollution on the Tributaries of Bhima River: A Study
Pratap Ramchandra Dighavkar
69 - 81

Mahesh Dattani's Dramaturgy: A critical Analysis in the Matrix of Indian English Tradition
Pinki Kumari
82 - 90

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:37:21 +05'30'

VISHWABHARATI
RESEARCH CENTRE

VISHWABHARATI

INDIAN LITERATURE AND CULTURE TODAY
ISSN 2395-3721
Vol 4. Issue 10. Oct 2017. pp. 82 - 90
http://www.vishwabharati.in
Paper received: 08 Sept 2016.
Paper accepted: 14 Nov 2016.
© VISHWABHARATI Research Centre

Mahesh Dattani's Dramaturgy: A critical Analysis in the Matrix of Indian English Tradition

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:37:58 +05'30'

Pinki Kumari

The historicity of the Indian dramatic tradition can be traced from the 5th century A.D. when Kalidas wrote his plays, particularly his *Sakuntala*, Sanskrit literature is the best of all literature on Indian soil and the repository of Indian literary tradition. The greatest theoretician of dramatic literature is Bharata and his *Natyasastra* (5th B.C) is the landmark achievement in dramaturgy in India. This is older than Aristotle's Poetics (330 BC), Which is the high watermark in dramaturgy in the West. *Natyasastra* is regarded as the '*Fifth Veda*' in India.

In India, dramas were written in regional literatures (or Bhasha literatures) in imitation of Sanskrit dramas in the long past. Though Indian English drama owes its origin to K.N. Banerjee's *The Persecuted or Dramatic Scenes Illustrative Of The Present State Of Hindu Society in Calcutta* (1831), it is primarily a phenomenon of the twentieth century. In addition to dramas written in the twentieth century, a number of dramas from Bhasha literatures were

Pinki Kumari: Research Scholar, English, J. P. University, Chapra

2017-18 Sl No.-04

Impact Factor : 3.963 (IIJF)

UGC NO.46953

Registration No. 1803/2008

ISSN :- 2319-6297

The Original Source

Journal for All Research

An Interdisciplinary Quarterly Research Peer Reviewed Journal

Editor in Chief
Prof. (Dr.) Ashok Kumar Singh

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastav
Dr. B.K. Srivastav

Founder
Late Prof. S.N. Sinha
Eminent Historian & Former HOD
Dept. of History
Jamnia Millia Islamia, New Delhi

Volume 4.1 No. -18 (Oct.-Dec. 2017)

Published by
Centre for Historical and Cultural Studies & Research
Varanasi (U.P.) India

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:38:33 +05'30'

CONTENT

58.	गांधी का संक्षिप्त परिचय और राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश का ऐतिहासिक विश्लेषण डॉ० अमरेन्द्र कुमार झा	....	210-213
59.	विजयनगर साम्राज्य पर बाह्य सम्बन्धों का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव अजीत कुमार देव	....	214-216
60.	विभिन्न ट्राइबल एक्ट और आदिवासी की जीवन दशा राजेश कुमार साहनी	....	217-219
61.	स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका डॉ० सुनिता कुमारी	....	220-221
62.	बौद्धधर्म में वर्णित बोधिसत्व धर्म डॉ० पप्पू कुमार	....	222-223
63.	पं० बलवन्तराय भट्ट : एक महान् 'वागेयकार' प्रीति सिंह	....	224-225
64.	पुष्टिमार्गीय भक्ति संगीत का स्वरूप प्रमोद कुमार	....	226-227
65.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में ग्रामीण विकास की भूमिका पूजा साहु	....	228-229
66.	अंग्रेजी राज्य की स्थापना में प्लासी के युद्ध का ऐतिहासिक महत्व : डॉ अश्विनी कुमार निराला	.....	230-233
67.	प्राचीन भारत में जाति प्रथा का उद्भव: एक ऐतिहासिक विश्लेषण डॉ० विनोद कुमार	....	234-235
68.	मुगल शासन और परिवहन प्रणाली डॉ० ममता कुमारी	....	236-240
69.	इतिहास : आलोचना और नागवर सिंह डॉ० संजय कुमार सिंह	...	241-243
70.	हिन्दी के लेखक, कवि व निबंधकार रामधारी सिंह 'दिनकर' डॉ कुमारी कुंदन	...	244-246
71.	Industrial Scenario in Bihar: A Critical Study Dr. Aruna Jha	...	247-251
72.	जाति साहित्य के आलोक में शील, समाधि एवं प्रज्ञा का परिशीलन डॉ. सरिता कुमारी	....	252-254

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:39:08 +05'30'

Impact Factor : 3.953 (IIJF)

ISSN :- 2319-6297

मुगल शासन और परिवहन प्रणाली

डॉ० मनता कुमारी*

सारांश

मुगलकालीन शासन व्यवस्था अत्यधिक केन्द्रीकृत नौकरशाही व्यवस्था थी. सम्राट को प्रशासन की गतिविधियों को भली-भाँति संचालित करने के लिए एक मंत्रिपरिषद की आवश्यकता होती थी. बाबर के शासन काल में वज़ीर का पद काफी महत्वपूर्ण था, परन्तु कालान्तर में यह पद महत्वहीन हो गया।

प्रस्तावना

मुगलकालीनन शासन व्यवस्था अत्यधिक केन्द्रीकृत नौकरशाही व्यवस्था थी. सम्राट को प्रशासन की गतिविधियों को भली-भांति संचालित करने के लिए एक मंत्रिपरिषद की आवश्यकता होती थी. बाबर के शासन काल में वज़ीर का पद काफी महत्वपूर्ण था, परन्तु कालान्तर में यह पद महत्वहीन हो गया:-

(1) मंत्रिपरिषद को विजारत कहा जाता था।

(2) बाबर के शासनकाल में वजीर पद काफी महत्वपूर्ण था।

(3) सम्राट के बाद शासन के कार्यों को संचालित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी वकील था, जिसके कर्तव्यों को अकबर ने दीवान, मीरबख्श, सद्र-उस सद्र और मीर समन में विभाजित कर दिया।

(4) औरंगजेब के समय में असद खान ने सबसे ज्यादा 31 साल तक दीवान के पद पर कार्य किया।

(5) मीरबख्श द्वारा तरखत नाम के पत्र पर हस्ताक्षर के बाद ही सेना को हर महीने वेतन मिल पाता था।

(6) जब कभी-भी सद्र न्याय विभाग के प्रमुखों का कार्य करता था तब उसे काजी कहा जाता था. लगानहीन भूमि का निरीक्षण सद्र करता था. सम्राट के घरेलू विभागों का प्रधान मीर समान कहलाता था।

(7) सूचना और गुप्तचर विभाग का प्रधान दरोगा-एडाक चौकी कहलाता था।

(8) शरियत के प्रतिकूल काम करने वाले को रोकना, आम जनता को दुश्चरित्र से बचाने का काम मुहतसिब नाम का अधिकारी करता था।

(9) प्रशासन की दृष्टि से मुगल साम्राज्य का बंटावारा सूबों में, सूबों का सरकार में, सरकार का परगना और महाल में महाल का जिले या दस्तूर में और दस्तूर जिले में बंटे होते थे।

(10) मुगल काल में सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसे मावदा या दीह कहते थे।

(11) मावदा के अंतर्गत छोटी-छोटी बस्तियों को नागला कहा जाता था।

(12) शाहजहां के शासनकाल में सरकार और परगना के मध्य चकला नाम की एक नई इकाई की स्थापना की गई।

मुगल काल के प्रमुख अधिकारी और कार्य

पद

कार्य

---

* इतिहास विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:39:48 +05'30'

2017-18 Sl. No.-05

Impact Factor : 2.132
Registration No. 206
UGC Serial No. 42685
ISSN :- 2348-6228

CURRENT JOURNAL

Journal For All Research

An International Peer Reviewed Research Refereed Monthly Journal

Editor in Chief
Prof. J. N. Singh
Department of Sociology
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastava
Dept. of History
Faculty of Social Science
Banaras Hindu University
Varanasi

Volume 5 .2 No.-18 (April 2018)

Published by
Vishal Bharat Sansthan
Varanasi (U.P.) India

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:40:37 +05'30'

CONTENT

- EFFECT OF ABIOTIC VARIABLES ON THE FISH FAUNA OF BANGARI RIVER IN THE CHAMPARAN DISTRICT (BIHAR) IN RESPECT TO THE SOCIO-ECONOMIC CONDITIONS OF FISHERMAN 72-78
  Meeta Kumar
  Dr. A.P. Mishra
- महिला मानवाधिकार से वैधानिक स्वरूपों का विकास 79-82
  डॉ० संजय पासवान
- बिहार की अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन के कारकों का विश्लेषण 83-86
  धीरेन्द्र कुमार राय
- **PEASANT AND TRIBAL MOVEMENTS IN INDIA : A STUDY** 87-89
  Dr. Rakesh Kumar Roy
- उत्तर बिहार के आर्थिक विकास में रेलवे का योगदान 90-92
  नागेन्द्र कुमार राय
- मिथिला की संस्कृति में लोकदेवों की महत्ता 93-96
  ऋषि कुमार देव
- स्वयं सहायता समूह का महिला सशक्तीकरण में योगदान 97-98
  Arpita Agrawal
- महात्मा गांधी के अनुसार अहिंसा का व्यवहारिक वैशिष्ट्य राजनीति में अहिंसा का स्थान 99-101
  डॉ० अमरेन्द्र कुमार झा
- Role of Higher Education in Sustainable Development in Indian Perspectives 102-105
  Ram Kishor Kumar
- रामायण में संगीत 106-107
  प्रीति सिंह
- महाभारत में संगीत 108-109
  प्रमोद कुमार
- महाप्राण निराला की कविता में समकालीन यथार्थ 110-112
  डॉ० उमेश पाण्डेय
- स्त्री असमानता एवं इतिहास लेखन 113-115
  डॉ० अखिलेश्वर कुमार गुप्ता
- दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय औपनिवेशिक राज्य की स्थापना 116-118
  डॉ० अश्विनी कुमार निराला
- पूर्व मध्यकालीन बिहार के नारियों की सामाजिक स्थिति 119-120
  डॉ.विनोद कुमार
- प्रथम विश्वयुद्ध के समय भारत की राजनीतिक स्थिति 121-123
  अमरकांत लाल
- स्वतंत्र भारत में पंडित जवाहरलाल नेहरू की आर्थिक नीति 124-125
  नीतांजली कुमारी
- गुप्तकालीन में परिवहन एवं यातायात प्रणाली 126-128
  डॉ० ममता कुमारी
- साहित्य में राजनीति, संवेदनशीलता–रचनाशीलता–लोकजीवन और नागरबोध की कसौटी 129-131
  डा० संजय कुमार सिंह

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:48:31 +05'30'

Impact Factor : 2.132

ISSN :- 2348-6228

मुगलकाल में परिवहन एवं यातायात प्रणाली

डॉ० ममता कुमारी*

सारांश :

"मुगलकालीन भारत में देश की अधिकतर जनसंख्या गाँवों में रहती थी। नगरों या कस्बों में रहने वाली की संख्या अपेक्षाकृत कम से बहुत कम थी परंतु कम जनसंख्या होते हुए भी नगरों का उस समय के जन–जीवन तथा इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता था। मुगलकाल में नगर व्यापारिक और शासनिक रूप से बहुत समृद्ध थे जिसके कारण यहाँ यातायात व संचार के मुख्य केन्द्र थे। हस्तशिल्प और उद्योगों के केन्द्र होने के कारण अनेक भारतीय नगरों ने यहाँ निर्मित वस्तुओं की विशिष्टता और गुणवत्ता के कारण विदेशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। बन्दरगाहों पर अनेक व्यापारिक नगरों का उदय हुआ सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी कि नगर राजनीति प्रशासन के केन्द्र बिन्दु बन गए थे। मुगलकाल के कई नगर धार्मिक और सांस्कृतिक और शिक्षा कारणों से बहुत विशाल किया। इनमें से कई सूफी संतों के निवास व दरगाह तथा हिन्दू तीर्थ स्थानों को कारण तीर्थ यात्रियों के केन्द्र बिन्दु बने रहे मुगलकाल के नगर विशाल क्षेत्रफल और जनसंख्या वाले थे।

मुख्य शब्द :

व्यापारिक महत्व, शासनिक महत्व, यातायात व संचार, हस्तशिल्प, बन्दरगाह, सांस्कृतिक, सूफी संत, दरगाह, तीर्थ यात्री।

प्रस्तावना

मुगलकाल में नगर राजनीतिक और यातायात के मुख्य बिंदु होने के कारण यहीं के लोगों ने बहुत प्रसिद्धि पाई थी मुगलकाल में नगर प्रशासनिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र रहे और सुरक्षा की दृष्टि से राजधानी व नगरों को तो चार दिवारी से घेर रखा था जैसे दिल्ली और आगरा। भारत की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने के बावजूद शिल्प, कवि और पशुधन उत्पादों के कारण शहरों से जुड़ी हुई थी। कई शहरों की स्थापना मुगल सूबेदार और बादशाहों ने की थी, जो बाद में लोगों की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन गए थे। जैसे – कन्नौज व जाल्पी के जागीदार दिलेर खाँ ने शाहजहाँपुर नगर, मुजफ्फर खान – ए–खाना ने 1833 ई० में मुजफ्फरनगर, फर्रुख खाँ ने मुरादाबाद, मुहम्मद खाँ बंगश ने फर्रुखाबाद, ने गाजियाबाद, 1756 ई० में नजीबुद्दौला ने नजीबाबाद तथा 1765 ई० में फैजुल्ला खाँ ने रामपुर नगर की स्थापना की।

ऐतिहासिक विश्लेषण और वर्णनात्मक विधियों के आधार पर है। शोध–सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

वर्तमान शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है–

1.मुगल काल के दौरान आपको शहरीकरण की स्थिति से परिचित कराने के लिए।

2.मुगल काल के दौरान शहरों का महत्व बताएं।

3.मुगल काल के दौरान शहरों की श्रेणियां प्रदर्शित करना।

मुगल काल के दौरान शहरों को उनके महत्व के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, लेकिन इस वर्गीकरण का मतलब यह नहीं है कि नगर जिस श्रेणी में रखा गया था उसमें केवल वही कार्य होता था। वर्गीकरण केवल यह बताता है कि उस नगर में वह कार्य प्रमुख रूप से सम्पादित होता था।

परंतु अन्य कार्य भी नगर में गौण रूप से होते थे। मुगलकालीन नगरों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित थे:–

धार्मिक सांस्कृतिक नगर

धर्म शिक्षा व संस्कृति के केन्द्र के रूप में स्थापित नगरों को इस श्रेणी में रखा जाता है। बनारस, मथुरा, उज्जैन इत्यादि इसी प्रकार के नगरों का उदाहरण तथा इन नगरों में अनेक मन्दिर, मस्जिद तथा शिक्षा केन्द्र थे जहाँ लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं का आवागमन लगा रहता था।

राजनीतिक प्रशासनिक नगर

ये नगर काफी हद तक राजनीति और प्रशासन के केन्द्र थे, इसलिए इन नगरों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक था। मुगल साम्राज्य की राजधानी के रूप में दिल्ली तथा आगरा, अवध की राजधानी के रूप में फैजाबाद, उत्तर पश्चिम में लाहौर तथा दक्षिण में हैदराबाद। इसी प्रकार के नगर थे।

औद्योगिक–व्यापारिक नगर

इन नगरों को वाणिज्यिक केन्द्रों के रूप में विकसित किया गया था। उनकी प्रसिद्धी का आधार वहाँ स्थापित उद्योग या शिल्प थे। अहमदाबाद, पटना, सूरत, लुधियाना ऐसे ही नगर थे। वस्त्र उद्योग अवध के खैराबाद और दरियाबाद शहरों की प्रसिद्धि का आधार था। बयाना को नील उत्पादन के लिए जाना जाता था।

मुगल काल के संदर्भ में धार्मिक शहरों को मात्र करते समय ध्यान रखना महत्वपूर्ण है। भारत में ऐसे शहर नहीं थे, जिन्हें विशुद्ध रूप से इस्लामी शहर कहा जा सकता था, लेकिन ऐसे शहरों की भी कमी नहीं थी, जिनकी अधिकांश आबादी मुस्लिम थी और जहाँ उनके जीवन पर इस्लामी संस्कृति की स्पष्ट छाप थी। जो इन नगरों को अलग ही पहचान प्रदान करती थी। दिल्ली, आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, लाहौर आदि इसी प्रकार के नगर थे। इन नगरों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख जी०असरा हमदानी ने इस प्रकार किया है–

---

* इतिहास विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:49:50 +05'30'

2017-18 Sl. No.-10

UGC Approved Journal No – 48728
(IIJIF) Impact Factor - 3.034

ISSN 2249 - 8893

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

P. PUBLICATION

Volume 9 | Issue I | February 2018

Editor
Dr. Sarvesh Kumar
UPRTOU Allahabad

Chief Editor
Dr. R. P.S. Yadav
Incharge Director,
School of Humanities
UPRTOU Allahabad
www. annalsmdresearch.com

E-mail : annalsmdresearch@gmail.com www. annalsmdresearch.blogspot.com

Sarvesh Kumar

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:50:29 +05'30'

भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक विमर्श का विश्लेषण

संध्या कुमारी*

इस आलेख में भारत – नेपाल के ऐतिहासिक संबंधों की पृष्ठभूमि, दोनो देशों के मध्य सहयोग के क्षेत्र, दोनों देशों के मध्य विवाद के बिंदु, उसमें चीन की भूमिका और भारत के लिए नेपाल के महत्व पर विचार किया जाएगा।

सारांश –

हम सभी जानते हैं कि नेपाल के साथ भारत के मैत्री सम्बन्ध सदियों पुराना है। दोनों देशों में भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक कारणों से जुड़ाव है। नेपाल का दक्षिण क्षेत्र भारत की उत्तरी सीमा से सटा है। यह तराई वाला इलाका है जो मधेश के नाम से जाना जाता है। इसी प्रांत में मिथिला प्रदेश है जिससे भारतवासी आध्यात्मिक कारणो से भली भांति परिचित है। राजनीतिक कारणों से नेपाली नेताओं ने पहाड़ी रहवासियों और तराई वासियों के बीच एक अविश्वास की दीवार खींच रखी है और यही मुख्य कारण है राजनीतिक अस्थिरता का।

नेपाल सत्ता प्रतिष्ठान के शीर्ष पर बैठे प्रधानमंत्री के० पी० ओली ने जब एक प्लान किया कि कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा नेपाल का हिस्सा है और उन्हें हर हाल में वापस लाकर रहेंगे तो कई सवाल खड़े हुए। सबसे बड़ा सवाल तो भारत की उस नाकाम कूटनीति से जुड़ा हुआ है, जो अपने छोटे पड़ोसी का विश्वास जीतने में असफल है। इनके साथ ही मौजूदा विदेश नीति पर भी सवाल उठता है, जिसकी प्राथमिकता में पहले से मजबूत रिश्ते वाले देश कहीं नहीं है। दरअसल यह इस ओर भी संकेत करता है कि किस तरह भारत की विदेश नीति दिशाहीन और लुंजपुंज है, जिससे नेपाल भी नहीं संभलता है। पर सबसे पहले यह जानने की कोशिश करते हैं कि आखिर विवाद क्या है, किस बात पर है और उसकी जड़ कहाँ है।

क्या है काला पानी –

कालापानी दरअसल एक घाटी है, जो उत्तरभारत के पिथौरागढ़ जिले में स्थित है र भारत, चीन – नेपाल की सीमा पर है। यह तीन देशों का भौगोलिक रूप से अलग भी करती है, यह दरअसल काली, महाकाली और शारदा नदियों और उनमें गिरने वाली दूसरी कई छोटी नदियों को मिला कर बनने वाली घाटी है। इसके उत्तर में और ऊँचाई पर स्थित है लिपु लेख जो बहुत ही संकीर्ण दर्रा है। उस दर्रे से ही मानसरोवर तक जाने के लिए एक सड़क बनाने पर चीन और भारत के बीच सहमति बनी थी। यह दर्रा जिस गुंजी गाँव से होकर गुजरता है, वह नेपाल में है। नेपाल का कहना है कि काला पानी ही नहीं लिपु लेख भी उनका है।

सुगौली समझौता–

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में ही नेपाल के शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी शासक पृथ्वी नारायण शाह ने अपने राज्य के विस्तार के लिए सेना भेजी, जिसे उस समय भारत में मौजूद ब्रिटिश सेना ने रोका दोनों में 1816 में सुगौली समझौता हुआ।

नेपाल ने सुगौली समझौते के तुरन्त बाद यानी 1817 में अंग्रेजों से यह दावा किया कि काली नदी का उद्गम दक्षिण पश्चिम में स्थित कुठी यांक्ति है, लिहाजा लिपुलेख पर उसका नियंत्रण होना चाहिए,

---

*एम० ए० राजनीति विज्ञान, (समाजिक विज्ञान संकाय),जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:51:11 +05'30'

Sandhya Kumari

- बस्स! बहुत हो चुका, ओमप्रकाश वाल्मीकि 242-244
  पावसे रजनीकांत चंद्रकांत, शोधछात्र, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र.
- मौर्यकालीन नारियों की समाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति 245-248
  रीता कुमारी, शोधार्थी, प्रा. भा. एवं ए. ज. विभाग, म.वि.वि., बोधगया
- बिहार के जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण का दुसरा चरण 249-251
  रेखा कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग, म.वि.वि., बोधगया
- संस्कृति एवं राष्ट्रवाद सम्बन्धी पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन 252-256
  रमेश चन्द्र यादव, शैक्षणिक परामर्शदाता-समाजशास्त्र, समाज, विज्ञान विद्याशाखा, उ.प्र. राजर्षि टंडन विश्वविद्यालय, प्रयागराज
- आलोचक-लक्ष्मीनारायण सुधांशु 257-259
  डॉ. नरेन्द्र नारायण राय, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. राम मनोहर लोहिया पी.जी. कालेज, भैरव तालाब, वाराणसी (उ.प्र.)
- आर्थिक लोकतंत्र एक अध्ययन 260-262
  अविनाश कुमार सिंह, शोध छात्र, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- इन्डो-ग्रीक शासकों के सिक्कों का भारतीय मुद्रा व्यवस्था में योगदान-एक समीक्षा 263-265
  अनुज कुमार सिंह, शोध छात्र प्राचीन इतिहास, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, बी.एच.यू. वाराणसी
- मेनका गांधी के निर्णय के पूर्व पुलिस प्रशासन की मनमानी भूमिका-एक समीक्षा 266-272
  ज्ञान प्रकाश सिंह, शोध छात्र, विधि संकाय, तिलकधारी विधि महाविद्यालय, पीलीकोठी, जौनपुर
- भारत और नेपाल सम्बन्ध : प्राचीन काल से वर्ष 1947 तक 273-275
  संध्या कुमारी, एम.ए. (राजनीति विज्ञान) शोधछात्रा, जे.पी.यू., छपरा
- आश्चर्यचूडामणि शृंगार रस का अभिप्राय 276-279
  रघुनाथ प्रसाद, गवेषक, संस्कृत विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, सारण।
- बाढ़-आपदा : चुनौतियाँ एवं समाधान 280-284
  भूपेन्द्र प्रताप सिंह, शोध छात्र, समाज कार्य विभाग, डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ.प्र.
- बार्हस्पत्य नीति सूत्रों में दिनचर्या तथा मन्त्र निरूपण 285-286
  डॉ. रीतेश कुमार पाठक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शचिनंदन महाविद्यालय दौलतपुर, बलिया, उ.प्र.

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:51:52 +05'30'

भारत और नेपाल सम्बन्ध : प्राचीन काल से वर्ष 1947 तक

संध्या कुमारी *

भारत एवं नेपाल के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों के इतिहास की जानकारी छठी शताब्दी ईसा पूर्व से प्रमाणित रूप में मिलती है। पाली साहित्य में उल्लेख है कि कौशल के राजा प्रसेनजीत ने, जो भगवान बुद्ध के समकालीन थे, कपिलवस्तु के शाक्यों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था।[1] फिर भगवान बुद्ध अपना राज्य त्याग कर बिहार प्रदेश में आए, वहाँ अनेक वर्षों तक तपस्या की और अन्त में बोध प्राप्त किया। तभी से भारत और नेपाल के सांस्कृतिक और भावनात्मक सम्बन्ध अत्यन्त गहरे होने लगे। महात्मा गौतम बुद्ध पहली कड़ी थे, जिन्होंने भारत एवं नेपाल के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को सांस्कृतिक सूत्र में बाँधने का ठोस आधार प्रदान किया।

महात्मा बुद्ध के निर्वाण के बाद भारत व नेपाल समेत सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई, जिससे बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार बहुत तेजी से हुआ। मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अंगीकार कर अपने पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा को विदेशों में इस धर्म के प्रचार-प्रसार का दायित्व सौंपा। सम्राट अशोक ने स्वयं कपिलवस्तु की यात्रा की और वहाँ अपना धर्म लेख स्थापित किया, फलतः भारत के नेपाल के साथ सम्बन्ध और अधिक घनिष्ट हुए।

मौर्य काल के पश्चात् गुप्तकाल में दोनों देशों के राजनीतिक व सांस्कृतिक सम्बन्धों में घनिष्टता और बढ़ी। गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने नेपाल पर अपना राजनीतिक आधिपत्य स्थापित किया, किन्तु उसने वहाँ की आन्तरिक प्रशासनिक स्वायत्तता पर नियंत्रण नहीं लगाया। फलतः जनता के पास अपने आन्तरिक प्रशासन सम्बन्धी अधिकार सुरक्षित बने रहे। समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारी, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने भी नेपाल की यात्रा की और तभी से सम्भवतः वहाँ विक्रम सम्वत् का प्रचलन आरम्भ हुआ। यद्यपि यह विवादास्पद है कि नेपाल हर्षवर्धन के साम्राज्य का अंग था अथवा नहीं किन्तु हर्ष युग में इन देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध अक्षुण्य बने रहे।

चौदहवीं शताब्दी तक नेपाल में अनेक राजवंशों का शासन चलता था, जिनमें से काठमाण्डू घाटी का राजवंश सबसे महत्वपूर्ण था। सन् 1457 ई. में राजा यक्षमल्ल ने अपने राज्य को भटगाँव, काठमाण्डू और पाटन नाम तीन राज्यों में विभाजित कर नेपाल के शासकों को कमजोर बना दिया। इसके बाद तीन शताब्दियों तक नेपाल में किसी शक्तिशाली शासन की स्थापना न हो सकी। इसी काल में उत्तर भारत के कुछ मुस्लिम शासकों ने नेपाल पर आक्रमण भी किए और वहाँ के शासकों की सम्पत्तियाँ लूट लीं। 18वीं शताब्दी में नेपाल में सर्वप्रथम शक्तिशाली राजतन्त्रीय व्यवस्था की नींव पड़ी। आधुनिक नेपाली साम्राज्य के निर्माता पृथ्वी नारायण शाह ने सन् 1769 ई. में नेपाल घाटी, काठमाण्डू, पाटन और भटगाँव नाम समस्त राज्यों को पराजित कर एक सुदृढ़ और एकीकृत राज्य की स्थापना की।[1] पृथ्वी नारायण शाह चितौड़ (राजस्थान) के सिसोदिया वंश से सम्बन्धित थे। उनकेपूर्व तत्कालीन भारत के मुगल शासकों की दमनकारी और विस्तारवादी नीति से घबराकर नेपाल की सुरक्षित बागमती घाटी की ओर आ गए थे। यहाँ सन् 1559 में गोरखा रियासत को पराजित कर द्रव्यशाह ने शाहवंश की नींव डाली थी।

महाराजा पृथ्वी नारायण शाह जिस समय नेपाल में छोटे राज्यों को पराजित कर एक सुदृढ़ और शक्तिशाली राज्य की स्थापना में संलग्न थे, उसी समय, भारत में अंग्रेज शासकों ने हिमालय क्षेत्र में अपनी विस्तारवादी नीति के अन्तर्गत पृथ्वी नारायण शाह के विजय अभियान को रोकने का प्रयास किया। बंगाल के तत्कालीन गवर्नर वेरेल्स्ट के निर्देश पर काठमाण्डु के मल्ल राजा जयप्रकाश की सहायता के लिए, 30 अप्रैल, 1767 को कप्तान निलोच के नेतृत्व में एक सैनिक दल भेजने का निर्णय कियागया।[2] इस सैनिक सहायता का प्रमुख उद्देश्य उन सामरिक और व्यापारिक लक्ष्यों को प्राप्त करना

---

* एम.ए. (राजनीति विज्ञान) शोधछात्रा, जे.पी.यू., छपरा

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:52:35 +05'30'

2017-18 Sl. No.-12

UGC Approved Journal No – 47168
(IIJIF) Impact Factor - 3.234

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Dr. Reeta Yadav
Dr. Pradeep Kumar

Volume 9 | Issue II | April | 2018

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW
Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
www. shodhprerak.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747
Cite this Volume as S/P, Vol. 9, Issue II, April 2018

Samdhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:53:29 +05'30'

- नेताजी एवं डॉ. लोहिया के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन — 678-681
  अजय कुमार किंकर, राजनीति विज्ञान, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- दलित आन्दोलन के प्रणेता : महात्मा ज्योतिबा फुले एवं अन्य समाज सुधारक — 682-684
  बृजकिशोर राम, JRF (UGC), शोध छात्र, इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- ग्रामीण बाजारों का प्रादेशिक विकास में भूमिका मधेपुरा जिला के संदर्भ में : एक भौगोलिक अध्ययन — 685-688
  धनंजय कुमार, नेट उत्तीर्ण भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
- फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यासों में आंचलिकता और सामाजिक परिवेश — 689-693
  डॉ. स्मिता कुमारी, हिंदी, पटना, विश्वविद्यालय
- 'हंस' के सम्पादकीय में अभिव्यक्त राजेन्द्र यादव की सामाजिक दृष्टि — 694-697
  शशि कान्त सुमन, प्रवक्ता, राजकीय संबोधित उच्च माध्यमिक विद्यालय, नवटोला, सहरसा
- जोतीराव फुले के सामाजिक विचार मनुष्य के संदर्भ में — 698-701
  सिन्धु कुमारी, पी. एच. डी., वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
- भारत के स्वाधीनता संघर्ष में बिहार के समाजवादी एवं साम्यवादी संगठनों की भूमिका — 702-706
  डॉ. सन्तोष कुमार, इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- उत्तर भारतीय सामन्त प्रथा — 707-709
  मकसूद आलम, शोध छात्र, इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
- कर्नाटक संगीत में उपयुक्त ताल स्वरूप — 710-712
  अमित कुमार ईश्वर, तबला संगतकार, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
- अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्यवाद : स्वरूप और आशय — 713-716
  डॉ. बबलू ठाकुर, रामश्रेष्ठ सिंह इंटर महाविद्यालय, व्याख्याता इतिहास विभाग, बोचहाँ मुजफ्फरपुर
- समाजवादी आन्दोलन का ऐतिहासिक अध्ययन तथा जयप्रकाश नारायण — 717-725
  बन्धन कुमार सिंह, इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा
- विष्णुपुराणे भारतीय संस्कृतिवर्णनम् — 726-735
  सुजीत कुमार तिवारी, संस्कृत विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा
- भारत और नेपाल का सम्बन्ध एवं मधेशी समस्या का अवलोकन — 736-738
  संध्या कुमारी, एम० ए० राजनीति विज्ञान, (समाजिक विज्ञान संकाय) जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:54:26 +05'30'

भारत और नेपाल का सम्बन्ध एवं मधेशी समस्या का अवलोकन

संध्या कुमारी*

भारत और नेपाल के बीच सम्बन्ध अनादि काल से है। दोनो पड़ोसी देश है इसके साथ ही दोनो राष्ट्रों की राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी एवं ऐतिहासिक स्थिति में बहुत अधिक समानता है। स्वतंत्र भारत और नेपाल ने अपने विशेष सम्बनधों को 1950 के भारत – नेपाल शांति एवं मैत्री संधि के द्वारा नयी ऊर्जा दी। यह भार और नेपाल के मध्य द्वीपक्षीय संधि है। जिसका उद्देश्य दोनो एशियाई पड़ोशी देशों के बीच घनिष्ठ राजनीतिक संबंध स्थापित करना है। इस संधि के द्वारा नेपाल को एक भू- आबद्ध देश होने के कारण कई विशेषाधिकारों को प्राप्त करने से सक्षम बनाया है। अन्तरराष्ट्रीय अस्तर पे भार और नेपाल का राजनीति स्तर बहुत ही अच्छा कहा जा सकता है।

नवंबर 2005 में, दिल्ली में सात दलों के गठबंधन और माओवादियों के बीच 12 बिन्दु की सहमति में भार सरकार ने शांतिपूर्ण समाधान र समावेशी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा नेपाल में राजनीतिक स्थिरता के लिए 2006 के ऐतिहासिक व्यापक शांति समझौते द्वारा निर्धारित रोडमैप का स्वागत किया है। शांति प्रक्रिया की सफलता सुनिश्चित करने तथा विधिवत निर्वाचित संविधान सभा द्वारा एक नया संविधान बनाने के माध्यम से तथा बहुदलीय लोकतंत्र के समस्याकरण के रूप में भारत ने नेपाल के लोगों और सरकार की जरूतों के प्रति लगातार समर्थन किया है। भारत ने सदैव यह माना है कि सभी पक्षधारकों पर बोर्ड दवारा व्यापक सहमति से केवल एक समावेशी संविधान ही नेपाल में स्थायी शांति और स्थिरता पैदा करेगा।

नेपाल की दूसरी संविधान सभा ने 20 सितंबर 2015 को मधेशियों तथा अन्य दलों के विरोध प्रदर्शनों के दौरान एक संविधान का प्रख्यात किया था। भारत सरकार ने चल रहे विरोधियों के बारे मे गंभीरता व्यक्त की है और नेपाल सरकार से अनुरोध किया है कि वह एक विश्वसनीय राजनीतिक वार्ता के माध्यम से सभी मुद्दों को सुलझाने के प्रायस करे।

भारत और नेपाल का अंतरिक राजनीतिक सम्बन्ध -

नेपाल के हाल ही घटनाक्रमों से स्पष्ट है कि राजनीति सद्बुद्धि और दुर्बुद्धी दोनों से ही रोचक, आकर्षक और अर्थपूर्ण बनती है। एक तरफ जहाँ कल माओवादी नेता प्रचंड ने बनती है। महामारी और प्राकृतिक आपदा से घिरे नेपाली में वो नेपाली कम्यूनिस्ट पार्टी में कोई फूट नहीं होने देंगे, वही नेपाली प्रधानमंत्री ओली ने एक नया विवाद छेड़ते हुए कहा है कि मर्यादा पुरूषोत्तम राम नेपाली अयोध्या का निर्माण किया है। इससे ओली की एक ही समझ का पता चलता है कि जहाँ विवाद है, वही राजनीति है और इससे सांस्कृतिक अतिक्रमण समेत कई अनैतिक कार्यो को औधित्यपूर्ण ठहराने की कवायद की जा सकती है।

भारत और नेपाल के संबंधों में तनाव, नेपाल की आंतरिक राजनिति मे गुटीय प्रतिस्पर्धा और चीन की बढ़ती दखलंदाजी भी पिछले कई दिनों से सुर्खियों मे रही है नेपाल सतता परिवर्तन और माओवादी टूट-फुट की आश्काएं लगातार व्यक्त की गई है, लेकिन सबसे अहम सवाल यह रहा है कि नेपाल मे उभरने वाले किसी भी राजनीतिक या दलीय संकट का भारत के हितों पर क्या असर पड़ेगा। नेपाल में हाल के दिनों की राजनीतिक गतिविधियों पर एक निगाह डाले तो पता चलता है कि वहां लीडरशिप क्राइसिस जैसी स्थिति उत्पन्न हुई है जिससे पिछे कई कारण है।

भारतीय भूक्षेत्रों को अपना बताने वाली औली सरकार ने एक गलती कर एक कदम आंदर आगे जाकर यहां तक कह दिया कि भारत औली सरकार को गिराने का षड्यंत्र कर रहा है। जिसका सीधा सा आशय था की नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी में बैठ नेता खसाकर प्रचंड जो भारत से संतुलित संबंध की बात करते हैं। उनको

---

*एम० ए० राजनीति विज्ञान, (समाजिक विज्ञान संकाय),जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:56:11 +05'30'

2017-18 Sl. No.-13

82

IMPACT FACTOR GIF 2.3409

ISSN-2278-3911

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

A Peer Reviewed Research Journal

www.shodhprakalpresearch.com

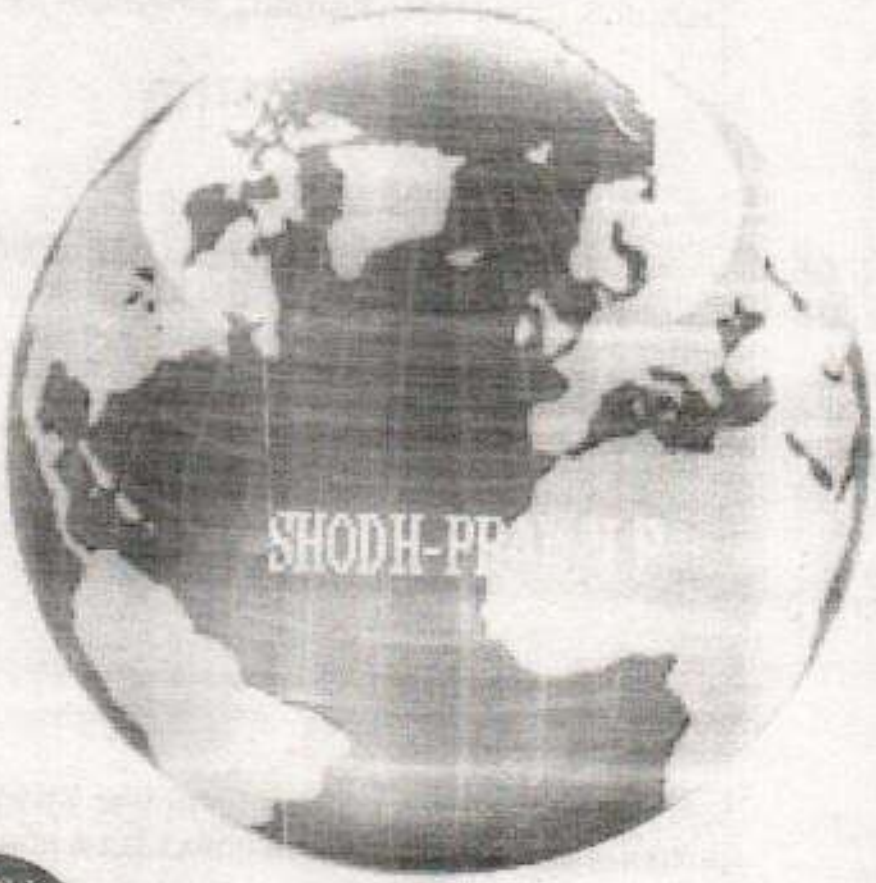

Volume LXXXII
Jan-March, 2018

UGC Approved Journal
JOURNAL NO. 63535

Editor
Dr.Sudhir Sharma

Email- shodhprakalp@gmail.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:57:00 +05'30'

आर. एन. आई. रजिस्ट्रेशन-MPHIN/1997/2224

बीस वर्षों से नियमित प्रकाशित

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

23	साहित्यिक कृतियों में अस्मितामूलक विचार	ललिता साहू	77
24	जातिगत व्यवसायों एवं जजमानी व्यवस्था में हो रहे वर्तमान परिवर्तन	डॉ संध्या कुमारी	79
25	प्रेमचंद के साहित्य पर आधारित सिनेमा का संसार	अमरेश कुमार	84
26	MICRO FINANCE AND WORKING OF SELF HELP GROUPS IN BIHAR	DR. KUMARI DIVYA	87
27	SUKANYA SAMRIDHI YOJNA: IMPACT AND ASSESSMENT	KUMARI PUSHPA SHARMA	90
28	बिहार में प्रवसन : स्थिति, कारण एवं निदान	पिंकी रानी	94
29.	छत्तीसगढ़ राज्य में जल संसाधन विकास का एक मूल्यांकन भौगोलिक स्थिति	डॉ. देवदत्त शर्मा	97
30.	ब्रह्म समाज के उद्देश्य एवं सुधार : एक विवेचना	अरविन्द कुमार राय	100
31.	शक्ति की परिभाषा और उनके विभिन्न प्रकारों का एक अध्ययन	डॉ. मनोरमा कुमारी	102
32.	भारत में हस्तशिल्प उद्योग के पतन के कारण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभाव : एक अवलोकन	नीरज कुमार	104
33.	कृषि की समस्या एवं समाधान: नोकामा टाल क्षेत्र का एक भौगोलिक अध्ययन	मुन्ना मनीष कुमार	106
34.	GANDHIAN DEVELOPMENT MODEL AND SUSTAINABLE DEVELOPMENT	RANJAN KUMAR SINGH	109
35.	PROBLEM OF WORKING WOMEN IN INDIA: A SOCIOLOGICAL STUDY	SHASHI KANT	112
36.	CAUSES AND CONSEQUENCES OF AGRICULTURAL LABOUR MIGRATION IN INDIA	JITENDRA MOHAN	115
37.	THE FEMALE MEMBERS OF THE CONSTITUENT ASSEMBLY AND THEIR CONTRIBUTION IN THE MAKING OF INDIAN CONSTITUTION.	AVINASH KUMAR RANJAN	119
38.	सैंधव सभ्यता में जल भण्डारण एवं शुद्धीकरण की अवधारणा	डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता	122
39.	पटना जिला में वर्षा जल संग्रहण एवं कृषि का विकास	कुमार विमल	126
40.	प्राचीन बौद्ध स्थल तैलहाड़ा (नालन्दा) के पुरावशेष	संजीव कुमार	130
41.	महात्मा गाँधी का ग्राम स्वराज एवं पंचायती राज : एक अध्ययन	सुशील कुमार साह	133
42.	बिहार के प्राचीन भूगोल : एक अवलोकन	संजीत कुमार	136
43.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मिथिला का योगदान	डॉ. सौरभ राज	139

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:57:53 +05'30'

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

IMPACT FACTOR GIF 2.3409 U.G.C. NO. 63535

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Research Journal

ISSN 2278-3911

CAUSES AND CONSEQUENCES OF AGRICULTURAL LABOUR MIGRATION IN INDIA

JITENDRA MOHAN
Research Scholar
Dept. of Economics
L.N.M.U., Darbhanga

The agricultural labourers are socially and economically poorest section of the society. Agricultural labourer households constitute the historically deprived social groups, displaced handicraftsmen and dispossessed peasantry. They are the poorest of the poor in rural India. It has been observed that the human factor is of supreme importance in any pattern of economic development. More so are the agricultural labourers of India, the country's largest unorganized section comprising the poorest workers, toiling on the sunny fields of India.

Abtsract

The agricultural labourers are socially and economically poorest section of the society. Agricultural labourer households constitute the historically deprived social groups, displaced handicraftsmen and dispossessed peasantry. They are the poorest of the poor in rural India. It has been observed that the human factor is of supreme importance in any pattern of economic development. More so are the agricultural labourers of India, the country's largest unorganized section comprising the poorest workers, toiling on the sunny fields of India. Agricultural labourers who are mostly landless and form a significant section of rural society mainly depend on wage employment in agriculture. Majority of them belong to the category of Scheduled Castes and Scheduled Tribes are among the worst exploited section of the society. Their income has always been meagre, resulting in poor living and heavy indebtedness.Migration means people move from one place to another place or one country to another country for better livelihood. Unemployment is a major problem of rural area. The rural people migrate rural to urban areas for purpose of better job opportunity. India has migrated from rural to urban areas for a variety of reasons. The lack of employment opportunities in rural areas to migrate to urban areas is one of the main reasons. The government of India has introduced many programs with the aim of avoiding migration from rural areas to urban areas generating job opportunity in rural areas.

Keyword: - Agriculture, Migration, Labour, Unemployment, Wages.

Introduction

Migration in India is mostly influenced by Social Structures and patterns of development.The development policies by all the governments since Independence have accelerated the process of migration. Uneven development is the main cause of migration. Added to it, are the disparities, inter-regional and amongst different socio-economic classes. There are two important reasons for rural labour migration: (1) migration for survival and (2) migration for subsistence. The first indicates the severe social and economic hardships faced by rural labourers, a situation where migration becomes necessary to stay alive. These communities are generally landless, illiterate and drawn largely from scheduled castes, scheduled tribes and other depressed castes. The second reason for migration is also rooted in subsistence and arises because of the need to supplement income in order to fill the gaps of seasonal employment. Such communities often migrate for shorter periods and do not ordinarily travel very far from their homes. Migration is an expensive and risky process and this occurs mainly due to a combination of migrants being unaware of their rights; poor education and skills; a negative policy environment that aims to keep rural people in rural areas and actively discourages migration; monopolistic behavior among employers, contractors and labour market intermediaries whereby they play the labour market to their own advantage and discrimination based on caste and gender. The most serious problem encountered by migrants is a lack of access to basic services such as the public food distribution system which provides subsidized food; health and education. Children who accompany their parents for several months at a time are often not sent to school in the destination either because the schools there cannot accept them or because there is a language problem. Not having enough money to pay for school fees may also be a problem. This perpetuates the inter-generational transmission of

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:58:45 +05'30'

2017-18 Sl. No.-14

ISSN 0974-634X

Indian Social and Psychological Studies

Volume 11, Number 01
March 2018

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 15:59:42 +05'30'

ISSN-0974-634X

Indian Social and Psychological Studies

Volume 11, Number 1, March 2018

CONTENTS

Impact of Diabetes on some Psychological Correlates
Zanna Shaheen ..... 1 - 3

Effect of Organisational Commitment and Organisational Citizenship Behaviour on Prganisational Effectiveness in Banking Sectors
Shahnawaz Akhtar Khan ..... 4 - 12

Sudarshan Kriya Yoga and Vipassana Meditation – A Comparative Analysis
Pranav Kumar, Dr. Rekha Sinha ..... 13 - 18

Psychological Capital and Academic Performance
Reeta Kumari, Swati Shikha & Raj Lakshmi ..... 19 - 27

Relationship between Self-concept and Well-being of School Children
Swati Shikha, Reeta Kumari & Anjali Kumari ..... 28 - 32

Effect of Demographic Variables and Self-esteem on Happiness
Soni Kumari, Amarjeet Kumar & Salini ..... 33 - 38

Mental Health and Marital Adjustment Among Working and Non-working Women
Anjali Kumari, Soni kumari & Salini ..... 39 - 43

Locus of Control and Academic Dishonesty Among College Students
Punam Maitlu ..... 44 - 47

Confronting Violence Against Women and Children with Disabilities in India and Abroad
Dr. Mihir Pratap, Dr. Veena ..... 48 - 54

A Study of the Learning Disorders Among Dysgraphic Children
Dr. Pranav Kumar ..... 55 - 60

Women Dress in Ancient India
Dr. Sanjeev ..... 61 - 64

Internet use, Gender and Academic Performamce Among Adolescents
Priyanka Singh, Alpana Sen Gupta ..... 65 - 68

Alcohol and Juvenile Delinquency - A Psycho-Social Study
Shashi Prasad ..... 69 - 72

Attitude towards Social Networking Sites in Relation to Age and Residential Area
Ashok Kumar Ranjan, Dr. Ram Dhyan Rai ..... 73 - 75

Organisational Effectiveness in relation to Organisational Commitment
Shahnawaz Akhtar Khan ..... 76 - 83

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:00:38 +05'30'

ATTITUDE TOWARDS SOCIAL NETWORKING SITES IN RELATION TO AGE AND RESIDENTIAL AREA

ASHOK KUMAR RANJAN
Research Scholar
P. G. Deptt. of Psychology J. P. University, Chapra
Email: ashokkumarranjan108@gmail.com

DR. RAM DHYAN RAI
Prof. & HOD P. G. Deptt. of Psychology
J. P. University, Chapra
Email: profrdrai@gmail.com

To seek the relation of age and residential area with attitude towards Social networking sites 'Scale of Attitude Towards Social Networking Site' constructed and standardized by Suryawanshi and Deolia (2014) was administered on 400 respondents of rural and urban areas of Saran district of Bihar. The age range of respondents was from 16 to 62 years. The analysis of data revealed that urban respondents hold significantly more favourable attitude towards social networking sites than rural respondents. There was found increasing trend of favourable attitude towards social networking sites with decreasing age level.
Keywords : *Attitude, SNS, Age, Rural, Urban.*

Attitudes, an aspect of personality, are shaped and changed in accordance with the characteristics of the society, group and Culture. Attitudes are characterized by consistency in response to objects and situations. Olson and Kendrick (2008) and Petty et al (2003) take attitudes to refer to people's evaluation of almost any aspect of the world. People can have favourable or unfavourable reactions to issues, ideas, objects, actions, a specific person or entire social groups. Some attitudes are quite stable and resistant to change, whereas others may be unstable and show considerable variability depending on the situation (Schwarz and Bohner, 2001). One may hold some attitudes with great certainty, while his/her attitude towards other objects or issues may be relatively unclear or uncertain (Tormala and Rucker, 2007).

From the stone age to the present age every individual has engaged himself/herself in development and maintenance of social networks for the satisfaction of biological and sociological needs. Relationships among individuals in social networks can be strengthened through the exchange of informations, views, feelings, ideas etc. through communication. An individual of any part of the globe wants his communicational exchange to be faster and easier and this gives birth to social networking sites. Social networking sites can be defined as web based services that allow employee to (i) construct a public or semi-public profile within a bounded system, (ii) articulate a list of other users with whom they share a connection and (iii) view and traverse their list of connections and those made by others within the system (Elison, 2007). Social networking sites like Facebook, Twitter, Whatsapp, Instagram, Linkedin, Youtube etc. allow individuals to build and maintain their social networks online through sharing of videos, photos and chatting as well as tools for easy communication and maintaining long distance relationships (Awan & Gauntlett, 2013).

In recent years, number of social networking sits users is rapidly increasing. The expected number of internet users, as per statista,

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:01:35 +05'30'

2018-19 Sl. No.-03

ISSN 0975-3486

May-June-2018, Issue-104-105(Combined)

An International Indexed, Refereed, Interdisciplinary, Multilingual, Monthly Research Journal

Impact Factor-6.315 (SJIF)

UGC APPROVED & LISTED - 41022

S.S.M. A WAY TO SUCCESS..... R.A.E. AN INTERNATIONAL REFERRED RESEARCH JOURNAL JAIPUR INDIA

RESEARCH ANALYSIS AND EVALUATION

रिसर्च एनालिसिस एण्ड इवैल्युएशन

www.ssmrae.com

EDITOR

Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ssmrae.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:02:29 +05'30'

June 2018

Military Science

[illegible] व सामाजिक संरचना का जन्म

61-64 * डॉ. अंशुल पाण्डेय 122-124

Library Science

75-78 [illegible] of Mobile Technology in Library

* [illegible]ash Kumar Mishra 92-94

[illegible]ness and Satisfaction in use of Web

71-74 * Dr. Kishor N. Wasurke 97-100

Commerce

31-34 [illegible] अनुपात व मुख्यअधिकारी यांची भूमिका

38-40 * डॉ. डॉ. नितीन एल. नायसे 132-133

Bio-Technology

46-47 [illegible] wastes utilization for microbial

* [illegible] K. Srivastava 104-108

Psychology

43-45 [illegible] Investigation Of Gender Differences

65-66 * Dr. Narender 109-112

Ancient History

86-88 [illegible] परम्परा में जैन देव परम्परा

* [illegible] Kumar Gupta 120-121

Sociology

84-85 [illegible] गायकवाड चरित्रसाधने

41-42 * [illegible] 134-135

59-60

Economics

Problems In The Implementation of SGSY

*Bindhyachal Sah 89-91

Education

To Study The Comic Vision of R.k. Narayan

* Dr. Geeta Parashar 95-96

The observations of Indianness

* Dr. Rajesh Chandanpat 113-114

[illegible] माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य

* प्रो. रीता अरोड़ा** वन्दना नागौरी 130-131

[illegible]

* [illegible] 136-138

Hindi

राजस्थानी लोक-गाथाओं के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी

* राजेश्वरी भार्गव 115-116

कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

* अनीता देवी 117-119

इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता संस्कृति, दर्शन तथा धर्म

* डॉ. राखी उपाध्याय 125-127

गढ़वाल हिमालय के लोक जीवन में तन्त्र-मन्त्र के तत्व

* डॉ०डी०एस० भण्डारी 128-129

राम की शक्तिपूजा के काव्य का विवेचन

* डॉ. कृष्णवीर सिंह 139-142

Research Paper

On Variation of Abundance and Fluctation

* M. N. Moitra ** N. Dasgupta

*** R. Routh, ****S. Banerjee 101-103

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:03:25 +05'30'

International Indexed & Referced Research Journal, ISSN-0975-3486(Print), E-ISSN-2320-5482, June-2018, ISSUE-105

Research Paper -Economics

Problems In The Implementation of Sgsy In Nalanda District

*Bindhyachal Sah

* Asst. Prof., Deptt. of Economics, Baliram Bhagat College, Samastipur, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar.

ABSTRACT

In India at the begiuing of the new millenium, the number of poor in the rural areas was 195.2 million. After independence poverty eradication has been one of the major objectives of the development of planing process in India. For the attainement of the international goals, reduction of poverty is a prime issue in India. In India, small and marginal farmers, agricultural wage earners and casual workers engaged in non-agricultural activities are known as reveal poor. These are various dimensions of rural poverty. Particularly, the dimensions relating to education, health and other basic services have been systematically and progressively internalized in the planing process in India. The central and the state government are trying to make sufficient allocation for the provision of health, education and other facilities for the well being of the rural poor. Antipoverty strategy and programmes have difinitely provided awareness for employment and income of the rural poor. The success of anti-poverty strategy and programmes can be seen from decline the poverty ratio in the rural areas from 37.3% in 1993-94.

Keywords : Poverty eradication, Internation goals, Reveal poor, Antipoverty Strategy.

Introduction :

The anti-poverty programmes are to dominant feature of government initiatives in the rural areas. The programmes pertaining to these efforts have been reviewed and strengthend in successive years in order to sharpen their focus on reduction of rural poverty. The Swarn-Jayanti Gram Swarojgar Yojana (SGSY) is the result of such latest review and restructuring of programmes. SGSY was launched in 1st April 1999 and is the only self-employment programme currently being implemened. SGSY replaces the earlier Self-employment and allied programmes-IRDP, TRYSEM, DWCRA, SITRA, GKY and MWS, which are no longer in operation. SGSY is an innocative and carefully thought-out yojana. It takes into account all the strengths and weaknesses of the earlier self-employment programmes. It offers the perfect balance of credit and subsidy. It aims at promoting micro enterprises and bring the assisted poor families (Swarojgaries) above the poverty line by organizing them into Self Help Group (SHGs) through the process of social mobilization, training and capacity building and providing income generating assets through as mix of bank credit and government subsidy. The scheme is implemented on a cost sharing ratio of 75:25 between the centre and state.

Persons assisted under this programmewil be known as Swarojgaries and not beneficiaries. The programme has been designed to provide proper support and encouragement to tap the inherent talents and capabilities of the rural poor. It will target the most vulnerable among them. At least 50% of the Swarozgariesshould be SCs/STs, 40% women and 3% disabled.

The SGSY will be implemented by District Rural Development Agency (DRDA) through the Panchayat Samitees. The process of planning, implementation and monitoring should be entrusted to the banks and other financial institutions, the PRIs, NGOs as well as technical institutions in the District.

The study will try to examine in the problems the target groups encounter in availing these facilities, provided by such programme and the difficulties that are faced.

Study Area :

My study area is Nalanda District in Bihar. Modern District of Nalanda with HQ Biharsharif was established on Nov. 9, 1972 from Patna District. The area under study is the central part of central South Bihar alluvial plain. The rivers Phalgu and Mohane flow through the district of Nalanda. The history of Nalanda, the ancient university town of Bihar, goes back to the days of Buddha and Mahavira in the sixth century B.C. The town was home to Nalanda Mahavihara, a monastic university of international repute. Nalanda is famous all over the world for the ancient International monastic university established to 5th century BC, which taught Vedas,Logic, Grammar, Medicine, Meta-physics, Prose composition and Rhetoric.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:04:27 +05'30'

2018-19 Sl. No.-02

An International Indexed, Refereed, Interdisciplinary, Multilingual, Monthly Research Journal

ISSN 0974-2832 May-June-2018,Issue-112-113(Combined)

Impact Factor-5.901(SJIF)

UGC APPROVED

&

LISTED - 41004

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

शोध समीक्षा और मूल्यांकन

S.S.M.

WAY TO SUCCESS.....

R.A.E.

JAIPUR INDIA

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babcd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:05:29 +05'30'

Editor

Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ssmrae.com

han

AN" &"
ecided to

:320-5474
:320-5482
320-544X

2320-5458

2320-5431
2320-5490

-2320-5466
I, Indexed,
hi, Gujarati

e of cost.

he/she want

चेकएँ " शोध,
न सांदियों के
ना हो रही है
भाषा में लिखित

ना होगा।

: अपना शोध पत्र
: 09413870222,

Contents

May 2018

Bio-Technology

Lignocellulosic Wastes Utilization
* Rajesh K. Srivastava 37-40

Law

Uses, Abuses And Bargaining Power
* Dr. Lavaniya Kaushik 11-12

Music

गोढ़ की जनजातियों की लोक-नृत्य परम्परा
* गिरीन्द्र तलेगाँवकर 46-47

"संगीत का सौंदर्यशास्त्र
* संदेश कुमार 61-63

Litt/Philosophy

श्रीमद्भगवद् गीता में ब्रह्म का स्वरूप एवं महत्व
* डॉ. प्रशांत ** डॉ. मनोज कुमार 50-51

Political Science

Saansad Aadarsh Gram Yojana:
* Dr. Badal Sarkar 13-15

नौवें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन : एक आकलन
* Mr. Madan Lal 64-65

Geography

बागरिया समुदाय' समाज, संस्कृति और पिछड़ापन.
* नाथु लाल गुर्जर 41-43

History

Role Of "Biplabi" (News Paper)
* Dr. Littan Sarkar 26-29

Education

A Study of Notion of Negative Education
* Mahendrasinh M. Jadeja 1-3

Disaster Management: Managing the Risk
* Ramuben V. Khint 4-7

A Study of Deviation Seen In The Ethical
* Mahendrasinh M. Jadeja 8-10

Upgrading Teacher Educator for Quality
* Prof. Daxa B. Makavana 16-17

Effectiveness of Work Card Literature
* Mahendrasinh M. Jadeja 18-20

The influence of Socio-Economic
* Mandeep Kaur 23-25

A Study of Scientific Aptitude of Secondary
* Prajapati Piyush Vishnubhai 30-31

A study of Environmental Awareness
* Dr. A. P. Joshi ** Anitadevi G. Patil 35-36

दूरस्थ शिक्षा का बदलता स्वरूप
* डॉ० दिनेश कुमार 54-55

મારવાડી વિકાસ મહાવિદ્યાલયના પ્રશિક્ષણાર્થીઓની
પી.એલાવી પટેલ 66-68

Economics

The Growth of SHGs In Bihar Achievements
* Bindhyachal Sah 32-34

राजस्थान में सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम
* डॉ. मोना बोहरा ** प्रो. आर.सी. सक्सेना 52-53

Hindi

गोपाल चतुर्वेदी की व्यंग्यों में फैंटेसी और यथार्थ
* नरेश कुमार वर्मा 44-45

राजस्थान की लोक-गाथाओं में नारी का संघर्षमय जीवन
* राजेश्वरी पारीक 48-49

हिंदी दिवाली का कथा विद्वा 'रनिवास ही सही..'
* डॉ० कृष्ण कुमार श्रीवास्तव 56-58

बीज किसान में पर्यावरण संरक्षण एवं सहजीवन
* डॉ. गौरव अग्रवाल 59-60

English

Relevance of Swami Vivekananda's
* Dr. Bhagavatidevi A. Chudasama 21-22

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:06:28 +05'30'

International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN-0974-2832(Print), E-ISSN-2320-5474, May-2018, ISSUE-112

Research Paper -Economcis

The Growth of SHGs In Bihar Achievements & Challenges

* Bindhyachal Sah

* Asst. Prof., Deptt. of Economics, Ibrahim Bhagat College, Samastipur, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar

ABSTRACT

Despite the vast expansion of the formal credit system in the country, the rural poor especially small and marginal farmers and landless labourers, petty traders and artisans, continue to depend upon money-lenders for their emergent credit needs. Their credit needs are small but frequent. They have little or no savings at all. Banks have, so far been shy of dealings individually with these small people due to high transaction cost and risk involved. However, the experience in many countries reveal that when these resourceless(poor people) are organised into small thrift and credit management groups or Self Help Groups (SHGs) they not only become bankable but also reveal an inner strength to fight the socio-economic injustice to which they have been subjected for decades. "The self-help group is defined as a voluntary group valuing personal interactions and mutual aid as a means of lifting or ameliorating the problems perceived as alterable, pressing and personal by most of its participating persons" (Smith and Pillhelmer, 1983)".

The SHGs approach helps the poor to build their self-confidence through community action. Inter-action in group meetings and decision making enables them in identification. This process would ultimately lead to the strengthening and socio-economic empowerment of the rural poor as well as improve their collective-bargaining power.

Keywords : Credit, Needs, Bankable, Self Help Group, Injustice, Community, action, Empowerment, Bargaining-power.

Introduction:

SHG is a main component of Swarn Jayanti Gram Swarojgar Yojana (SGSY). SGSY was launched in 1 April, 1999 and is the only Self-employment programme currently being implemented. It aims at promoting micro enterprises and to bring the assisted poor families (Swarojgaries) above the poverty line by organising them into SHGs through the process of social mobilisation, training and capacity building and provision of income generating assets through a mix of Bank-credit and Government subsidy. The scheme is being implemented on a cost shairing ratio of 75: 25 between the centre and the state.

Thus 'Self-help is the best help and self-employment is the best employment'- this is the central point of the philosophy of micro finance through Self-help groups for identifying the key activities that can be taken up by block level. SGSY committee and for selection of the activities, a profile of the poor families, as reflected in the BPL census should be analysed. This committee should analyse the potential for farm activities on priority. Another category would be the unemployed educated youth. Generally, the people who are assets-less and skill-less are the poorest of poor and get left out under the programme. Such category of people may require small class of multiple credits over a period of time coupled with emphasis on awareness creation, training and capacity building. The activities which are easier to handle and product is easily marketable could be identified for such category of people to ensure sustainable income, so that they do not fall into debt trap.

There are a number of Self-Help Groups formed by NABARD, other banks, Rastriya Mahila Kosh, State level Education Project (BEP in Bihar) etc. The DRDA may act as a nodal agency for developing the database, which should include SHG formed under all the schemes. DRDA should be empowered to conduct training programmes to the members of the groups so that the group becomes fully self managed and evolves into a strong group. DRDA should be empowered to utilize and to meet the expenses incurred in the training institution for both basic orientation and skill development from the training fund or out of the SGSY fund.

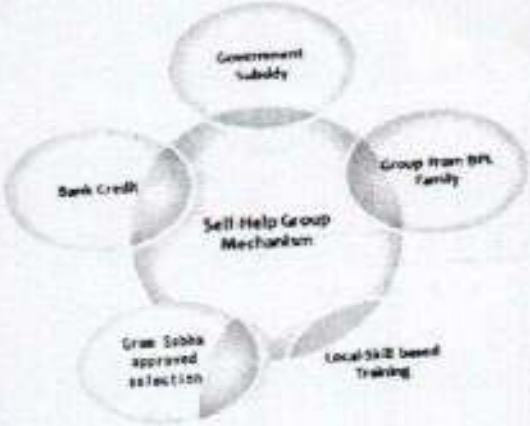

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f73b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:07:33 +05'30'

2018-19 Sl. No.-09

THE ETERNITY

An International Multidisciplinary Peer Reviwed and Refereed Research Journal

ISSN 0975-8690 UGC List No 44958 Impact Factor 3.214

Volume IX No. 3-4 July-December 2018

Patron

Prof. Dilip K. Dureha

Editor-in-chief

Dr. Yatendra K. Singh

Editors

Prof. Surendra Singh
Dr. Priyanka Singh
Dr. Vinit Mehta

K.R PUBLISHERS & DISTRIBUTORS
Varanasi/New Delhi

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:08:37 +05'30'

❖	**Pathogenesis-related genes as tools for discovering the response of onion defence system against Iris yellow spot virus infection** *Maruti Kumari*	255-259
❖	**Indian Women Novelist: A Short Survey** *Dr. Astha Anjali*	260-264
❖	कृषि आधारित उद्योग : ग्रामीण विकास का आधार (जिला पश्चिम चम्पारण के सन्दर्भ में) *विकास कुमार*	265-268
❖	**Emerging Trends of Self Help Group in the Empowerment of Rural Women in India** *Dr. Chiranjeev Kumar*	269-274
❖	प्रेमचंद के कथा–साहित्य पर गाँधीवादी चेतना का प्रभाव *खुशबू कुमारी*	275-278
❖	**Democracy: Present and Future in Bhutan** *Dharmendra*	279-285
❖	बिहार के मगध प्रमण्डल में नक्सल आंदोलन : एक अवलोकन *नितीश कुमार विमल*	286-290
❖	**Role of Psychosocial Factors in Criminal Behaviour in Adults in India** *Dr. Sudhir Narayan*	291-300
❖	लघु वित्त एवं स्वयं सहायता समूह का भारतीय ग्रामीण अर्थव्यस्था पर प्रभाव *दीपक कुमार राय*	301-305
❖	शाहजहाँ के मराठों से सम्बन्ध : संक्षिप्त परिचय *डॉ० ममता कुमारी*	306-308

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:10:19 +05'30'

शाहजहाँ के मराठों से सम्बन्ध : संक्षिप्त परिचय

डॉ0 ममता कुमारी
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश

शाहजहाँ जहाँगीर का पोता था, इसका जन्म 5 फरवरी 1592 को लाहौर में हुआ था। इसके बचपन का नाम खुर्रम था। अकबर के बारे में धारणा है कि उसने दक्षिण के मुसलमानों को तो अपनी सेवा में पहले की भाँति लिया, परन्तु ये आक्षेप शत–प्रतिशत सही नहीं प्रतीत होता कि अकबर अपने मृत्यु तक किसी भी मराठा सरदार को शाही सेवा में नहीं लिया। 1602 ई0 में उसने बरार के जाधव और बरार में माहूर के उदारम, दो ऐसे प्रतिष्ठित मराठा परिवार थे, जो मुगलों के अधीन सेवा में शामिल किये गये। अकबर के उत्तराधिकारी जहाँगीर जब बादशाह बना तो उसने अपने पिता के समय के उमरा को उन पदों पर बने रहने दिया। इसका दावा जहाँगीर स्वयं अपने ग्रन्थ तुजुक–ए–जहाँगीरी में करता है जहाँगीर के समय कई अभियान दक्षिण में भेजे गये उनमें से कई अभियानों का नेतृत्व शहजादा खुर्रम ने स्वयं किया। खुर्रम जब 1628 ई0 में बादशाह बनता है तो दो महत्वपूर्ण तथ्य देखने को मिलते हैं, प्रथम सम्राट जहाँगीर की तुलना में शाहजहाँ ने दक्षिण में साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और इस विस्तार के लिए शाहजहाँ का एक मजबूत विकल्प मराठों को अधिक संख्या में शाही सेवा में लेना था। शाहजहाँ दक्षिण की शक्तियों से राजकुमार के रहते देख लिया था कि दक्कन के मुस्लिम शक्तियों को अपने अधीन करने के लिए मराठों से दोस्ती आवश्यक है, इसलिए उसने मराठा सरदारों की नियुक्ति शाही सेवा में बड़े पैमाने पर की। शाहजहाँ कालीन मनसबदारों की सूचियाँ वारिस की कृति 'पादशाहनामा' अब्दुल हमीद लाहौरी की कृति पादशाहनामा (बादशाहनामा) और मुल्ला मोहम्मद सालेह की कृति अमल–ए–सालेह या शाहजहाँनामा से प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द : अमल–ए–सालेह,शाहजहाँनामा, तुजुक–ए–जहाँगीरी, हिन्दू मनसबदार, बनारकोण्डा, कारगुज़ारी

विषय वस्तु

डॉ0 मनोहर सिंह राणावत ने शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदारों की जो सूची उपरोक्त ग्रन्थों के आधार पर प्रस्तुत की है उसमें 1000 से लेकर 5000 तक के मनसबदारों की विभिन्न श्रेणियों में कुल मिलाकर तीस (30) मराठा मनसबदार थे 5000 के मनसबदारों की श्रेणी में आठ(8) मराठा मनसबदार थे, 4000 की श्रेणी में दो (2) मराठे, 3000 की श्रेणी के नौ(9) मराठा मनसबदार थे एवं 1000 व उससे ऊपर की श्रेणियों में, ग्यारह (11) मराठा मनसबदार सेवारत थे। डॉ0 एम अतहर अली ने 'औरंगज़ेब कालीन मुगल अमीर वर्ग' में शाहजहाँ कालीन मनसबदारों की कुल संख्या–437 दी है। उनके अनुसार इस संख्या में से 98 हिन्दू मनसबदार थे। उनके द्वारा दी हुई संख्या से यह पता नहीं हो पाता कि उसमें से कितने मराठे थे। इसमें सन्देह नहीं कि शाहजहाँ के काल में मराठे मुगल अमीर वर्ग में निरन्तर बढ़ते रहे। अपने पिता की भांति दक्षिण में अपनी विस्तारवादी नीति को कार्यान्वित करने हेतु वह दक्षिण में मराठा सरदारों का प्रयोग मुगल विरोधी मराठा सरदारों के विरुद्ध करना चाहता था। इसके अतिरिक्त जैसे–जैसे निजामशाही राज्य व कोंकण पर मुगलों का दबाव बढ़ता गया, वैसे–वैसे अनेक मराठा सरदारों ने शक्तिशाली मुगल सेनाओं का विरोध करना उचित न समझकर अपनी पैतृक जागीरों, परिवारों तथा हितों की, मुगलों की अधीनता स्वीकार कर रक्षा करना उचित समझा। उनके लिए ऐसा करना स्वाभाविक ही था। 1628 के उपरान्त निजामशाही राज्य के पतन की गति तीव्र हो चुकी थी। बदलती हुई परिस्थितियों में उनके सम्मुख मुगलों की सेवा में प्रविष्ट करना और मुगल अमीर वर्ग में सम्मिलित होना ही केवल एकमात्र विकल्प था। शाहजहाँ अपने शासनकाल में अनेक मराठा सरदारों को मुगल अमीर वर्ग में सम्मिलित कर उन्हें उनकी निष्ठा एवं योग्यतानुसार मनसब प्रदान कर सम्मानित किया। शाहजहाँ के शासन के नवें शाही जुलूस में शाह जी भोंसले मुगल सेवा में शामिल हुए। शाहजी ने सबसे पहले

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:11:34 +05'30'

2019-20, Sl. No.-03

ISSN 0972-563
Reg. No.: 42912/8

UGC अनुमोदित पत्रिका

भारतीय आधुनिक शिक्षा

International Multidisciplinary Refereed Quarterly Research Journal

Vol. XVI Issue No. - 04 October - December 2019

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय
एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरबिंद मार्ग,
नई दिल्ली - 110 016

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:12:43 +05'30'

REG. NO- 42912/84, VOL NO-16, ISSUE NO-4 OCTOBER- DECEMBER-2019

ISSN NO- 09725636

UGC अनुमोदित पत्रिका

16. Postcolonial Discourse in Chinua Achebe's Novels — 81-89
Dr. Rajive Kumar Ranjan

17. बिहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावनाएँ एवं विकास — 90-94
रीतेश कुमार

18. A Study on Impact of GST After Its Implementation — 95-103
Khushboo Kumari

19. प्राचीन भारतीय इतिहास में मौर्य एवं गुप्तकाल के मध्य सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति : एक दृष्टि — 104-108
कृष्ण शंकर प्रसाद

20. मुगलकालीन भारत की संचार व्यवस्था — 109-110
डॉ0 ममता कुमारी

21. बक्सर जिले के समेकित ग्रामीण विकास में सरकारी योजनाओं के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन। — 111-114
रंजन कुमार

22. बेगूसराय जिला के मानव संसाधन विकास : एक भौगोलिक अध्ययन। — 115-119
मनोज कुमार

23. Personality and Attribution Style of Children of Alcoholic Parents — 120-125
Dr. Dhanvir Prasad

24. अनुसूचित जाति के शैक्षिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान का प्रभाव : समस्तीपुर जिला का एक भौगोलिक अध्ययन। — 126-133
दीप नारायण कुमार

25. Fuzzy Proper Mapping — 134-153
Dr. Rajesh Kumar Jha

26. Graph Colourings — 154-157
Vikas Kumar

27. तीन तलाक — 158-159
डॉ0 नेहा कुमारी

28. भारत में महिला सशक्तिकरण : एक विवेचना — 160-165
रजनीश यादव

29. Comparative Study of Mahatama Gandhi and Lok Nayak Jayprakash Narayan Politics in State — 166-171
Dr. Hamid Anwar

30. भारतीय राजनीति में धर्म और सांप्रदायिक की भूमिका: एक अवलोकन। — 172-175
संदीप कुमार अत्री

31. Khushwant Singh on Women — 176-179
Mr. Shyam Pravesh Yadav

32. आरा नगर (भोजपुर, बिहार) के बदलते परिवेश में महिला-पुरूष अनुपात का तुलनात्मक अध्ययन। — 180-184
अर्चना कुमारी

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfef37e6f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:13:52 +05'30'

REG. NO- 42912/84, VOL NO-16, ISSUE NO-4 OCTOBER- DECEMBER- 2019
UGC अनुमोदित पत्रिका
ISSN NO- 09725636

मुगलकालीन भारत की संचार व्यवस्था

डॉ0 ममता कुमारी
सहायक प्राध्यापक (गेस्ट फैकल्टी)
इतिहास विभाग
बी. आर. बी. कॉलेज, समस्तीपुर
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
मो0 नं0 –9931289715

सारांश
सक्षम संचार प्रणाली ही किसी समाज को संसार में होने वाले विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक एवं वाणिज्यिक परिवर्तनों का ज्ञान कराती है, जिन्हें आत्मसात करके सामाजिक व्यवस्था गतिमान बनी रहती है तथा वाणिज्यिक ढांचा विकासशील रहता है। यातायात एवं संचार व्यवस्था की दक्षता से ही विशाल साम्राज्य की केन्द्रीय सत्ता का विभिन्न प्रांतो एवं सूबों में सम्पर्क बना रहता है। यदि मुगलकाल में सक्षम संचार व्यवस्था न रही होती तो इतना विशाल मुगल साम्राज्य इतने समय तक स्थायी न रहा होता।

मुख्य शब्द : भारतीय अर्थव्यवस्था, खाद्यान्न उत्पादन, लघु एवं सीमान्त किसान।

प्रस्तावना

किसी राजनैतिक समाज के प्रभावी संचालन के लिए सक्षम संचार प्रणाली एक अपरिहार्य आवश्यकता है जो सम्पूर्ण समाज्य में सूचनाओं का प्रवाह बनाए रखती है तथा प्रशासन बिना किसी परेशानी के घट रही घटनाओं के अनुसार अपनी नीति का निर्धारण कर सकता है। मध्यकाल में सत्ता शक्ति के सिद्धान्त पर आधारित थी। अतः कोई भी शक्तिशाली व्यक्ति अपनी सैन्यकुशलता के बल पर सत्ता पर कब्जा कर सकता था अतएव प्रशासन की दक्षता के लिए संचार तंत्र की दक्षता अत्यन्त आवश्यक है। यातायात के साधनों एवं संचार के स्रोतों की आवश्यकता हर काल में प्रत्येक देश एवं समाज को रही है। अतएव आवश्यकतानुसार सम्राटों एवं बादशाहों ने उसके उत्थान के लिए कार्य किए।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश्य मुगलकालीन भारत की संचार व्यवस्था का अध्ययन करना है। भौगोलिक अध्ययन मुगलों ने भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की मूलतः शहरी होने के कारण उन्होंने नये शहरों का निर्माण एवं विकास कराया। व्यापारियों तथा व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, मंडियों एवं बाजारों की व्यवस्था तथा स्थानीय प्रशासन की उत्तम देखभाल मुगल शासकों के प्रमुख उद्देश्य थे ताकि हिन्दुस्तान का अन्य देशों तथा देश के विभिन्न नगरों का पारस्परिक व्यापारिक सम्बन्ध बना रह सके। अतएव इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुगल बादशाहों ने समय–समय पर यातायात एवं संचार व्यवस्था में सुधार के लिए प्रयत्न किए। बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण 13वीं तथा 14वीं शताब्दी में आन्तरिक व्यापार में वृद्धि हुयी। अतः पुराने व्यापारिक मार्गों जो जंगलों के अतिक्रमण का शिकार हो चुके थे, साफ करके खोल दिया गया। नये मार्गों का निर्माण करवाया गया। मार्गों के किनारे यात्रियों व व्यापारियों के ठहरने के लिए कारवां सराए बनवायी गयी, जो पोस्टल स्टेशनों के रूप व्यापारियों के ठहरने के लिए कारवां सराए बनवायी गयी, जो पोस्टल स्टेशनों के रूप में भी काम करती थी। यद्यपि उस समय संचार व्यवस्था तकनीकी रूप से इतनी अधिक विकसित नहीं थी परन्तु फिर भी सड़क तथा जलमार्गों द्वारा समुचित यातायात एवं व्यापार होता था। सामान के परिवहन के लिए जलमार्गों को अधिक उपयुक्त समझा जाता था क्योंकि स्थल मार्ग खर्चीले होते थे तथा उनपर लूटपाट का भय भी बना रहता था थल मार्गों पर चौपायों, बैलगाड़ियों तथा कुलियों का उपयोग सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए किया जाता था। क्षेत्रफल की दृष्टि से मुगलकालीन भारत एक विशाल साम्राज्य था, जिसकी प्राकृतिक विविधता उल्लेखनीय थी, इसमें शामिल घने जंगलों ,पहाड़ों ,मैदानी भागों, पठारी क्षेत्रों, नदियों तथा पर्वत श्रृंखलाओं ने तत्कालीन राजनैतिक एवं प्रशासनिक समाज को काफी हद तक प्रभावित किया। विशाल साम्राज्य में शांति बनाए रखने तथा व्यापार को बढ़ावा देना ही अधिकांश भारतीय शासकों का उद्देश्य था जिसके लिए अच्छी सड़क युक्त संचार व्यवस्था अत्यावश्यक थी। सिंधु घाटी सभ्यता के नगरों के आपस में सड़कों द्वारा जुड़े होने के कोई प्रमाण नहीं मिलते हैं सम्भवतः उस समय नगर सड़क मार्गों द्वारा नहीं जुड़े रहे होंगें क्योंकि तब तक लोहे का प्रयोग नहीं हो रहा था तथा लोहे के औजारों के बिना घने जंगलों में रास्ता बनाना सम्भव नहीं हुआ होगा। दूसरी ओर आर्यों द्वारा चारागाहों के निकट ग्राम समाज की स्थापना इस काल में गिने चुने व्यापारिक केन्द्रों का होना तथा सड़क मार्गों की अनुपस्थिति को प्रदर्शित करता है।

बुद्ध के समय तक शहरीकरण बढ़ने के साथ–साथ लोगों ने यात्राएं करना प्रारम्भ कर दिया था। लोग मुख्यतः उत्तरी भारत के पहचाने जा चुके मार्गों द्वारा यात्राएं करते थे। मौर्य काल तक ऐसे मार्ग पूरे उपमहाद्वीप में बनाए जा चुके थे। मेगास्थनीज ने मौर्यकाल की एक सड़क जो पाटलीपुत्र को साम्राज्य के उत्तरी–पश्चिमी भाग को जोड़ती थी का विवरण देते हुए बताया है कि इस सड़क के किनारे सराए तथा डाकघर बने हुए थे। ऐसा समझा

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=3f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066fc88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0bab03af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f564ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:15:04 +05'30'

2018-19, Sl. No.-11

RNI No. : UPBIL03942/2010 UGC Regd. No. 41402 ISSN : 2229-7308
UGC Referred International Journal
www.shodhdrishti.in
Vol. 8, Issue 11 Bilingual (Hindi & English) 29 December 2018 Azamgarh (U.P.) Ind

अखिल गीत शोध-दृष्टि

मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित अन्तरराष्ट्रीय शोध अर्द्धवार्षि

AKHIL GEET SHODH DRISHTI

Biannual International Referred Research Journal of Humanities and Social Science

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:16:22 +05'30'

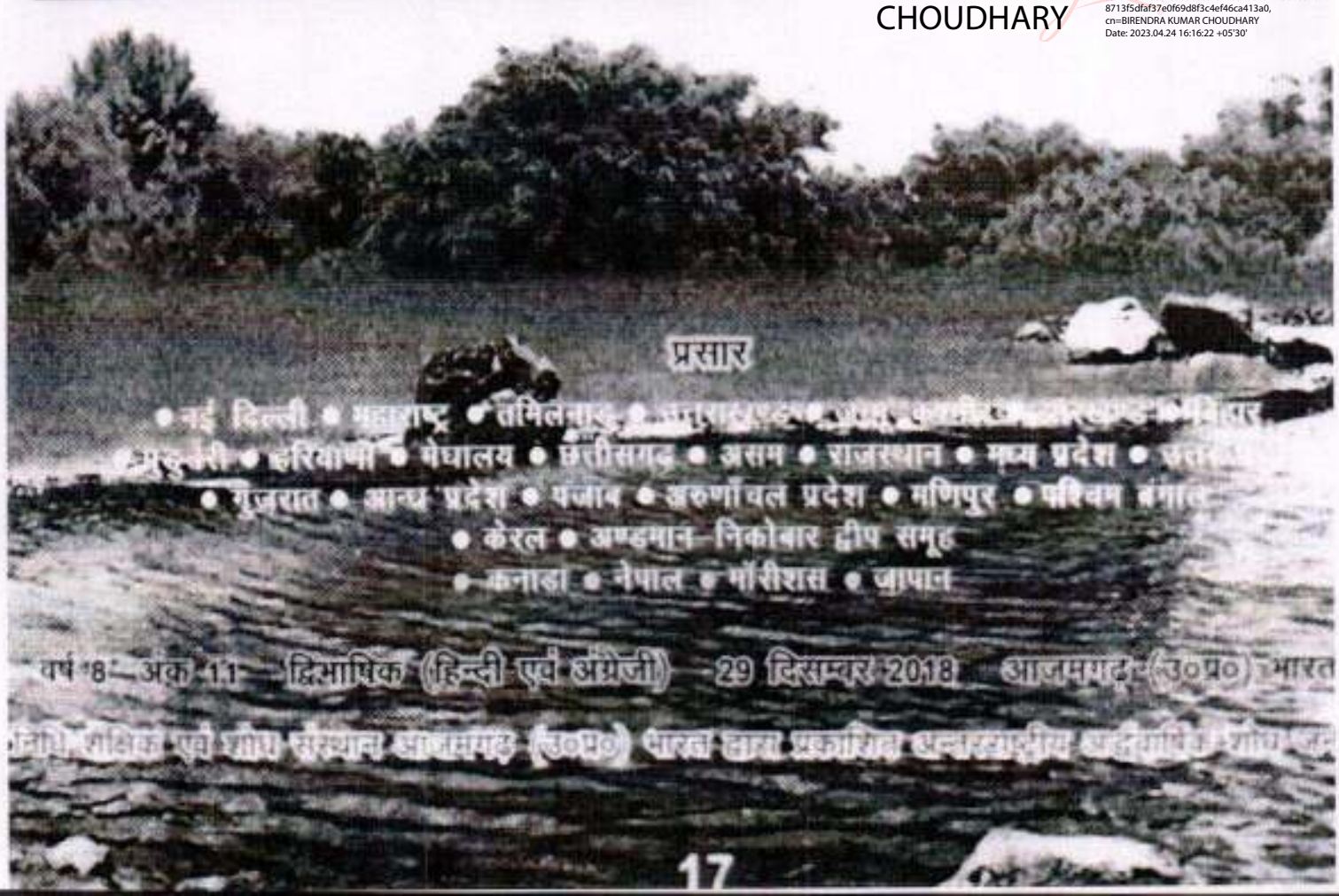

प्रसार

• नई दिल्ली • महाराष्ट्र • तमिलनाडु • [illegible] • बिहार
• मुम्बई • हरियाणा • मेघालय • छत्तीसगढ़ • असम • राजस्थान • मध्य प्रदेश • [illegible]
• गुजरात • आन्ध्र प्रदेश • पंजाब • अरुणाचल प्रदेश • मणिपुर • पश्चिम बंगाल
• केरल • अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह
• कनाडा • नेपाल • मॉरीशस • जापान

वर्ष 8 अंक 11 द्विभाषिक (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 29 दिसम्बर 2018 आजमगढ़ (उ०प्र०) भारत

[illegible] शोध संस्थान आजमगढ़ (उ०प्र०) भारत द्वारा प्रकाशित अन्तरराष्ट्रीय अर्द्धवार्षिक शोध [illegible]

अंग्रेजी

Dramatic Technique of Mahesh Dattani : A Critical Study

-Pinky Kumari*

As a dramatist Mahesh Dattani was influenced and inspired by Edward Albee's "Who's Afraid of Virginia Woolf", ? When he read it in his teens and opined that "It unleashed in me an ability to set up my male and female characters against each other."

Actually drama is quite different from other literary genres. Unlike othere genres, say poetry, fiction and essays, drama is a performing art. Hence, technique is of utmost significance in a play. Dattani says:

I see myself as a craftsman and not as a writer. To me, being a playwright is about seeing myself as a part of the process of a production. I write plays for the sheer pleasure of communicating through this dynamic medium.[1] (Nair,2001, quoted in Chandnary 98)

What matters most in a play or most in a play that is a dramatic technique can be manifested through performance. Julian Hilton, a theorist, almost discards the audience and the text and concentrates on the performance of the characters. Hilton suggests:

...in the theatre any plot or action exists only in the moment or performance and has no stable meaning or identity outside of the performance process... There is no single or necessary definition of what plot or action is, even in the case of a play with an authoritative source 'text.' For every performance, re-defines however marginally, the nature of the performers." The purpose of performing this becomes the one generating an intensified experience for all who participate in it rather than the representation of some preexisting action or state of feeling according to some immanent ideal in its poetic textual source,(Hilton 7)[2]

As a dramatist, Mahesh Dattani belives in the magic of the spoken word and hence lays emphasis on the performance of his characters. In the 'Preface' to Collected Plays, he says,

Every time the audiences (Critics too!) have applauded, cried or simply offered their silence in response to some moment, in the play, I am completely aware that it is my character that has done the work for me.(xi)[3]

In Dattani's plays, characters play the role to reach out to the audience. The themes, rather unusual themes like homosexuality, bi-sexuality, lesbianism, disease like HIV positives (Aids) are brought home to the audience

*Research Scholar, VBSPU, Jaunpur (U.P.)

 RNI. No. : UPBIL 03942/2010 ISSN : 2229-7308

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:17:33 +05'30'

2018-19, Sl. No.-04

THE ETERNITY

An International Multidisciplinary Peer Reviewed and Refereed Research Journal

ISSN 0975-8690 UGC List No 44958 Impact Factor 3.214

Volume X No. 1-2 Issue-II January-June 2019

Patron

Prof. Dilip K. Dureha

Editor-in-chief

Dr. Yatendra K. Singh

Editors

Prof. Surendra Singh
Dr. Priyanka Singh
Dr. Vinit Mehta

Associate Editor

Priti Singh

K.R. Publishers & Distributors
Varanasi/New Delhi

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:18:46 +05'30'

❖	महिलाओं के विकास में उच्च शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण का समाजशास्त्रीय अध्ययन *श्वेता रानी*	171-174
❖	सामाजिक गतिशीलता में प्रवास द्वारा जनसँख्या पर प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन *मो० सुजा ज़ाहिद अनवर*	175-177
❖	मीराबाई के काव्य में मध्ययुगीन समाज *मनीष चौधरी*	178-180
❖	**Upper Durgawati Basin & Regional, Drainage Analysis** *Dr. Chandeshwar Prasad*	181-188
❖	राष्ट्रवाद की अवधारणा एवं भगत सिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद : एक विश्लेषण *डॉ0 राजन कुमार नीरज*	189-197
❖	शास्त्री युग एवं इंदिरा युग में भारतीय विदेश नीति *मृत्युंजय प्रताप सिंह*	198-205
❖	**Political Analyses of Bihar According** *Dr. Sangita Kumari*	206-211
❖	**Recommendations for Successful Aging : Implement Active Lifestyle** *Varsha Singh* *Anamika Singh*	212-233
❖	राष्ट्र और समाज के निर्माण में मीडिया की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन *कुमारी माधुरी*	234-239
❖	गीता की योगशास्त्र के रूप में आधुनिक युगीन प्रासंड़िकता *राधेश्याम तिवारी* *अभिषेक कुमार*	240-243
❖	महात्मा गाँधी की दृष्टि में नारी तथा उनकी शिक्षा *डॉ रेणु कुमारी*	244-246
❖	**Our Democracy Illusion or Reality** *Dr. Binod Kumar*	247-251
❖	प्रकाश प्रदूषण– प्रभाव एवं कम करने के उपाय *कुमार धीरज*	252-255
❖	**Problems and Prospects of Agricultural Development in Bihar** *Dr. Jitendra Mohan*	256-262

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:20:04 +05'30'

Problems and Prospects of Agricultural Development in Bihar

Dr. Jitendra Mohan
Assiatant Professor (Guest Faculty), Department of Economics,
B.R.B. College, Samastipur

Abstract:

Bihar has been suffering from major problems of agricultural development and availability of food grains since two decade. Major problems of agricultural development in Bihar as well as in Bihar are lack of mechanization, low seed replacement rate, low level of fertilizer use, low level of credit availability, small and fragmented Holding, lack of effective system for transfer of technology, lack of procurement, in adequate processing and marketing. To solve the problems of agricultural development government has implemented strategy for various crops such as Rice, wheat, maize and mustard. Government has also started training to farmer about modern crop production technologies.Agriculture is the core competence of the Bihar as well as the country. However, agriculture has performed badly, declining in the early 1990s by 2 % per annum and growing by less than 1% per annum since 1994-95. Crop productivity trends in Bihar have been below the state average for most crops and far below their potential yield, given Bihar's fertile land and abundant water resources.The critical production constraint to rice-wheat production system Bihar as well as India is delay in seedling raising and transplanting of rice, and late sowing of wheat due to dependence of rice nursery raising and transplanting on rain water or canal water (wherever available), and inadequate conjunctive use of ground water, canal water, and rain water. Even when a farmer owns a tube-well, he is reluctant to pump ground water for nursery rising and transplanting of rice because of excessive cost of pumping associated with the diesel engine operated pumping sets.

Keywords: - *Agriculture, Food grains, Food security, Fertilizer, Production.*

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87463 7d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:21:40 +05'30'

2018-19, Sl. No.-05

86

IMPACT FACTOR GIF 2.3409

ISSN-2278-3911

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

A Peer Reviewed Research Journal

www.shodhprakalpresearch.com

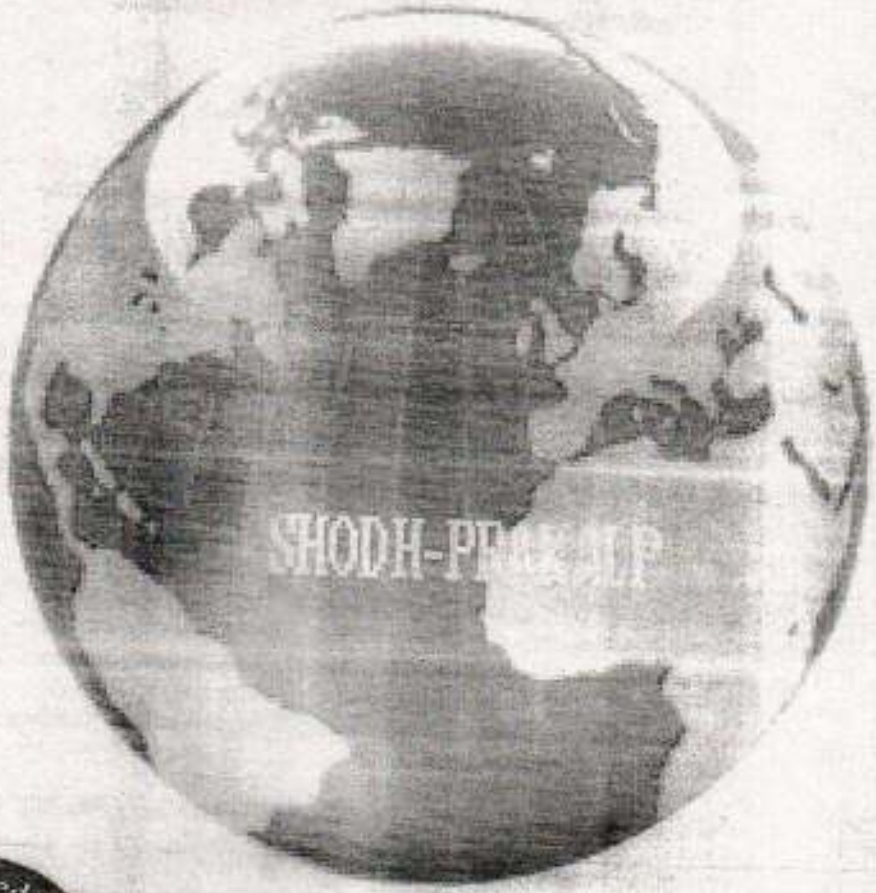

Volume LXXXVI
Jan-March, 2019

UGC Approved Journal
JOURNAL NO. 63535

Editor
Dr.Sudhir Sharma

Email- shodhprakalp@gmail.com

MPHIN/1997/2224

बीस वर्षों से नियमित प्रकाशित

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:23:10 +05'30'

25.	भक्तिकाल की प्रवृति व कबीर–एक विश्लेषण	प्रवीण कुमार	92
26.	बिहार में आपदा प्रबंधन एवं प्राधिकरण : एक भौगोलिक विश्लेषण	अभय कुमार	96
27.	A STUDY OF POVERTY-ALLEVIATION RURAL DEVELOPMENT MEASURES IN BIHAR (WITH PARTICULAR REFERENCE TO THE WORKING OF S.G.S.Y KAHALGAON BLOCK OF BHAGALPUR DISTRICT)	DR. SHASHI SHEKHAR	99
28.	ROLE OF MGNREGA IN POVERTY ALLEVIATION IN INDIA	DR. JITENDRA MOHAN	105
29.	WOMEN'S INVOLVEMENT IN AGRICULTURAL ACTIVITIES: A SOCIOLOGICAL STUDY	SHASHI KANT	108
30.	नादिर शाह के आक्रमण के कारण और परिणाम	अमरेश राम	112
31.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दरभंगा जिला के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान	डॉ. सौरभ राज	116

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:24:28 +05'30'

IMPACT FACTOR GIF 2.3489 U.G.C. NO. 63535

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Research Journal

ISSN 2278-3911

ROLE OF MGNREGA IN POVERTY ALLEVIATION IN INDIA

Dr. Jitendra Mohan
Assiatant Professor (Guest Faculty)
Department of Economics
B.R.B. College, Samastipur

Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) 2005 is landmark legislation in Indian history of social security legislation after independence. Enacted after a successful struggle for an employment guarantee legislation, this legislation is a partial victory towards a full?fledged right to employment in any developing country context.

Abstract:

MNREGA was set up on Feb 2, 2006 from district Anantapur in the state of Andhra Pradesh, India and originally protected 200 real "poorest" zones of the nation. The Act was applied in phased way - 130 zones were included in the year of 2007-08. With its propagate over 625 zones across the nation, the leading program of the Government has the prospective to increase the buying power of nonurban inadequate, decrease problems migration and to make useful resources in non-urban Indian. In addition, it can promote public and sex equal rights as around 23% employees under the program are Planned Castes, total 17% Planned Communities and around 50% women. In the year of 2014-15, about 71 thousand houses were applied on NREGA worksites. India is one of the fastest growing economies in the world but is also home to 22% of the world poor. While economic reforms did India a prosperous country, it failed to reach many sections of the society, especially the marginalized and the disadvantaged.

Keywords:- MGMREGA, Poverty, Employment, Problems, Community.

Introduction:

Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Act (MGNREGA) 2005 is landmark legislation in Indian history of social security legislation after independence. Enacted after a successful struggle for an employment guarantee legislation, this legislation is a partial victory towards a full?fledged right to employment in any developing country context. The essential feature of this legislation which separates it from any other public service provisioning scheme is its enactment through the parliament of India. Read with the Right to Information Act, this legislation has been bringing about a silent revolution in rural areas of the country.

The real challenge as well as the strength of the Act comes from it being given the legitimacy as well as authority from the Indian Parliament, which puts the onus of its implementation in the hand of the recipient as well as that of the implementing authorities. The recipients have a greater role, at least by design, not only in demanding the employment but also in deciding on how the Act will be implemented. It also drastically alters the power equations which the agents of the state and the powerful groups within the local society have become used to enjoying. Moreover, for the first time, it provides for mechanisms for penalizing the government if it fails to provide employment on time.

Although a programme of this magnitude will take time to settle down and be of any relevance in changing the landscape of rural India in such a short span of time, initial reports of the evaluation studies of MGNREGA by various institutions and individuals has documented the processes of revival and resurgence largely driven by the MGNREGA as an axis of struggle by the rural poor. It has neither been claimed nor was envisaged that MGNREGA is the key to successful rejuvenation of rural areas of the country that have remained marginalized in the growth process of the country. This requires many such efforts particularly towards ensuring the broken linkages

Nonetheless, it does offer an opportunity for the rural poor to stake claim to the fruits of the growth. Moreover, success stories of MGNREGA provide opportunities for mainstreaming and legitimizing the struggle for other social security legislations. Above all, they re?enforce the faith in the state in being able to do something for the poor and marginalized of the country in being included in the growth process. Therefore, the success of NREGA is as much a hope for those civil society activists fighting for the rights for the poor as it is a critique of the develop mentalist state in case it fails

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:25:51 +05'30'

2018-19, Sl. No.-12

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume XI September 2018 No. 4

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:27:12 +05'30'

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. XI, No. 4, Sept. 2018

- देवनागरी लिपि, संस्कृत भाषा एवं सूचना-समाज — 399-406
  नीरज कुमार द्विवेदी, शोधछात्र, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद
- प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित विमर्श — 407-409
  डॉ. गीता पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, महिला महाविद्यालय, डालमिया नगर, बिहार।
- विकास प्रशासन की अवधारणा : नीतियाँ, क्षेत्र एवं सर्वेक्षित, आज़मगढ़-जिला में उसकी संरचनात्मक व्यवस्था का विश्लेषण — 410-418
  आलोक कुमार वर्मा, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग (समाज विज्ञान संकाय), महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी से सम्बद्ध
- हर्षकालीन कनौज सम्मेलन : उद्देश्य और महत्व — 419-424
  डॉ. नलिनी माथुर, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, भगिनी निवेदिता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- बाल श्रम के प्रति दृष्टिकोण एवं अभिवृत्तात्मक उन्मेष — 425-428
  शालिनी सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जगतारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- हिंदी ग़ज़ल के विकास में पत्र पत्रिकाओं का योगदान — 429-431
  डॉ. ज्ञान प्रकाश मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंप्रेषण विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता : सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आयाम का एक अवलोकन — 432-436
  संध्या कुमारी, एम.ए. (राजनीति विज्ञान), शोध छात्रा, जे.पी.यू., छपरा।
  प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार सिंह, स्नातकोत्तर, राजनीति विज्ञान विभाग, जे.पी.यू., छपरा
- वर्तमान समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता — 437-440
  संदीप कुमार शुक्ला, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, शारदा देवी कन्या महाविद्यालय, बुडेरेपुर, बदलापुर, जौनपुर
- हिन्द महासागर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — 441-447
  डॉ. शशिकान्त सिंह, रक्षा एवं सामरिक अध्ययन

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:28:31 +05'30'

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता : सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आयाम का एक अवलोकन

संध्या कुमारी *
प्रोफेसर डॉ. अनिल कुमार सिंह **

विदेश नीति को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रीय विषय माना जाता है। इससे राष्ट्र का मार्मिक और अमार्मिक, दोनों प्रकार का राष्ट्रीय हित प्रभावित होता है। समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण स्थान है, जो राष्ट्रीय हित की पूर्ति के साथ-साथ विश्व शांति व सुरक्षा की स्थापना, अंतर्राष्ट्रीय विधि के अनुपालन, अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, उपनिवेशवाद व नस्लवाद की समाप्ति, मानवाधिकार और नारी अधिकारों के विकास तथा पर्यावरणवाद से सम्बन्धित है। भारतीय वैदेशिक नीति के कई महत्वपूर्ण सिद्धान्त निर्धारित किये जाते रहे हैं, जिनमें गुटनिरपेक्षता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताया जाता है। वस्तुतःभारत की वैदेशिक नीति के अग्रलिखित सात प्रमुख सिद्धान्त बताएँ जाते हैं[1]: (1)गुटनिरपेक्षता अथवा स्वतन्त्र विदेश नीति, (2) विश्वशान्ति, (3) साम्राज्यवाद का विरोध, (4) पंचशील, (5) संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ सहयोग, (6) रंगभेद नीति का विरोध, (7) निःशस्त्रीकरण का समर्थन।

भारत की विदेश नीति का निर्धारण करते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ही नहीं, वरन् विदेश नीति के निर्माता पं. जवाहर लाल नेहरू ने नीति के रूप में गुटनिरपेक्षता की नीति का चयन किया। सामान्य व्यवहार के भारत की विदेश नीति के इस महानतम सिद्धान्त को प्रकट करने के लिए 'गुटनिरपेक्षता' या 'तटस्थता' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है तट पर खड़े रहना, मँझधार में न कूदना। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इस शब्द की व्याख्या अग्रलिखित रूप में की गई है: "एक ऐसा व्यक्ति जो दो लड़ने वाले व्यक्तियों में से किसी की भी सहायता न करे।"[2] भारत की विदेश नीति एक स्वतन्त्र विदेश नीति है। यह सबसे अलग भी नहीं है और शीत युद्ध में किसी गुट के साथ संलग्न भी नहीं रहा है। इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि हमें किसी गुट का साथ देने के लिए हिचक भी नहीं होती जब पक्ष सही हो। इस प्रकार हमारी विदेश नीति स्वतन्त्र है, पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसे स्वतन्त्र विदेश नीति कहकर पुकारा भी था।

भारत 15 अगस्त, 1947 को जब स्वतन्त्र हुआ तो देश की बागडोर पंडित जवाहरलाल नेहरू के हाथ में आयी। उस समय ऐसी परिस्थितियाँ थी कि हमें अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति की घोषणा करनी पड़ी। यह केवल

---

* एम.ए. (राजनीति विज्ञान), कोष प्रज्ञा, जे.पी.यू., छपरा।
** स्नातकोत्तर, राजनीति विज्ञान विभाग, जे.पी.यू., छपरा

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:30:02 +05'30'

2020-21, Sl. No.-01

Reg. No. : 600/2009-10 ISSN 0975 – 7880

MANAVIKI

An International Peer Reviewed and Refereed Research Journal of Humanities & Social Sciences

UGC List No-: 42515 IIJF Impact Factor-: 3.097

Vol. XII No. I Issue-6 JANUARY-JUNE 2020

SOCIETY FOR EDUCATION & SOCIAL WELFARE • VARANASI •

A REFEREED JOURNAL OF THE SOCIETY FOR EDUCATION & SOCIAL WELFARE, VARANASI – 221005 (INDIA)

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:31:28 +05'30'

CONTENTS

1. **Problems and Prospects of Maize Cultivation in Saharsa District (A Geographical Analysis)** — *Manish Kumar* — 1-7
2. भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नारी का महत्त्व — *डॉ रेणु कुमारी* — 8-9
3. भारतीय महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति: एक अवकोलन — *डा0 अनामिका झा* — 10-16
4. संथाली समाज एवं संस्कृति — *डॉ0 विजय कुमार* — 17-20
5. भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि दिव्य महापुरूष स्वामी विवेकानन्द — *डॉ0 बिनोद कुमार* — 21-24
6. **Income Levels Determinants of Vegetable Growers in Allahabad** — *K.Srinivasa Rao* — 25-31
7. प्राचीन भारत में प्रचलित वस्त्र छपाई की प्रक्रिया — *डॉ0 कुमारी रंजना* — 32-34
8. भारतीय बौद्ध दर्शन के चार आर्यसत्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन — *कुमारी संगीता विद्यार्थी* — 35-42
9. मौर्यकालीन मृदभांड : एक परिचय — *डॉ सत्यपाल कुमार* — 43-44
10. ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक–सामाजिक विकास में महिला स्वयं सहायता समूह का योगदान : मधुबनी जिला के संदर्भ में — *डॉ0 विनय कुमार* — 45-49
11. मैथिली ओ आचार्य प्रवर अमरेश पाठक — *डॉ0 स्वीटी कुमारी* — 50-52
12. असहयोग आन्दोलन के समय झारखण्ड की सामाजिक स्थिति — *विजय कुमार* — 53-54
13. महादेवी की काव्य भाषा में प्रतीक प्रयोग — *डॉ० श्यामा कुमारी झा* — 55-62
14. अयोध्या की पौराणिक एवं ऐतिहासिक परम्परा एवं संस्कृति — *प्रिया देवी* — 63-65
15. महेन्दर मिसिर के साहित्य–संसार : विहंगम दृष्टि — *डॉ0 रविशंकर उपाध्याय* — 66-70
16. ग्रामीण क्षेत्र और अर्थव्यवस्था — *डॉ. कुमारी प्रियंका भारती* — 71-72
17. पर्यावरण और हमारी परम्पराएँ — *मुकेश कुमार दास* — 73-77
18. **Effects of Parenting Styles on Developing Values among Adolescents** — *Rachita* — 78-83
19. **Effectiveness of ICDS, NRC, Mission ManavVikas, Bal KuposhanMukt Bihar to combat the malnutrition in India & Bihar- A critical analysis** — *Dr. Krishna Kumari* — 84-88
20. **History of Land Settlements in India : A Regional Perspective** — *Dr. Tripti Rekha* — 89-96

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:33:00 +05'30'

मैथिली ओ आचार्य प्रवर अमरेश पाठक

डॉ0 स्वीटी कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, मैथिली विभाग, बी० आर० बी० कॉलेज, समस्तीपुर, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

अपन प्रतिभा आओर पाण्डित्यक द्वारा मैथिली आलोचना कें सर्वोच्च शिखर पर पहुँचादए मे जे अग्रगण्य छथि, मैथिली भाषाक सर्वांगीण विकास में अपना कें तन, मन, धन सँ लागल रहलाक कारणें जे प्रतिष्ठा प्राप्त कएने छथि, अपन कटु सत्य भाषणक कारणें साहित्यिक जीवन में अनेकानेक प्रतिद्वंदी बना लेने छथि, ओ थिकाह आचार्य प्रवर अमरेश पाठक।आचार्य प्रवरक सानिध्य मे रहि हमरा हुनकर विभिन्न रूप के देखबाक जे सुयोग प्राप्त भेल ताहि मे एक व्यक्तिक रूपमे हुनकर सहृदयता, निष्कपटता, कर्तव्यनिष्ठा, शालीनता, उदारता, सदाशयता एवं कर्मठता सँ अधिक एक विद्वान समीक्षकक रूपमे हुनकर ज्ञानगूढ़ता, गहन अध्ययन प्रियता, शोधापरक प्रवृति सँ हम सदा प्रभावित होइत रहलहूँ।

दुब्बरकाठीक शरीर, गौरवर्ण, चमकैत ललाट, तेजस्वी नेत्र, दृढनिश्चयी, निर्भीक वक्ता, व्यवहार कुशल, स्नेहक भंडार, पथ–प्रदर्शक, स्वाभिमानी, कोमल हृदय सँ युक्त एहि व्यक्तिक विषयमे जे कहल जाए से थोड़। हम अपन व्यक्तिगत सम्पर्कक आधार पर जाहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ ताकरे एक रूप रेखा प्रस्तुत कह रहल छी।

आचार्य प्रवरक सीतामढ़ी जिलाक सामरि ग्राममे एक जमींदार परिवार मे 1936 ई0 मे भेल। पिता चन्द्रभूषण पाठक जमींदारीक तगमा मात्र धारण कएने छलथिन्ह, कतेको मुकदमा लड़बाक कारणें परिवारक आर्थिक स्थिति जर्जर भा गेल छलैन्हि। एहन स्थिति मे हुनका पढ़बा मे जे कष्ट भेल होएत से अनुमान योग्य अछि। बाल्य कालहि सँ मेधावी रहलाक कारणें ओ सरस्वतीक आराधना मे लागि गेलाह, नीक अंक–प्राप्त कए ओ माध्यमिक आओर उच्चमाध्यमिक परीक्षा पास कएलैन्हि।

आई0 ए0 परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह। बी0 ए0 मे हुनक प्रबल इच्छा छलैन्हि जे बिहारक सुप्रतिष्ठित महाविद्यालय 'पटना कॉलेज' मे पढ़ी। ओहि समय मे कमो अंक रहलापर मैथिली पढ़बाक शर्त पर छात्रक नामांकन पटना कॉलेज मे भए जाइत छल। तैं मैथिली मे हिनक प्रवेश आकस्मिक मानल जा सकैत अछि। मैथिलीक प्रतिए उपेक्षा भाव रखनिहार कें मैथिली पढ़बाक हेतु विवश होमए पड़लैन्हि, एहि प्रकारें मैथिलीक क्षेत्र मे 1953 ई0 मे हिनक प्रवेश भेल।

वस्तुतः मैथिलीक विशेष अध्ययन पर परम्परा लगभग एहि समय मे अथवा एक दू वर्ष पूर्व प्रो0 आनन्द मिश्रक नियुक्ति सँ आरंभ भेल। एहि सँ पूर्व डा0 सुधाकर झा 'शास्त्री' जे मूलतः संस्कृत विद्वान छलाह तथा भाषा विज्ञान पर लंदन विश्वविद्यालय सँ विश्वविख्यात भाषाविज्ञानी डा0 टर्नरक मार्ग निर्देशन मे पीएच–डी. प्राप्त कए संस्कृत प्राध्यापकक रूप मे नियुक्त भेलाह। प्रो0 जयदेव मिश्र क संग मिलि मैथिलीक उच्चस्तरीय पठन–पाठन एवं प्रचार–प्रसारक प्रक्रिया प्रारंभ कएल। अतएव मैथिलीक उच्चअध्ययनक प्रति लोकक अभिरूचि जागल। बी0 ए0 मे मैथिली के प्रतिष्ठा विषयक रूप मे राखल तकरा आन छात्र सँ हिट एक विषयक रूप मे गहन अध्ययन कएलैन्हि जकर परिणामस्वरूप 1955 ई0 क ऑनर्सक परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कएलैन्हि एवं ग्रजनंदन सिंह स्वर्णपदक सँ सम्मानित भेलाह।

1957 ई0 मे पटना विश्वविद्यालय सँ एम0 ए0 क परीक्षा रोहो प्रथम श्रेणी मे प्रथम स्थान प्राप्त कएलन्हि आ विश्वविद्यालय स्वर्णपदक सँ सम्मानित भेलाह। एम0 ए0 पास कएलाक 1957 मे रामकृष्ण महाविद्यालय मधुबनी मे मैथिली प्राध्यापकक रूप मे अपन कार्य जीवनक आरंभ कएल, दू वर्षक पश्चात् 1959 ई0 मे बिहारक लब्धप्रतिष्ठित कॉलेज पटना कॉलेज मे मैथिली प्रध्यापकक पद पर हिनक नियुक्ति भेल।

पटना कॉलेज मे अएलाक बाद हिनका पर परिवारिक दायित्व बढ़ि गेलनि, अग्रजक आकस्मिक निधन भए जएबाक कारणें परिवारक सभ भार हिनकहि पर आबि गेल। भाई लोकनिक पढ़ौनी एवं बहिनक विवाह, दोसर दिस पिताक पट्टीदार लोकनिक संग मर–मुकदमा। एहना स्थिति मे हिनकहि सन व्यक्ति जे गीताक अनासक्त योगी जकाँ कर्म करैत गेलाह। एहि सभ कार्य के सम्पादित करबा मे हिनक पत्नी (गुरुआइन रत्ना पाठक) क सहयोग हिनका पूर्ण रूपें भेटैत रहलए आ तैएहिंगुरुतर भारक निर्वहन कए राकलाह। एतेक संघर्ष आ कष्ट मे रहितहुँ ओ मैथिली साहित्यक अभ्युत्थानक हेतु अपन लेखनी कें

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066fcc88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:34:28 +05'30'

2020-21, Sl. No.-02

ISSN 0975-8690 UGC List No 44958 IIJF Impact Factor 3.214

THE ETERNITY

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Volume: XI No. 4 October - December 2020

Patron
Prof. Dilip K. Dureha

Editor in Chief
Dr. Yatendra K. Singh

Editors
Prof. Surendra Singh
Dr. Priyanka Singh
Dr. Vinit Mehta

Associate Editor
Priti Singh

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:36:28 +05'30'

- ग्रामीण विकास में नई कृषि रणनीति की भूमिका
  सूर्य कुमार 70-74
- कार्पोरेट जगत के विरूद्ध असुर समाज के संघर्श की यथार्थ अभिव्यक्ति : ग्लेबल गांव के देवता 75-79
  दीना नाथ गुप्ता
- जनकवि विद्यापति
  डॉ स्वीटी कुमारी 80-83
- किशोरावस्था में मानसिक विकास एवं पोषण : एक अनुशीलन 84-89
  डॉ0 नीतू कुमारी
- बिहार के नवपाषण कालीन पुरास्थलों से प्राप्त रज्जुछाप मृद्भाण्डः एक पुरातत्विक अवलोकन 90-92
  रवि कान्त कुमार
- **Empoerment of Women and Self Help Group**
  Prof. Sanjay Kumar Sinha 93-97
- वर्तमान में समावेशी शिक्षा के प्रति समुदाय की भूमिका 98-104
  अनुपमा दीप्ति लकड़ा
- 1942 के भारत छोड़ो–आंदोलन में बिहार के युवाओं का योगदान 105-110
  कुणाल किशोर
- भारतीय किसान की स्थिति : एक अवलोकन
  चाँदनी कुमारी 111-116
- **Changing Nature of Poverty: An Introduction to Multidimensional Poverty Index** 117-126
  Sateesh Kumar Jaiswal
- रोनाल्ड डार्किन का न्याय सिद्धान्त
  डॉ0 कुमार ऋषभ 127-133
- भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा
  आदित्य मंगलम 134-139
- **Corporate Social Responsibility practices by Selected Indian companies in the time of Covid-19 pandemic period** 140-147
  Taleshwar Murmu
- **Industrial Relation- Concept Aspect and Perspective** 148-151
  Sunny Jaiswal
- पर्यावरण के सन्दर्भ में मानवमूल्य की प्रासंगिता
  डॉ. प्रदीप सिंह 152-155

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066fc88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:38:02 +05'30'

लिखलनि एतेक सफल भेलाह। तकर एक प्रबल कारण ई छल जे हुनका समयमे देशी भाषा उच्च सँ उच्च अन्तः सवेग कँ अभिव्यक्त करबाक उत्तम साधनक रूपमे व्यापक प्रतिष्ठा पाबि चुकल छल। प्राकृत भाषा, जकरा कर्पूरमन्जरीक लेखक संस्कृतक सँ ऊँच स्थान देने छलाह, विद्यापतिक युगमे आबि 'नीरस' प्रतीत होमए लागल छल आ 'देसिल बअना' (अर्थात् समकालीन स्थानीय भाषा) मात्र सर्वसाधनाक हेतु सुबोध रहि गेल छल। तथापि विद्यापतिक युग प्राकृत एवं अपभ्रंश के पुर्णतः छोरबामे समर्थ नहि छल आ एही दुनूक प्रयोग समकालीन लेखक लोकनि समस्त भारतमे साहित्यिक भाषाक रूप जे तखनहुँ गद्य रचना मे एकर प्रयोग कएलन्हि। किन्तु अपना गीत–पद में एहि दुनु भाषा कँ व्यक्त कए तथा एकर स्थान पर एकमात्र मैथिली कँ प्रतिष्ठापित कए विद्यापति प्राकृत एवं अपभ्रंशक युग विसर्जन करैत छथि तथा संगहि आधुनिक भाषाक युगक आह्वान करैत छथि।"

तँ विद्यापति कीर्तिलता में कहने छथि–

का परबोधउँ कमन मनाबउँ।
किमि नीरस मन रस लइ लावउं।।

एवं

सक्कअवाणी बुहअन भावई। पाउअ रस को मम्म पावई।
देसिल बयना सबजन मिट्ठा तँ तंसन जम्पउ अवहट्ठा।।

विद्यपतिक गीत तीन वर्गमे बांटल गेल अछि–श्रृंगारिक गीत, भक्ति गीत आ व्यवहारिक गीत।एहि तीन में विद्यपतिक लोकप्रियताक श्रेय हुनक व्यवहार गीत मे अछि जे अति प्राचीन काल सँ अपना समाजक स्त्रीगणक कंठ में विराजमान अछि। मैथिल ललनाक कंठक मधुर ध्वनि हमरा लोकनि कँ सतत् सुनबा में अबैत अछि। ई गीत सैकड़ों वर्ष सँ एक कंठ सँ दोसर कंठ होईत अर्थात् जन–जन कँ मोहित करैत अपन यात्रा स्थगित नहि कएलक। तकर कारण अछि जन चेतना विद्यापतिक कँ जनमानसक एवं जन चेतना कवि सेहो कहल गेल अछि। विद्यापतिक व्यवहारपरक गीत गांव–देहात सँ लय शहरी जनजीवन में अति प्रसिद्ध अछि। कोनो विवाह–दान–शुभ कार्य हो मिथिला में विद्यापतिक भगवतीक गीत सभ ठाम गाओल जाइत अछि।

ओना हमरा लोकनि जनैत छी जे मिथिला धर्म–प्रधान देश रहल अछि। देवी–देवताक प्रती आस्था आ उपासना मैथिल जन मे अधिक देखल जाइत अछि । एक व्यक्ति अनेक देवी देवताक एक समान उपासना करैत छथि । शैव, वैष्णव आ शाक्ता तीन कँ माननिहार मिथिला कँ देखल जाईत छथि। शिव भक्त त्रिपुण्ड धारण करैत छथि। वैष्णव धर्मावलम्बी,वन्दनक तीनटा रेखा लगबैत छथि। शाक्त सिंदूरक ठोप करैत देखल जा सकैत अछि ।विद्यापतिक भक्ति बन्दना एही प्रकरें अछि।

जय जय भैरवि असूर भयाउनि
पशुपति भामिनि माया।
सहज सुमती वर दिअओ गोसाउनि
अलुगत गति तुअ पाया ।

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0ff69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:39:39 +05'30'

2020-21, Sl. No.-03

KIJAHS V7 (2020) 29-42

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

The Influence of Parenting on Behavioral Patterns of Children

[1]Dr. Sunil Kumar Mishra
Assistant professor, Department of Psychology, BRB College Samastipur Bihar

Received: August 18, 2020 Revised: August 24, 2020; Accepted: September 28, 2020

Article Info

ISSN: 2348-4349
Volume-7, Year-(2020)
Issue-03
Article Id:
KIJAHS 2020/V-7/ISS-3/A07

© 2020 Kaav Publications. All rights reserved.

Abstract

Parenting is the process of promoting and supporting the physical, emotional, social, and intellectual development of a child from infancy to adulthood. Parenting refers to the intricacies of raising a child aside from the biological relationship. Parenting is one of the greatest determinants of the behavioral development of children. It is necessary to recognize the importance of the development of behaviors in children and how this can impact a child's overall development. An important aspect of child behavior formation is operant conditioning, an idea popularized by B. F. Skinner. Basically, operant conditioning focuses on the idea that learning certain behaviors involves learning the relationship between one's own behavior and the reward or punishment that prevails. As a parent, there are various ways one can influence the types of behaviors a child exhibits, such as reinforcement and punishment techniques. The impact of parenting on development of various behaviours of children ie: aggression, anger, emotional problems, social interactions, social skills and adjustment etc. have been identified widely. On the basis of review studies revealed that parenting influences the development of behaviours of children. However, very little studies on children's behaviours in related to parenting have been done. Against this backdrop present study was conducted to investigate the consequences of parenting on development of behaviours of children. In this study a total of 240 children from 7 years to 17 years with various demographic characteristics were participated. The data obtained from various questionnaires. By analysis of data, it revealed that good parenting influenced positive behaviours and diminished negative behaviours. Those children who have been deprived of parental care showed poor study behaviour, Social Interaction and Helping Behaviours. Contrary to this Aggressive Behaviour, Non Compliance and Bullying Behaviour were found at very high level as compared to their counterparts.

Introduction

Parenting or child rearing is the process of promoting and supporting the physical, emotional, social, and intellectual development of a child from infancy to adulthood. Parenting refers to the intricacies of raising a child aside from the biological relationship.

 Copyright 2020 Kaav Publications

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c488ba35a0d7e739e2dee42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:41:35 +05'30'

KAAV PUBLICATIONS ... Stepping into New Horizon
The International Publisher

ISSN: 2348-4349
IMPACT FACTOR (2018):- 8.0121

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

Dear Dr. SUNIL KUMAR MISHRA
Assistant professor, Department of Psychology,
BRB College Samastipur Bihar

Date:- 28/09/2020

Thank you very much for submitting your Article, entitled "THE INFLUENCE OF PARENTING ON BEHAVIORAL PATTERNS OF CHILDREN" to the "KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES: (A Refereed Blind Peer Review Journal), ISSN: 2348-4349". Your paper has been assigned with an ID of **KIJAHS/JULY-SEP2020/VOL-7/ISS-3** Please refer to this ID whenever you communicate with our Editorial Offices in the future. After a expert double-blind review, I am pleased to inform you that your reviewed manuscript entitled "THE INFLUENCE OF PARENTING ON BEHAVIORAL PATTERNS OF CHILDREN" been accepted and this Article is scheduled for publication in a forthcoming issue of the Journal of **KIJAHS.**

KAAV PUBLICATIONS KIJAHS

Founder & Editor-in-chief.
Prof. (Dr.) Kirti Agarwal.
Kaav Publications

KAAV PUBLICATIONS , 203, 2nd Floor, Plot No-7, Aggarwal Plaza, LSC-1, Mixed Housing Complex, Mayur Vihar phase-3, Delhi-110096 ; (Office) 011-22626549 ; (M) 8368091241
www.kaavpublications.org; www.kaav.org ; submission@kaavpublications.org ; kaavpublications@gmail.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:43:51 +05'30'

2020-21, Sl. No.-04

International Journal of Applied Research 2020; 6(11): 425-428

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.4
IJAR 2020; 6(11): 425-428
www.allresearchjournal.com
Received: 18-09-2020
Accepted: 22-10-2020

Dr. Saroj Kumar Mishra
Guest Faculty, L. N. Mithila University, Darbhanga, Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Saroj Kumar Mishra
Guest Faculty, L. N. Mithila University, Darbhanga, Bihar, India

Creativity as a function of personality

Dr. Saroj Kumar Mishra

Abstract
The present study was undertaken to explore the relationship between creativity and personality factor. The Bager Mehdi Verbal test of creative thinking was administered on 200 students (Age 12–16) and 25% high creative and 25% low creative subjects were selected on the basis of creativity score. Then M. Mehrotra's Hindi version of IPAT's Jr. Sr. HSPQ was applied on north the high creative and low creative subjects to assess their personality characteristics. The test was applied for ascertaining the significance of difference between high and low creative subjects on all the 14 factors of HSPQ. The results revealed significant difference between the high creative and low creative subjects on the 14 factors of HSPQ. More specifically, the high creative subjects were found to have scored higher on personality factors B.C.E.G. J.Q and Q and lower on A.D.I.O. and Q. From the results, it was concluded that creativity as a function of personality.

Keywords: Creativity, relationship between creativity and personality factor

Introduction

Creativity is a complex phenomenon not confined to intellectual function alone, but is also manifested in personality characteristics. So attempts have been made to find out the personality correlates of creativity. Torrunce (1962) [19] has made an intensive study and summarized his researches regarding personality characteristics of the highly creative person in his book 'Grinding creative Talent'. He has reported three outstanding personality characteristics of the highly creative children-wild, silly ideas, production of ideas "Off the beaten track" and the work characterized by 'Humor' playfulness, relative lack of rigidity and relaxation. Taylor (1962) [18] has also found the creative person "as unconventional and as resisting the drives towards conformity and the conventional thinking often found in the schools".

Kurtzman (1967) [9] revealed that creative persons were adventurous, extraverted and self confident. Barron (1970) [1] reported that creative persons were loss religious and orthodox. Schaifer, Charle's E. (1968) [14] studied the self concept of creative adolescents and indicated complexity, reconciliation of opposites, impulsivity, craving for novelty, autonomy and self-assertion as their characteristics. Yaroschevake, Mc. (1969) [22] found divergence, originality, flexibility etc. to be the characteristic of creativity. M. Henty and choulksmith (1970) [12] revealed openness to experience and independence to be important factor for creativity in children.

Sharma (1975–76) [15] re/orated that the chief personality characteristics of creative school students were curiosity, restacking, adventure, originality, imaginativeness, determination, independence in judgment, self-confidence, sensitivity, varied internet, sincerity etc. Kumar, Grijesh (1978) [8] found that highly creative subjects were introverted possessed theoretical values and were highly motivated toward achievement. William, AJ, Poole Millicent, E. and Lott, WR (1979) [21] reported that the creative students' value qualities like obedience, diligence, attentiveness and com cooperativeness.

Mackinnon (1989) [10] observed in this regard ". There are many patterns along which persons travel toward the full development and expression of their creative potential, and that there is no single mould into which all that are creative will sit. The full and complete picture of the creative person will require many images, but if, despite this caution, one still enlists on asking what most generally characterizes the creative individual as he has reported himself in the Berkeley studies, it is his high level of effective intelligence, his openness to experience, his freedom from crippling restraints and impoverishing inhibition, his aesthetic sensitivity,

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=5a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623065c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:45:33 +05'30'

Mukt Shabd Journal ISSN No - 2347-3150 ISSN NO :

UGC Care list group-I

A STUDY OF NEED PATTERNS OF DRUG ABUSERS AND NON – ABUSERS WITH PARTICULAR REFERENCE TO YOUTH OF MITHILA REGION

[1] **Saroj Kumar Mishra**, Research Scholar, University Department of Psychology, L. N. Mithila University, Darbhanga – 846004. India

[2] **Dr. I. K. Roy**, Associate Professor & Head, University Department of Psychology, L. N. Mithila University, Darbhanga – 846004. India.

&

[3] **Chandan Kumar Sinha**, PhD, University Department of Psychology, L. N. Mithila University, Darbhanga – 846004. India

ABSTRACT

The present investigation has been aimed to study the need patterns of drug abusers and non – abusers with particular reference to youths of Mithila region – a historically well-known region of North Bihar. To find out the drug abuser is very difficult job especially in Bihar as we are well aware that Govt. of Bihar has banned the use of Alcohol and other drugs which were earlier available in the licit market. Thus, the present investigators used the drug abuse survey questionnaire schedule to find out the drug abusers to carry out the present piece of research work. Having surveyed the youth population using drug abuse survey questionnaire schedule, only fifty (n=50) youths were found as alcoholic in addition to it only fifty (n=50) youths were randomly selected from different areas of Mithila region as non-abusers (n=50). Then thereafter, to see the significance of difference on different dimensions of need patterns using Personal Preference Schedule developed by Tripathi (1973) were administered individually on the group of drug abusers and non-abusers. After tabulating the data according to procedures, obtained results indicated that out of 15 dimensions only eight dimensions on the basis of high socio-economic status have been found highly significant statistically between the group of drug abusers and non-abusers. They are "need for deference", "need for exhibition", "need for intraception", "need for succorance", "need for dominance", "need for nurturance", "need for change" and "need for heterosexuality". Only one dimension namely, "need for endurance" has been found significant in terms of low socio-economic status between the group of drug abusers and non-abusers. The trends of these results have been discussed in detail by highlighting the probable reasons.

Keywords: Need Patterns, Drug – Abusers, Non – Abusers, Youth, Mithila Region

Saroj Kumar Mishra
03/07/2021

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.28=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:47:16 +05'30'

www.shabdbooks.com

2020-21, Sl. No.-08

Reg. No. : N-1316/2014-15

IIJ Impact Factor : 2.011
ISSN : 2394-2207

उन्मेष
Unmesh

An International Half Yearly Peer Reviwed Referred Research Journal (Art & Humanities)

Vol. : VI | No. II | May-October 2020

प्रधान सम्पादक
डॉ० राधेश्याम मौर्य
सम्पादक
डॉ० शिवेन्द्र कुमार मौर्य

सह-सम्पादक
डॉ० मनोहर लाल
डॉ० अखिलेश कुमार

प्रकाशक
जन सेवा एवं शोध शिक्षा संस्थान, प्रतापगढ़-२३०००१ (उ०प्र०)

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:48:56 +05'30'

उन्मेष
Unmesh - ISSN 2394-2207
IIJ Impact Factor : 2.011
Vol. VI, No. II
May-October, 2020

■ महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित मूल्यों की शिक्षा का विवेचनात्मक अध्ययन ७२-७३
डॉ० आरती देवी

■ बौद्ध दोहों और चर्यागीतियों में सामाजिक अवधारणा ७४-७८
पिंटू कुमार चौधरी

■ ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन के उभरते प्रतिमान :
एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण ७९-८५
संजय भारती

■ पर्यावरण संरक्षण विधि एवं न्यायपालिका का योगदान :
एक सामाजिक-विधिक अध्ययन ८६-९२
डॉ० सरोज वर्मा

■ शिक्षा का अधिकार और बालश्रम : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ९३-९५
सीमा यादव

■ बौद्ध संघ में महामोग्गल्लान का योगदान ९६-९९
डॉ० शारदा कुमारी

■ साहित्य और मीडिया में राष्ट्रवाद १००-१०४
वर्षा मौर्या

■ आंचलिकता और रेणु १०५-१०७
विभीषण कुमार

■ इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में सत्ता का दर्पस्व और प्रभाव १०८-११३
राखी देवी व प्रो० चन्दा बैन

■ सूर्यबाला की कहानियाँ : स्त्री जीवन सन्दर्भ और मूल्य ११४-१२१
कुमारी सिन्धू

■ महावीर प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक चिंतन १२२-१२५
संतोष कुमार

■ छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा के काव्य में भावमूलक आत्मपरकता १२६-१२८
शिव सिंह कुशवाहा

■ 'अपने लोग' का सामाजिक यथार्थ १२९-१३२
शिवांक त्रिपाठी

■ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संत-साहित्य की प्रासंगिकता १३३-१३७
डॉ० मुकेश कुमार

■ पुराणों में वर्णित सदाचार एवं संस्कार १३८-१४०
तृप्ति यादव व डॉ० सुदामा सिंह यादव

■ अभिलेखों में समाज का स्वरूप १४१-१४२
रवीन्द्र कुमार चौधरी

■■■

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:55:27 +05'30'

उन्मेष Unmesh - ISSN 2394-2207

IIJ Impact Factor : 2.014
Vol. VI, No. II
May-October, 2020
Pg. No. 141-142

अभिलेखों में समाज का स्वरूप

रवीन्द्र कुमार चौधरी*

अभिलेखों का तात्पर्य स्मरण से है। लेखन परम्परा का अनवरत स्वरूप श्रवण पद्धति से माना जाता है। अभिलेखचिह्न काल गणना का यथार्थ मापक होता है। वैदिक काल से ही श्रुति-परम्परा को सुरक्षित करने के लिए विभिन्न पद्धतियों का प्रादुर्भाव होने लगा। पाषाणों का प्रयोग सुगम्य रूप से होने लगा। अतः इतिहास के लिखित साक्ष्यों का मुख्य आधार अभिलेख ही है। अभिलेख पुराणकालीन संस्कृति का मुख्य तथ्य है। यथा–

> नवं नवं पुरा स्मृत्यार्थरेवार्थकमला गीनाहैः।
> विमला मारवहगलात्मुद्रतैः वहार्थ विनास्मृतिलेखाः।।
> किमोऽर्थं पाषाणैः अभिलेखाः तु शिलापटैः।
> विनोदेनमाग्यैः दरैः किमकुर्वत रागणितमनथैः।।[1]

अभिलेखों का मुख्य उद्देश्य सर्वसिद्धान्त तथा समाज के श्रुति-स्मृति-श्रवण सिद्धान्तों का सर्वसम्मत संकलन तथा उन पर प्रमाणिक भाष्यलेखन है। अभिलेखों में जिन भाष्यों का सम्पादन हुआ वह समग्र रूप में विभाषकीयशास्त्र के अन्तर्गत संवेद्धित, सम्मिलित एवं विख्यात है। प्रायशः यह संस्कृति परिवर्तित होते हुए शिलालेख का भी समृद्ध स्वरूप बनी। यथा–

> अभिलेखो शिलालेखो तथा मे प्राणिनां मतः।
> यस्माद्याति च लोकोऽय विप्रलभ्य परस्परम्।।
> मगत्वं न क्षमं तस्मात् स्वप्नभूते अभिलेखागमे।
> रामागमेशिलालेखा राहुजेन वियुज्यते पर्णरामेण पादपाः।।[2]

अभिलेख केवल समाज दर्शन में ही नहीं अपितु संस्कृत काव्यों की समस्त परम्परा में भी अत्युच्च गौरवमय स्थान रखते हैं। प्रत्येक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वान विश्वासपूर्वक मानते हैं कि वे शिलालेखों के विषय में हमारे प्राचीन आचार्यों के अतिशय ऋणी हैं, जिन्होंने लेखन की प्रतिष्ठापरक परम्परा को अक्षुण्ण रखा–

> कृतागसोऽपि प्रतिपाद्य बध्यान्नजीघनन्नापि रुषा ददर्श शिलापटैः।
> बबन्ध सान्तवेन फलेन वैतांस्त्यागोऽपि तेजां हनयाय दृष्टः।।[3]

अभिलेख का इतिहास लेखन की समृद्धि से है, किन्तु ये समाज के विभिन्न स्वरूपों एवं समायोजन का भी यथार्थ रूप है– शिला शिवे सिषेवे व्यवहारशुद्धं यज्ञं हि मेनैन तथा यथा तत आशावते चाभिगताय सद्यो दैयाम्बुभिस्तर्थमदेच्छिदिष्ट।।[4]

प्राचीन ऐतिहासिकता को सुगमता की दृष्टि से अध्ययन करने के लिए अभिलेखागार, शिलापट भारतवर्ष की अमूल्य निधि है। इसे वेद का अर्वाचीन साहित्य का स्वरूप माना जाता है। अभिलेखों का मुख्य प्रयोजन राजकीय एवं नैतिक कार्यों को देश, काल तथा सामाजिक परिवेश के अनुसार परिस्फुटित एवं परिस्फुरित करना था।

अभिलेखों की पद्धति एक ऐसी अखण्ड ज्योति है जो सृष्टि के रहने तक अर्थात अनन्त तक विद्यमान रहेगी। इसमें वर्णित समाज के क्रियाकलापों का महत्त्व यह ज्ञात कराता है कि धर्म, न्याय के लिए पलायनवादी संस्कृति का समापन इसी से संभव हुआ है–

*शोधार्थी–संस्कृत, यू.जी.सी. नेट–जून–2018, जुलाई–2019 स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:55:52 +05'30'

2020-21, Sl. No.-11

Reg. No. 1589/2008-09 ISSN. 2347-4491 I.F. 2.382

अयन

Literature, Society, Humanities Discourse
(An International Multi-disciplinary Peer Reviewed and Refereed Research Journal)

Editor in Chief
Prof. Kumar Pankaj
Former Dean, Faculty of Arts,
(Banaras Hindu University, Varanasi)

Editor
Dr. Vikash Kumar
Assistant Professor, Iswar Saran P.G. College,
University of Allahabad, Prayagraj (U.P.)

Dr. Kumar Varun
Assistant Professor, Jai Prakash University,
Chapra (Bihar)

Volume : 9 No. 1 January-March Year- 2021

Published by
Lok Manav Samaj Kalyan Sansthan
Aurangabad (Bihar)-824101

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:56:09 +05'30'

Ayan – *A Peer Reviewed Refereed Journal, Published by : Quarterly*

©Publisher

ISSN :- 2347-4491
March, 2021

Correspondence Address :
Shri Krishna Nagar, Behind Fulman Mandir, Aurangabad (Bihar) Pin-824101

Mobile No. :- +91 9931604717, 9389140751
Email ID : ayanjournal@gmail.com

All rights reserved

No part of this publication may be reproducted or tranmitted in any means, or stored in any retrieval system of any nature without prior permission. Application for permission for other use of copyright material including permission to reproduce extract in other published works shall be made to publishers. Full acknowledgement of author, publishers and soure must be given. The views expressed in the juorunal ***"Ayan"*** *(Research for All). are not necessarily the view of editorial board or publisher. Neither any member of the editorial board nor publisher can in anyway be held reponsible for the views and authenticity of the articles, reports or research finding. Although every care has been taken to avoid errors or omission,s this publiction is being sold on the condition and understadning that information given in this journal is merely for reference and must not be taken as having authority of or binding in any way on the authors, editors, publishers and sellers who do ot owe any responsibility for any damage or loss to any person, All disputes are subject to Varanasi jurisdiction only.*

Composed by :
Munnu Lal

Printed by :
Jai Durga Jai Luxmi Printers
Shri Krishna Nagar, Aurangabad, Bihar

Published by :
Lok Manav Samaj Kalyan Sansthan
(Reg. No. 1589/2008-09) Aurangabad (Bihar)

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:56:26 +05'30'

Content

❖	**Growth and Performance of Public Sector Enterprises in India since Economic Reform** *Ashish Kumar Baranwal* *Dr. Balvir Singh Yadav*	1-21
❖	**The Experience of NibbāNa : A Comparative Study of the *TherīGāThā* and the *JāTakas*** *Shivani Shekhar*	22-33
❖	**Role of Education in Improving Social & Economic Condition of Villages** *Dr.Mahavir Prasad Sharma* *Dr.Krishna Kant Mishra*	34-40
❖	**A Review of Revolt of 1857** *Dr. Deepak Prakash Vardhan*	41-44
❖	छायावाद की राष्ट्रीय सांस्कृतक चेतना : एक विश्लेषण *रूपि सिंह*	45-49
❖	हर्षचरित में मीमांसा *डॉ० देवात्मा दुबे*	50-52
❖	**Skill India - The Turning Point** *Dr. Abhijit Bharti*	53-59
❖	स्वतंत्रता पूर्व कथा–साहित्य में चित्रित भारतीय संस्कृति और ग्राम्य जीवन *डॉ० रेनू दुग्गल*	60-66
❖	म्यांमार के लोकतंत्र की विफलता में चीन की भूमिका भारतीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन *डॉ० विकास शर्मा* *प्रो० भारती चौहान*	67-73
❖	**Police Custody and Human Rights Violations with Special Reference to Women in India** *Rajas Ranu* *Arun Verma*	74-90
❖	**Land Use Efficiency as a Measure of Pressore of Population : A Geographical Study of Saran District, Bihar** *Dr. Sanjay Kumar*	91-95
❖	पश्चिम बंगाल की प्राचीन मृण्मूर्तियाँ : एक अध्ययन *जया मिश्रा*	96-101

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:56:45 +05'30'

❖	संस्कृतकाव्यमाधुर्यविवेचनम् *श्रीगणेशगिरिः*	102-107
❖	वैदिकमनोविज्ञानस्य प्रासङ्गिकत्वम् *डा. धनञ्जय कुमार आचार्य*	108-117
❖	नई कहानी : उद्भव और विकास *पूजा सिंह*	118-122
❖	अद्वैतसिद्धान्तस्वरूपम् *प्रो० प्रसून दत्त सिंह*	123-125
❖	**A Comparative Study of E-Banking in Public and Private Sectors Banks With Special Reference to Bihar** *Sanjay Kumar*	126-134
❖	पानीपत का प्रथम युद्ध : रणनीति एवं तकनीक *डॉ० ममता कुमारी*	135-139

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:57:03 +05'30'

पानीपत का प्रथम युद्ध : रणनीति एवं तकनीक

डॉ0 ममता कुमारी
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

16वीं सदी एशिया और भारत में भारी परिवर्तनों की सदी थी। सभ्यताओं के आगे बढ़ने के सफर में कई ऐसे दिन आये जिसमें किसी राष्ट्र या लोगों का इतिहास बदल दिया और नये युग की शुरूआत की। भारत के इतिहास में 21 अप्रैल 1526 की तिथि भी भारत में एक नये अध्याय की शुरूआत की।

अक्सास पार के एक छोटे से राज्य फरगना का तैमूर एवं चंगेज के वंशज बाबर ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी को पानीपत के प्रथम युद्ध में पराजित करके भारत में एक नये राजवंश मुगल वंश की स्थापना की। "पानीपत की विजय ने महान मुगल साम्राज्य की नींव रखी जो शान, शक्ति व सभ्यता में मुस्लिम जगत् में सबसे महान और रोमन साम्राज्य से भी बराबरी का दावा कर सकता था।"

1494 में 12 वर्ष की छोटी उम्र में बाबर अपने पिता की अकस्मात् मृत्यु के बाद फरगना की गद्दी पर बैठा। दूसरा उल्लेख बाबर स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखता है, "899 (हिजरी) के रमजान के महीने में मैं फरगना की गद्दी पर बैठा। लेकिन फरगना का रमजान उसका उसके राज्य का आखिरी रमजान का महीना था, क्योंकि फरगना का ताज काँटों से घिरा था। फरिश्ता लिखता है, "किस्मत के हाथ गेंद बना वह शतरंज के बादशाह जैसा एक से दूसरी जगह भागता और समुद्र के किनारे पड़े कंकड़ के समान टक्करे खाता रहा।"

बाबर फरगना जैसे एक छोटे राज्य से संतुष्ट होने वाला नहीं था इसलिए वह अपने पूर्वजों के राज्य समरकन्द को जीतने की योजना बनाई। अपने पिता के सिंहासन पर बैठते ही उसे अपने चाचा और मामा से युद्ध करना पड़ा। वह समरकन्द को तीन बार जीता और उसे हमेशा गवाना पड़ा और उसे काबुल आना पड़ा। इस प्रकार अक्टूबर 1504 में बाबर ने काबूल पर अधिकार कर लिया।

इन विकासक्रमों ने आखिर बाबर को भारत की ओर रूख करने पर मजबूर कर दिया। उजबेगों के पुनः शक्तिशाली हो जाने पर बाबर जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर भाग रहा था तभी ताशकंद के निकट एक ग्रामीण मुखिया की वृद्ध माता से उसने अपने महान पूर्वज के अनुकरण पर भारत में अभियान चलाने का निश्चय किया था। लेकिन समरकन्द की असफलता के बाद ही उसने भारतीय अभियान को गम्भीरता से सोचा।

बाबर ने कहा है कि काबुल की विजय (1504) से लेकर पानीपत में अपनी जीत तक "मैंने हिन्दुस्तान को जीतने के बारे में सोचना कभी नहीं छोड़ा।" इतिहासकार अबुल फजल कहते हैं, "उसका (बाबर का) शासन

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:57:29 +05'30'

2020-21, Sl. No.-13

KALA

Journal of Indian Art History Congress

ISSN : 0975-7945

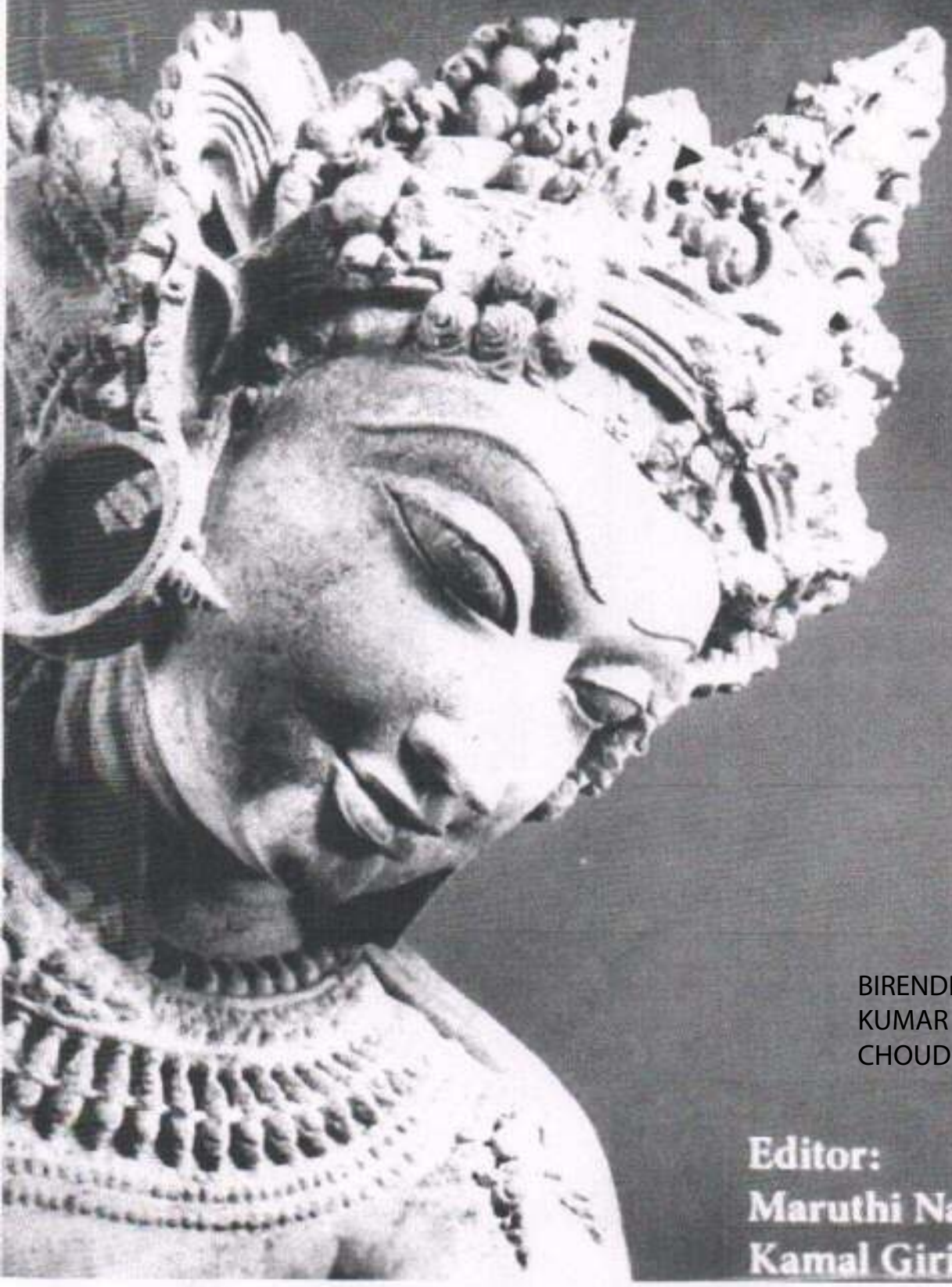

KALA

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfab7ecfe09d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:57:52 +05'30'

Editor:

Maruthi Nandan Tiwari

Kamal Giri

. Women on Diverse Edges and Volatile Family Values in Manju Kapur's Custody 70
Puja Priyadarshini & Prof. Uday Shankar Ojha
. Accounting Anxious Accustomization in Jhumpa Lahiri's Unaccustomed Earth
Anita Dwivedi& Prof. Uday Shankar Ojha 75
. Mahesh Dattani: A Dramatist of New Mood and Motive 81
Prof. Gajendra Kumar & Dr. Pinki Kumari
. Fading Light and the Perspectives of Being Alive: Laurence's The Stone Angel 86
Dr. Kousalya Kumari & Prof. Uday Shankar Ojha
Migration of South -Asians and the Issues they confront in White 91
Dominated Society: A Study of 'First Daughter' Series of Novels by Mitali Perkins
Rekha Nair K& Dr Sijo Varghese
Motherhood and Patriarchy: A Theoretical Perspective 97
Arpita Dey & Prof.Dipendu Das
Gender Expressions and Emancipation in Rabindranath Tagore's Streer Patra and Aparichita 102
Ajay James
Omprakash Valmiki's Joothan: An Analysis 109
Sandhya A. S
. Intercultural Relationship in Ruth Prawer Jhabvala's Esmond in India
Hemkant Vijay Dhade 112
. Postmodernism as the Critique of Modernism: A Foucauldian View 116
Dr. Pranavkumar Ulhas Ratnaparkhi
. Wounds of Partition: Condition of Women- Refugees in Bengal 123
Ashim Kumar Porel
. Assertion, Assimilation and Negotiation: A Critical Reading of Rohinton Mistry's Lend Me Your Light 130
Dr. Manohar D. Dugaje
. Changing Indian Cultural Dimensions and Its Impact on Youth 134
Dr. Chetna Priti
. Analytical Study of Automated Software Testing Framework for Web Applications 140
Dr. Sapankumar Singh
. Psychological Noir in Richard Wright's Novel Savage Holiday 149
K. Velmurugan & Dr. S. David Soundar
. Interconnectedness of Life and Death in Walker Percy's The Moviegoer
A. Susai Devanesan & Dr. K. T. Tamilmani 158

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:58:19 +05'30'

Kala: The Journal of Indian Arts History Congress
ISSN: 0975-7945

16. Mahesh Dattani: A Dramatist of New Mood and Motive

Prof. Gajendra Kumar, *Head, Department of English, J. P. University, Chapra*

Dr. Pinki Kumari, *Research Scholar in English, J. P. University, Chapra*

Abstract

The brilliant facet of Dattani's dramatic art seems to be of profound range of thematic aspirations what he portrays in his exploration. He focuses with utmost importance the middle class Indian life and offers the contemporary concerns like homosexuality gender identity, human bonding and communal frenzy. He provides voices to the middle class oriented people. Dattani has now emerged as representative voice of the modern India. It is pertinent to evaluate the dramaturgy of Dattani henceforth the origin, growth, maturity and attainments of Indian dramatic art have been taken into critical consideration so that the contemporary critical responses to Dattani's dramatic domian may be understood and perused.

Keynotes: homosexuality, gender identity, human relationships and communalism

The dramatic tradition of the ancient Hindu may be said to have been fully formed even before Greek dramas came to their knowledge. Apparently Hindu of over two thousand years ago had their own theory of drama and that their dramatic practice avoided both the severe austerity of Greek tragedy and the opulent extravagance of the ancient Chinese drama.

Bharata's *Natyashastra* elaborately explores the ancient stagecraft. All aspects of the drama – stage-setting, music, plot-construction, characterization, dialogue and acting – have borne the close critical scrutiny of the author, and a set of rules to guide the conduct of the stage has elaborately laid down. It analyzes searchingly the factors involved in plot, characters and emotions bringing out the far-reaching significance of 'rasa'.

It was only after the British set up their regime in India that the crippled Indian drama received new strength and witnessed a revival. With the impact of Western civilization on Indian life, a new renaissance dawned on Indian arts including drama. Furthermore, English education gave an impetus and a momentum to the critical study of not only western dramas, but also classical Indian drama. The western impact also quickened the dying roots of Indian native tradition with the sap of a new life, thereby opening the exciting chapter of modern Indian drama written originally in the vernaculars, and at times, translated into English. By the end of the 19th century, there were pioneering efforts boldly employing the mother tongue for creative dramatic expression. The earlier dramatists from different regions of the country tried their hand at different forms-romance, opera, comedy, faroe, tragedy, melodrama, and historical play. As a result, the modern Indian drama was a product and fusion of many models and forces. When old puranic themes were handled, various approaches – the reformist, the revivalist, the idealistic, the iconoclastic, the frivolous and the allegorical–were tried. Just to mention the most representative play written in regional languages, we have Khadikar's mythological play *Keechaka Vadha* in Marathi, Lakshminath Bezbarua and Gohain Barka's historical play *Jaymati* in Assamese, Amanat's opera *Inder Sabha* in Hindi, Ram Shankar Ray's *Kanchi –Kaveri* in Oriya, Gurajada Apparao's social play *Kanyasulkam* in Telugu, T. P. Kailasam's *Tollu-Gatti* in Kannad and Tagore's symbolic poetic plays like *Chitra, Sacrifice, MuktaDhara, Red Oleanders,*

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:58:49 +05'30'

2019-20, Sl. No.-07

ISSN: 2349-5758

SSRG

IJMTT

International Journal of Mathematics Trends and Technology

1729

$1^3+12^3=9^3+10^3$

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 16:59:15 +05'30'

IJMTT - Volume 65 - March 2019

S.No	Title / Author Name	Page No
1	On Nano $\pi^*g\beta$ - Closed Sets ***B.Shanmugaraj, G.Kosalai***	1
2	Isomorphism of Groups of Operators on Hilbert Space ***Prabhat Kumar, Amar Nath Kumar, Lalit Kumar Sharan***	6
3	Intuitionistic Approach to Heptagonal Fuzzy Number ***Anju Thomas and Shiny Jose***	12
4	Distance Transformation ***G.Suresh Singh Sunitha Grace Zacharia***	22
5	Idempotents of M2 (Z15[x]) ***Ms Poonam, Ms Shilpa Aggrwal***	26

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:00:13 +05'30'

Isomorphism of Groups of Operators on Hilbert Space

Prabhat Kumar[#1], Amar Nath Kumar[*2], Lalit Kumar Sharan[#3]
[#1] Research Scholar,P.G. Departmen of Mathematics,V.K.S.University,Ara,Bojpur,Bihar,India
[#2] Assistant Professor, Departmen of Mathematics,J.N.College,L.N.M.University,Darbhanga,Bihar,India
[#3] Retired Professor and Head ,P.G. Departmen of Mathematics,V.K.S.University,Ara,Bojpur,Bihar,India

Abstract

In this paper we have established two theorems by using the role of identity operator analogous to that for identity element e of a group. Using the property of isomorphism efforts have also been made to establish a result according to that the order of an element of a group is equal to the order of the image of that group. It has also been established that the f image of an identity operator of a domain group is an identity element of co-domain group. The same kind of result is also established for the additive inverse of a group considered. It has also been observed a relation between homomorphism and abelian group. In fact this result is an analogous result imposing a stronger condition on the homomorphism we have established a set of necessary and sufficient conditions for the group to be an abelian. Efforts have also been made by establishing a result that the inverse of an isomorphism is again an isomorphism. We have also observed by establishing a result that the product of two isomorphism is isomorphism.

Keywords - *Linear Space, Linear Transformation, Operator, Non singular Transformation, Norm, Normed Linear Space, Cauchy Sequence, Complete Metric Space, Banach Space, Inner Product, Hilbert Space, Continuous Linear Transformation, Operator on a Hilbert Space, Group, Homomorphism, Isomorphism.*

I. INTRODUCTION

Sincere effort has been made in order to study **isomorphism of groups of operators**. It is a well known fact that a mapping from a group to another group satisfying a set of special conditions is called an isomorphism. A good number of authors have given a collection of works on groups and isomorphism. As our groups considered in this work are not groups of numbers (real or complex) rather our groups are of nonsingular operators on a Hilbert space H. So we have made a stories to establish some analogous results for our groups of operators in place of the results already established for the groups of numbers e.t.c. As a result of which the Technique used for is a bit different from that for the groups of numbers.

In course of doing so to give a completion to this paper we first of all have exhibited a few examples. Through these examples we have shown that mapping defined in a suitable form becomes isomorphism. While doing so we have observed that under the same suitable mapping even when the groups were changed from additive group to multiplicative group or from multiplicative group to additive group even then the results followed. Going through the examples two to five the picture of our saying may be more and more clear.

II. PRELIMINARIES AND DEFINITIONS

In this section we are giving below a collection of all essential preliminaries ,definition and results by the notions of which we shall establish results in subsequent section..

Linear Space :—The symbol **K** will stand for either the set **R** of all real numbers and the set **C** of all complex numbers.

A structure of linear space on a set **E** is defined by two maps.

a. $(x,y) \to x + y$ of $E \times E$ into **E** and is called vector addition.

b. $(a,x) \to ax$ of $K \times E$ into **E** and is called scalar multiplication.

The above two maps are assumed to satisfy the following conditions.

(i) $x + y = y + x$, for every x,y in **E**. (ii) $x + (y + z) = (x + y) + z$ for every x,y,z in **E**. (iii)There exists an element 0 in **E** such that $x + 0 = 0 + x = x$, for every x in **E**. (iv) For every element x in **E** there exists an element denoted by $-x$ in **E**, such that $x + (-x) = (-x) + x = 0$, for every x in **E**.(v) $a(x + y) = ax + ay$, for every a in **K** and all x,y in **E**.(vi) $(a + b)x = ax + bx$, for every a,b in **K** and all x in **E**. (vii) $(ab)x = a(bx)$, for every a,b in **K** and all x in **E** (viii) $1 \cdot x = x$, for every x in **E**.

Whenever all the above axioms are satisfied, we say that **E** is a linear space (or a vector space) over **K**.

Now if **K** be the set of all real numbers then **E** is a real linear space and similarly if **K** be the set of all complex numbers then **E** is called a complex linear space.Here every element

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1623066fc88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87463 7d81a7f738b832c08713f5dfaf
CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:00:43 +05'30'

2020-21, Sl. No.-14

OUR PUBLICATIONS

Nirus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 12 अंक 4 जुलाई-अगस्त 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Referred Hindi Language Journal

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=11fe7dc5d3fe4f4cbcfab2cff618883d, 2.5.4.20=9a26e48bba35a0d7e739e2c6842f0f036d78, 0dc06eeab3fc0230665c8b80a5d, postalCode=484101, st=BIHAR, serialNumber=0bad3a874637d81a7f2b8b832d3f3fdfa7e0f69d8f24e4fe4ce413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:01:02 +05'30'

हरिराम मीणा की कविता का कथ्य–डॉ. नरेन्द्र प्रताप सिंह 949
भारतीय कला में 'रसो वैस:' की अनुभूति–डॉ. अयोध्या नाथ झा; स्तुति कुमारी 958
महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० अभिषेक कुमार 964
सिंधुघाटी सभ्यता : नगर निर्माण का वैज्ञानिक और ज्यामितिय विश्लेषण–डॉ० रूबी कुमारी 968
पैसिव रेजिस्टेंस एवं सत्याग्रह का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० अर्चना कुमारी 973
प्राचीन भारत में शिक्षा के विविध आयाम–डॉ. प्रतिभा किरण 979
आचार्य भरत से पूर्व रस शब्द की महत्ता एवम् अर्थगाम्भीर्य–डॉ. राजेश कुमार सिंह 982
भारत में क्रांतिकारी आंदोलन की पृष्ठभूमि: एक अध्ययन–सत्यम कुमार केसरी 987
आधुनिक भारत में स्त्री शिक्षा के लिए किए गए शासकीय अथवा व्यक्तिगत प्रयास: एक अध्ययन–डॉ० संतोष कुमार 994
आधुनिक भारत की राष्ट्रीय चेतना के विकास में भगिनी निवेदिता का योगदान–संगीता कुमारी 999
भारत का औपनिवेशीकरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर उसका प्रभाव–प्रिंस कुमार 1006
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर चंपारण सत्याग्रह का प्रभाव: एक अध्ययन–दिलीप कुमार 1012
भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का दक्षिण-पूर्व एशिया पर प्रभाव: एक अध्ययन–डॉ. अरुण कुमार निराला 1017
महात्मा गांधी का खादी-दर्शन एवं वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता–डॉ० अनामिका ब्रजवंशी 1021
आधुनिक भारत की जनोन्मुखी वैज्ञानिक नीति एवं गांधी विचार का संदर्भ (1900–1950 ई0)–डॉ० वेदवती 1025
इंजीनियर्स ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस: ए कम्पेरिजन–अदनान अहमद 1030
मेहरुन्निसा परवेज का "समरांगण" उपन्यास में चित्रित नारी अस्मिता–डॉ० पठान रहीम खान 1033
गांधीवाद का दिव्य संदेश–डॉ. दिवाकर कुमार कश्यप 1037
आदि शंकराचार्य और भक्ति आंदोलन–बलजीत बिहारी 1040
गुणाऽअलंकारतत्त्वविवेचनम्–डॉ० पवन कुमार राउत 1043
गांधीजी के विचारों का प्रभाव–संध्या कुमारी 1046
भारतीय शिक्षा प्रणाली और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार–डॉ० सुशील कुमार 1049
भारत के ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर एवं चुनौतियाँ: एक विश्लेषण–डॉ० राजीव रंजन सिंह 1052
बिहार के रोहतास जिला के कृषि संबंधी समस्या: एक भौगोलिक अध्ययन–कुमार पुरुषोत्तम सुमन 1057
भारत का राजधर्म और प्रवासन का सभ्यतायी विमर्श: उपनिवेशवादी दृष्टि बनाम हिन्दू दृष्टि–डॉ. अनुज कुमार मिश्रा 1061
कोरोना काल और प्रवसन: समस्या या संसाधन?–डॉ अपर्णा 1068
संस्कृति की बुनियाद पर आत्म निर्भर भारत का संकल्प: कोरोना संकट के विशेष संदर्भ में–डॉ. आदित्य कुमार मिश्रा 1073
कोविड-19 संकट एवं पलायन: चुनौतियां एवं संभावनाएं–हंसिका श्रीवास्तव 1080
एक राजनीतिक मुद्दे के रूप में पलायन–नमो नारायण 1085
कोविड संकट और पलायन में मास मीडिया की भूमिका–शालिनी प्रसाद 1089
कोविड-19 और प्रवासी मजदूरों की सामाजिक आर्थिक समस्याएं: मध्य प्रदेश एवं बुंदेलखंड के संदर्भ में–स्नेहा खरे 1094
भारत के संदर्भ में कोविड संकट और प्रवासन: मुद्दे एवं चुनौतियाँ–बेबी तबस्सुम 1098
कोविड संकट एवं प्रवासन: चुनौतियां एवं संभावनाएं–डॉ. सुरेखा पिपलानी 1105
समकालीन भारत एवं नेपाल में पलायन एवं चुनौतियां–किशलय कीर्ति 1111
कोविड.19 : श्रमिकों का विस्थापन,आत्मनिर्भर भारत का नवद्वार–डॉ. कुलवीर सिंह चौहान 1115

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:01:20 +05'30'

गांधीजी के विचारों का प्रभाव

संध्या कुमारी

एम.ए. राजनीति विज्ञान (सामाजिक विज्ञान संकाय), जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

गांधीजी 20वीं शताब्दी के महानतम् पुरूषों में परिगणित हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनकारी शक्तियों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। गांधीजी जिस समय भारत की आजादी के लिए लड़ रहे थे उस समय उनके मस्तिष्क में विश्व के उन तमाम लोगों को मुक्त कराने की अनुपम योजना थी, जो दासता के चंगुल में फंसे थे। न केवल स्वतंत्रता संग्राम अपितु नैतिक एवं सामाजिक संग्राम के सर्वश्रेष्ठ नायक, कोटि-कोटि जनता के प्रति कठिन राजनीतिक संघर्ष के अग्रणि नेता महात्मा गांधी एक संत थे या राजनीतिक। इस प्रश्न का उत्तर अनेक प्रकार से दिया गया है, किन्तु सत्य तो यह है कि ''गांधीजी ने धर्म और नीति का आचरण करते हुए, अपनी कथनी और करनी में सामंजस्य स्थापित करते हुए, एक सच्चे ईशान की जिंदगी जीने की कोशिश की। स्वंय को सत्य का शोधक कहा, उनका स्वरूप संतत्व प्रधान राजनीतिक था।'' उनके दर्शन के सत्य और अहिंसा के दर्शनप में देखा जा सकता है।

वास्तव में गांधीवादी दर्शन मानव समाज की बुनियादी समस्याओं से निजात पाने की दवा है। आज भी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं का निदान बापू के दर्शन एवं उनके द्वारा बताये गये मार्गपर चलकर ही किया जा सकता है, क्योंकि अधिकाधिक दुर्व्यसनों को आवरण में छिपाने की आकांक्षा से ही आधुनिक समाज में निराशा, दमन और शोषण का भाव है। उन्होंने इन सबको समाधान आध्यात्मिक ढंग से करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने आध्यात्मिक ज्ञान के विषय के मूल में प्रवेश का अनुभव किया कि बिना जीवन के मूल उद्देश्यों को समझने तथा विनाश विकृत मस्तिष्क के उपचार के विश्व संगठन या विश्व बन्धुत्व की कल्पना को साक्षात्कार नहीं किया जा सकता।

भारतीय राजनीति में गांधी के पदार्पण के पूर्व के दिनों में मुख्यतः जो दो विचारधाराओं का प्रचलन था, उनमें एक सामाजिक सुधार की पक्षपाती थी तो दूसरी यह दलील रखती थी कि औपनिवेशिक शासन ही मुख्य दुश्मन है और इसकी समाप्ति के बाद सामाजिक सुधार स्वंय स्वरूप ग्रहण कर लेगा। गांधी ने इन दोनों विचारधाराओं को एक साथ लेकर प्रस्थान किया- आजादी की लड़ाई का नेतृत्व संभला तथा सामाजिक सुधार कार्य के रूप में अस्पृश्यता मिटाने का संघर्ष भी शुरू किया। दुसरी तरफ जहां धार्मिक पुनरूत्थानवादी हिन्द यथास्थिति को परम्परा के नाम पर कायम रखना चाहते थे, वहीं प्रबुद्ध जन ब्राह्मण संस्कृति के विरोध में उपद्रवी रूख अपना रहें थे, ऐसी स्थिति में गांधी ने कहा कि हिन्दु धर्म, अस्पृश्यता को नहीं मानता और इस परस्पर विरोध का समाधान अछुतों को बराबरी का दर्जा देकर तथा हिन्दु-हृदय को उनके प्रति सदभाव में परिवर्तित कर ही किया जा सकता है। सन् 1920 ई0 और 1921 के कांग्रेस के अधिवेशनों में, जिसमें असहयोग आन्दोलन शुरू करने का निर्णय लिया गया, प्रस्ताव पारित कर यह दर्शाया गया कि प्रत्येक सत्याग्रहीअस्पृश्यता के खिलाफ न सिर्फ संघर्ष करेगा, बल्कि अछुतों से सम्पर्क रख उनकी यथासंभव मदद करेगा। गांधी ने अस्पृश्यता उन्मूलन को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का अन्योन्यक्रम अंग बनाया तथा स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों के लिए यह ऐसा महत्वपूर्ण कर्तव्य बनाया, जिसे अखिल भारतीय पैमाने पर स्वीकृति मिली।

गांधी के इन प्रारंभिक कृत्यों से दलितों को अपनी स्थिति सही ज्ञान हुआ और उनके अंदर सम्मान पूर्वक जीवन के लिए संघर्ष की वृत्ति जन्मी, जिसका प्रमाण था वायकाम महाद, नासिक आदि का आन्दोलन। वास्तव में गांधी अस्पृश्यता को एक दोष मानते थे और इसके लिए हिन्दु संस्कृति में यह चेतना भरना चाहते थे कि वह इसे मिटा दें। उन्हें आर्य समाज द्वारा चलाये गये सुचिता आन्दोलन में रूचि नहीं थी, क्योंकि वे अछुतों को हिन्दु समुदाय का अभिन्न अंग मानते थे। यही कारण था कि जब ब्रिटिश सरकार ने अछुतों को हिन्दुओं से जब पृथक करना चाहा तब उन्होंने उसका प्रबल विरोध किया।

सन् 1917 के बादसे कांग्रेस ने अछुतों के प्रति जो एक नया दृष्टिकोण उपजा, वह गांधी के ही असर का कारण था। उसके पहले गांधी कांग्रेस सामाजिक सुधार विषयक कार्यों के प्रति उदास ही रहा करती आयी थी । सन् 1917 ई0 के अधिवेशन में कांग्रेस

Sandhya Kumari

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:01:38 +05'30'

2020-21, Sl. No.-15

International Journal of Social Impact
ISSN: 2455-6703
Volume 5, Issue 4, DIP: 18.02.006/20200504
DOI: 10.25215/2455/0504006
www.ijsi.in | October - December, 2020

International Journal of Social Impact

Perceived parental rejection and occupational aspiration of male students

Ashok Kumar Ranjan[1*]

ABSTRACT

To seek the relation of Perceived Parental Rejection with Occupational Aspiration and the effect of sex on perceived parental rejection and occupational aspiration of high school students 'Parental Scale' (Hindi Version) constructed and standardized by Bhardwaj et al (2000) and 'Occupational Aspiration Scale' (Hindi Version) constructed and standardized by Grewal (1998) were administered on 200 students of male (100) and female (100) sex undergoing study in high schools of Saran district of Bihar. The age range of respondents was from 12 to 15 years. The analysis of data revealed that parental rejection exists negative effect on occupational aspiration [illegible] male students. Also found significant difference between male and female students on perceived parental rejection and on occupational aspiration between male and female students. Female students were found significantly higher than male students on occupational aspiration and lower on parental rejection in comparison to male students.

Keywords: *Parental, Rejection, Occupation, Aspiration, Sex.*

The foundation of the growth of personality lies in the womb of the family. It refers to a group related to blood or marriage. The child uses his parents as models for his adjustment to life. The fundamental patterns established at home, can be modified or changed as the child grows up but they cannot be eradicated completely. Relationship between the parents and the child is a central factor in the social, educational and all-round development of the child. Parents have great influence on the subject choice and vocational choice of their children. Children expect their parents to be important guides and counselors. They turn more to them than to anyone else (Birk, 1979; Mitchell, 1978; Roberts, 1979) for help regarding career planning. Parental rejection 'acceptance becomes very important in this regard because on feeling rejected children whether they are male or female hardly seek the help of parents regarding career planning and choices. Persons brought up in rejecting homes are likely to develop intense defensive awareness of others. They will probably have aggressive tendencies.

Parenting as the style of child upbringing refers to a privilege or responsibility of mother and father, together or independently to prepare the child for society and culture (Veeness, 1973). This provides ample opportunity to a child to find roots, continuity and a sense of belonging

[1]Research Scholar, P. G. Deptt. of Psychology, J. P. University, Chapra, India.
*Responding Author

© 2020 | Author(s), licensee IJSI. This is an Open Access Research distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License [http://creativecommons.org/licenses/by/2.0], which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:02:00 +05'30'

2020-21, Sl. No.-16

The International Journal of Indian Psychology
ISSN 2348-5396 (Online) | ISSN: 2349-3429 (Print)
Volume 8, Issue 4, Oct.-Dec., 2020
DOI: 18.01.088/20200804, DOI: 10.25215/0804.088
http://www.ijip.in

The International Journal of INDIAN PSYCHOLOGY

Research Paper

Perceived family conflict and academic achievement motivation of rural students

Ashok Kumar Ranjan[1]*

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:02:28 +05'30'

ABSTRACT

To seek the relation of Perceived Family Conflict with Academic Achievement Motivation and the effect of residential area on perceived family conflict and academic achievement motivation of high school students 'Family Environment Scale' (Hindi Version) constructed and standardized by Bhatia and Chadha (2015) and 'Academic Achievement Motivation Test' (Hindi Version) constructed and standardized by Sharma (2006) were administered on 200 students of rural (100) and urban (100) areas of Saran district of Bihar. The age range of respondents was from 13 to 15 years. The analysis of data revealed that family conflict reduces academic achievement motivation of both rural and urban students. There was not found a significant difference between rural and urban students on perceived family conflict but on academic achievement motivation urban students were found significantly higher than rural students.

Keywords: Family, Conflict, Motivation, Academic, Rural.

The motivation applied for achieving academic objectives is termed as academic achievement motivation. It means to move for higher academic success. It is an important factor behind academic success and works as a drive to push the students for better academic performance. Academic achievement motivation is considered as a key criterion to judge student's total potentialities and capabilities. It includes a range of dimensions that are relevant to success at work but which are not conventionally regarded as being part of student's academic performance. Specially it integrates formally separated approaches as need for academic achievement.

Academic achievement or scholastic achievement comprises two terms 'academic or scholastic' and achievement. 'Academic or Scholastic' according to Oxford Advanced Learner's Dictionary (2010) denotes, "connected with education in school, colleges and universities". 'Achievement', a thing that somebody has done successfully, especially using his own effort and skill. As Such, academic or scholastic achievement means educational achievement of a student by means of his own efforts and skills. According to Caplin (1968), "Achievement, when used in school education situation, refers to the extent or degree of mastery in certain areas of study as measured by some specified instrument, technique or test". Academic achievement determines the students' status in the class. The

[1]Research Scholar, P. G. Deptt. of Psychology, J. P. University, Chapra, India
*Corresponding Author

© 2020, IJIP. This is an Open Access Research distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 (www.creativecommons.org/licenses/by/2.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

2020-21, Sl. No.-17

ISSN : 2348-5590

EMERGING RESEARCHER

Research for All

An International Research Refereed Journal Related to Law, Literature, Commerce, Science, Social Science, Management, Communication and Medical

Volume : 7 Issue : II APRIL - JUNE : 2020

A Blind Peer Reviewed Interdisciplinary Quarterly Journal
UGC Approved till June 2017, UGC Journal No. 48889

Patron :

Hon'ble Justice K.D. Shahi
Retd. High Court Judge
Allahabad, India

Prof. Saket Kushwaha
Ex. Vice Chancellor of
L.N. Mithila University, Darbhanga
Ex. Professor of Agricultural Science
Institute of Agriculture
Banaras Hindu University, Varanasi
India

Editor in Chief :
Dr. Chandra Nath Singh
Law School
Banaras Hindu University
Varanasi, India

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0fe09d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:02:49 +05'30'

Personality as Correlate of Attitude towards Social Networking Site

Ashok Kumar Ranjan*

Abstract

To seek the relation of extraversion, neuroticism and self-concept with attitude towards Social networking sites 'Scale of Attitude Towards Social Networking Site' constructed and standardized by Suryawanshi and Deolia, NIEI of Muhar et al. and Self-concept Scale of Rastogi were administered on 400 respondents of rural and urban areas of Saran district of Bihar. The age range of respondents was from 16 to 62 years. The analysis of data revealed that extrovert group was significantly higher than introvert group on attitude towards social networking site. Stable group was found holding more favourable attitude than neurotic group and High self-concept group was found holding more favourable attitude than low self-concept group.

Keywords:- SNS, Extraversion, Neuroticism, Stability, Self-concept.

Introduction

For the satisfaction of biological and sociological needs every individual has engaged himself/herself in development and maintenance of social networks from the stone age to the present age. Through the exchange of information, views, feelings, ideas etc relationships among individuals is strengthened. An individual of any part of the world wants his communicational exchange to be faster and easier and this tendency gives birth to Social Media. **Yeh et al (2012)** view that social media provides users with a personal space in which they can post different massages in different formats.

It is social media platform where users share their personal pictures, knowledge, feelings, thoughts and opinions, search and collect information about different topics, and connect with other people, form friendships, etc. anytime and anywhere. Social media comprises collaborative projects, blogs, content communities, Social Networking Site (SNS), virtual words including virtual game worlds and virtual social worlds. Each Social Media has its own features and characteristics which distinguishes it from other Social Medias. It is why before choosing to use a particular Social Media, a user is expected to know the functionality of that Social Media and choose one or more of them on the basis of his/her needs and preferences. Social Network (Networking) Sites (SNS) are one of Social Media (SM) categories. SNS are applications that enable users to create their own profiles having ful-filled some personal information. Thereby users invite other people to access these information, send e-mails or messages of different format to one another, and share media such as files, pictures, audio, videos, etc **(Gill, 2004).**

Usage of social networking sites depends to a great extent upon the attitudes and personality of users. Personality is composed of different personality traits or characteristics such as extraversion, neuroticism and self-concept.

Extraversion means an outward turning of the libido. This is defined as an out going transfer of interest from the individual to the object. **Jung (1923)**, presents a very extensive description of personality traits of introvert and extrovert personalities. The extrovert is a person who values the outer

* Research Scholar, P. G. Deptt. of Psychology, J. P. University, Chapra, MOB: 9065220108
Email: ashokkumarranjan108 @gmail.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:03:15 +05'30'

2020-21, Sl. No.-18

ISSN : 2348-5485

AD VALOREM

Journal of Law

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

VOLUME : 7 ISSUE : IV OCTOBER -DECEMBER : 2020

IMPACT FACTOR: 4.83 UGC JOURNAL NO:41336
(APPROVED BY UGC TILL JUNE 2019)

Patron :

Hon'ble Justice K.D. Shahi
Retd. High Court Judge
Allahabad, India

Prof. B.C. Nirmal
Ex.Vice Chancellor of
National University of Study &
Research in Law, Ranchi
Ex. Head & Dean, Law School
Banaras Hindu University
Varanasi, India

Editor in Chief :
Dr. Chandra Nath Singh
Law School
Banaras Hindu University
Varanasi, India

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:03:37 +05'30'

ISSN: 2348-5485

AD VALOREM *(Journal of Law)*

An International Peer Reviewed Research Refereed Quarterly Journal

Volume 7, Issue IV, Part-I, October-December, 2020

CONTENTS

	ANTI-TERRORISM PREVENTIVE DETENTION LAW IN THE UNITED KINGDOM:LESSONS FOR INDIA *Meghna*	1-6
	ANALYSIS OF ADMISSIBILITY OF DYING DELARATION: AN INDIAN PERSPECTIVE *Vijay Kumar Singh*	7-15
	INTERNATIONAL LEGAL REGULATION OF CHEMICAL WEAPONS: AN OVERVIEW *Shyam*	16-20
	ENTITLEMENTS OF PERSONS WITH DISABILITY *Deo Singh*	21-27
	RIGHT TO FOOD: AN ANALYSIS *Mukta Verma*	28-30
	MEANING, DEFINITION AND CONCEPT OF FOLKLORE *Zeeshan Chand*	31-35
	GENDER EQUALITY IN LEGAL PERSPECTIVE *Nisha Yadav*	36-40
	CUSTODIAL TORTURE: A NAKED VIOLATION OF HUMAN RIGHTS *Ashwani Kumar*	41-48
	LIVE-IN RELATIONSHIP IN INDIA: A JUDICIAL APPROACH *Manoj*	49-54
	AFFORDABLE MEDICINE AND RIGHT TO HEALTH IN THE PRESENT PATENT REGIME IN INDIA *Pratibha Singh*	55-59
	ARBITRAL TRIBUNAL UNDER ARBITRATION *Narahari*	60-64
	STRESS LEVEL AND INTERNET ADDICTION DURING PANDEMIC C-19 OF ADOLESCENTS *Dr. Digvijay Kumar*	65-68
	PERCEIVED ACCEPTANCE IN FAMILY ENVIRONMENT AND SELF- CONCEPT OF ADOLESCENTS *Ashok Kumar Ranjan*	69-72
	CHILD SAFETY AND SECURITY: AN ANALYSIS WITH SPECIAL REFERENCE TO .. *Ranjeet kumar*	73-75

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:04:01 +05'30'

PERCEIVED ACCEPTANCE IN FAMILY ENVIRONMENT AND SELF- CONCEPT OF ADOLESCENTS

Ashok Kumar Ranjan*

ABSTRACT

To seek the relation of Perceived acceptance in family environment with self-concept of adolescents and the effect of residential area on perceived acceptance and self-concept. 'Family Environment Scale' (Hindi Version) constructed and standardized by Bhatia and Chadha (2015) and 'Self-concept Questionnaire' (Hindi Version) constructed and standardized by Saraswat (2011) were administered on 150adolescents of rural (70) and urban (80) areas of Saran district of Bihar. The age range of respondents was from 13 to 16 years. The analysis of data revealed that perceived acceptance in family environment boosts self-concept of adolescents. There was found significant difference between rural and urban adolescents on perceived acceptance and self-concept.

Keywords:- Family, Acceptance, Adolescents, Self-concept, Environment.

INTRODUCTION

The family is the oldest and the most important of all the institutions that man has devised to regulate and integrate his behavior. It is the family where basic needs of an individual are satisfied. The family is basically a unit in which parents and children live together. Its key position rests on its multiple functions in relation to overall development of its members, their protection, and over all well-being. Therefore, it would not be an exaggeration to say that in family not only the social and physical well-being of the individual is taken care of but also the psychological well-being. The family is the first to affect the individual. It is the family which gives the child his first experience of living. It gets him when he is completely uninformed, unprotected, before any other agency has had a chance to affect him. The influence of the family on the child is, therefore, immense. The influence of other agencies, although indispensable, must build upon groundwork furnished by the family.

In every family there is constituted and developed an environment on the basis of reaction and relationship patterns of family members. This is called environment of the family or family environment. The family environment is influenced by a number of factors like the nature of family constellation; number of children in the family; marital relationships between husband and wife; maternal (paternal) employment; and socio-economic and religious background of the family. The family environment possesses a certain consistency and its impact on children is manifested throughout their lives. In certain ways the influence of the family can be negative. All too often, members of the family take out all their frustrations on each other. Moreover, "instead of beinga readymade source of friends, the family is too often a readymade source of victims and enemies, the place where the cruelest words are spoken.

A child develops shocks when he does not find proper care and response of his parents. But on being accepted by parents and in family environment the child develops positive personality traits which prove very helpful in his/her future course of actions. Adolescents come up to their adolescence bearing experiences earned in family environment throughout their life span from birth to adolescence.

Adolescence is a transitional stage of physical and psychological development that generally occurs during the period from puberty to legal adulthood. Adolescence is usually associated with the teenage years, but its physical, psychological or cultural expressions may begin earlier and end later. Adolescence is a period of life with specific health and developmental needs and rights. It is also a time to develop knowledge and skills, learn to manage emotions and relationships, and acquire attributes and ability that will be important for enjoying the adolescent years and assuming adult roles **(Larson & Wilson, 2004)**.In this phase of life parental acceptance and rejection leave all the more shining marks on the psyche of adolescents. Different positive personality traits such as

* Research Scholar, P. G. Deptt. of Psychology, J. P. University, Chapra, Email: ashokkumarranjan108@gmail.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:04:30 +05'30'

2019-20, Sl. No.-08

ISSN: 2348-7097

Venkateshwara International Journal of Multidisciplinary Research

(Bi-Annual Double Blind Peer Reviewed Referred Journal)

Vol. 5 Issue: 1 Jan. - June, 2019

With Secretariat at:

School of Commerce & Management
Shri Venkateshwara University
Gajraula, Amroha (U.P.) - India

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:04:55 +05'30'

23. भारतीय संगीत में रस निष्पत्ति में सहायक तत्व 112
डॉ. रेखा कुमारी
24. इन्टरनेट बैंकिंग के लाभ व सावधानियाँ: एक अध्ययन 115
डॉ. शैलेस कुमार सिंह
25. बाल-अपराध में सूचना तकनीकि का प्रभाव 119
डॉ. सुनील कुमार सुमन
26. बिहार के भोजपुरी शेक्सपीयर भिखारी ठाकुर का जीवन गाथा (1887-1971) 123
डॉ. विकास कुमार
27. महात्मा गाँधी के विशेष संदर्भ में स्वच्छता का दार्शनिक विश्लेषण 127
डॉ. विवेकानन्द मिश्र
28. ग्रामीण विकास में कृषि का आधुनिकीकरण 130
???
29. बिहार की राजनीति में जातिगत आरक्षण 133
हेना रहमान
30. नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति-निरूपण की विविध शैलियाँ 136
मनोज कुमार पाठक
31. भारत में देशी रियासतों का इतिहास - एक वक्तव्य 141
श्वेता कुमारी
32. मनोविज्ञानिक प्रकृति और धर्म के प्रकार 145
डॉ. मिति श्रीवास्तव
33. **Study of Nutrition Genomics** 148
Dr. Shikha Kumari
34. **A analysis of Performance Evaluation of Mutual Fund (A Reference to Indian Market)** 151
Ruchi
35. वित्तीय क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ : कृषि क्षेत्र विशेष अध्ययन 156
डॉ. अनंत भानु
36. धर्म और आध्यात्म का आंतरिक सम्बन्ध 162
डॉ. ज्योति कुमारी
37. **Role of Horticulture in Economic Development: A Special Reference to Rural Sector of Bihar** 166
Dr. Navneet Ranjan
38. **A Study of Role of Effective Leadership on Employee Engagement in Academic Management Institutions (With Special Reference to Private Management Institutes in Bareilly District)** 170
Ms. Ratika Chawla
Dr. Rajeev Mehrotra

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:05:22 +05'30'

2020-21, Sl. No.-19

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 8, pp: 239-241 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

The buoyancy of FDI in India: during and post pandemic impact

Ruchi
Assistant Professor (Guest Faculty) Department of Commerce, A.N.D College, Shahpur Patory, Samastipur, Bihar-848504

Date of Submission: 10-10-2020 Date of Acceptance: 27-10-2020

I. INTRODUCTION:

Just like any other developing economies of the world, In India also, being a basic driver of monetary and economic prosperity,Foreign Direct Investment (FDI) has been a significant non-obligation money related asset for the financial advancement of the country.External organizations put resources into India to exploit generally bring down wages, uncommon venture benefits like duty exceptions, and so forth for a nation where foreign investment is being made, it additionally implies accomplishing specialized expertise and producing business. The Indian Government's ideal strategy system and hearty business climate has guaranteed that FDI streaming into the nation. The Government has taken numerous activities lately, for example, loosening up FDI standards across areas, viz. protection, PSU petroleum treatment facilities, telecom, power trades, and stock trades, were among others.

Speedy decline of FDI in firsthalf of 2020: FDI is expected to decline sharply as a consequence of the pandemic COVID-19 and the resulting supply disruptions, demand reduction, and passive outlook of economic actors. This decline is accentuating and accelerating thesteady decline of FDI flows observed in the past five years (figure1). There immediate impact on FDI flows will come from a reduction in reinvested earnings.

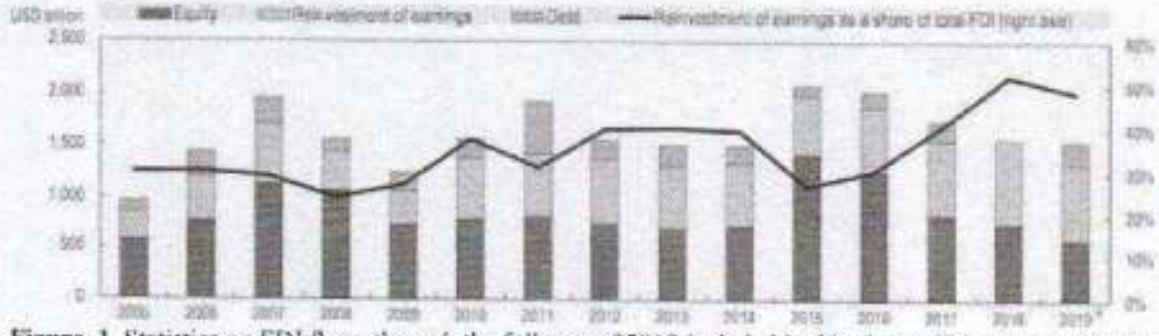

Figure. 1. Statistics on FDI flows through the full year of 2019 included in this chart will be made available in the OECD FDI statistics database. Debt refers to debt between related parties.
Source: (OECD FDI Statistics Database and FDI in Figures, April 2020.)

The Indian Market size and its comparable counterparts:

As depicted by Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT), FDI value inflow in India remained at US$ 469.99 billion during April 2000 and March 2020, demonstrating that Government's push to improve simplicity of working together and loosening up FDI standards has yield results. FDI value inflow in India remained at US$ 49.97 billion out of 2019-20. Information for 2019-20 demonstrates that administration area pulled in the most elevated FDI value inflow of US$ 7.85 billion, trailed by PC programming and equipment at US$ 7.67 billion, media communications area at US$ 4.44 billion, and exchanging at US$ 4.57 billion. During 2019-20, India got the greatest FDI value inflow from Singapore (US$ 14.67 billion), trailed by Mauritius

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87463 7d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:05:51 +05'30'

2021-22, Sl. No.-07

(UGC Care List) ISSN : 0974-0053

उन्मीलन

Vol. 36, Issue-09 (December, 2022)

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal)

प्रधान संपादक

यशदेव शल्य : मुकुन्द लाठ

संपादक

अम्बिकादत्त शर्मा

दर्शन प्रतिष्ठान

जयपुर

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:06:20 +05'30'

- महिला सशिक्तिकरण : चुनौतियाँ और संभावनाएँ 145–149

  Dr Supriya Sonalika

- प्राचीन भारत में कला एवं संगीत के संदर्भ में महिलाओं का योगदान 150–152

  डा० नरेश कुमार साव

- "मध्यप्रदेश में साक्षरता दर एवं सकल घरेलू उत्पाद के मध्य संबंध का अध्ययन " 153–158

  नमिता जैन एवं डॉ.रुपाली शेवलकर

- डॉ मनमोहन सिंह के कार्यकाल की भारतीय विदेश नीति : निःशस्त्रीकरण के विशेष संदर्भ में 159–166

  डॉ0 राकेश कुमार जायसवाल

- भगवानदास मोरवाल के उपन्यास साहित्य में शैली विधान 167–173

  नेहा गुप्ता

- अंधेर नगरी नाटक का रचना विधान और व्यंग 174–177

  नटवर लाल मीणा

- वैश्विक शांति की स्थापना : जे.कृष्णमूर्ति की अंतर्दृष्टि 178–184

  हरि नारायण

- वैदिक संहिता में योग का स्वरूप 185–190

  डॉ0 संजीव कुमार साह

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:08:19 +05'30'

वैश्विक शांति की स्थापना : जे.कृष्णमूर्ति की अंतर्दृष्टि

हरि नारायण

असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बलि राम भगत कॉलेज,समस्तीपुर,बिहार

सारांश

यदि मानव सभ्यता के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि युद्ध और हिंसा सदैव से मानवसभ्यता के विकास के अवांछित अंग रहे हैं।हम हमेशा संघर्षों में ही रहे हैं।हजारों वर्षों से कभी धर्म के नाम पर,कभी ईश्वर के नाम पर,कभी आदर्शों के नाम पर और कभी कट्टरता के नाम पर मनुष्य ने मनुष्य का खून बहाया है और यह आज भी जारी है।शायद ही कोई समय रहा हो जब पृथ्वी पर कहीं कोई संघर्ष न रहा हो।मानव मन में युद्ध से मुक्ति और शांति की स्थापना की एक सहज आकांक्षा रही है।सामाजिक भावना और मानवीय बुद्धि के विकास के साथ-साथ युद्धों और संघर्षों से बचने के लिए मनुष्य तरह तरह के उपाय करता रहा है।कालक्रम में इसके लिए तरह तरह के धार्मिक,राजनीतिक,सामाजिक और आर्थिक उपाय किए गए,कई तरह की व्यवस्थाओं पर विमर्श किया गया लेकिन ये सारे प्रयास सफल होते नहीं दिख रहे।क्योंकि वैश्विक संघर्ष और अशांति की समस्याएं जसकी तस बनी हुई हैं बल्कि और गंभीर होती जा रही हैं।इस प्रकार वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अशांति और संघर्ष एक तथ्य है और शांति स्थापना की सार्वभौमिक अभिलाषा अभी तक अलभ्य है।ऐसी स्थिति में यही कहावत चरितार्थ हो रही हैकि **मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की।**

जे.कृष्णमूर्ति आधुनिक युग के एक महान दार्शनिक और मौलिक चिंतक थे।वे परंपराओं और स्थापित सिद्धांतों की परिधि से परे जाकर स्वयं की गहन अंतर्दृष्टि से समस्या को उसकी जड़ों से समझने का प्रयास करते थे।उनकी अंतर्दृष्टि थी कि परंपराओं और स्थापित सिद्धांतों की एक सीमित व्यावहारिक उपयोगिता है।ये मानव जीवन के मौलिक और गहरी समस्याओं के समाधान में सक्षम नहीं हैं।उनके अनुसार अशांति की समस्या मानव जीवन की मौलिक समस्या है,बाहरी संसार में व्याप्त संघर्ष और अशांति व्यक्तियों के अपने अंदर की मानसिक अशांति का प्रतिफलन है।जबतक हमारे अंतस की अशांति समाप्त नहीं होती,दुनिया में अशांति,संघर्ष किसी न किसी रूप में बना रहेगा।उनके अनुसार समाज व्यक्तियों के अंतर्संबंधों का परिणाम है और समाज में मौलिक परिवर्तन केवल व्यक्ति में स्वतंत्र रूप से किए गए आमूल चूल परिवर्तन के माध्यम से ही हो सकता है।

जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार कोई भी सिद्धांत या बाहरी उपाय इस आंतरिक अशांति की जड़ों तक नहीं पहुंच पाता,इसीलिए इनसे अशांति कभी समाप्त नहीं हो सकती। अंतस की इस अशांति के निर्मूलन के लिए उन्होंने प्रत्येक मनुष्य के मन में एक क्रांति की आवश्यकता पर बल दिया और कहा की इस तरह की क्रांति किसी भी बाहरी व्यवस्था द्वारा नहीं की जा सकती क्योंकि कोई भी बाहरी उपाय मनुष्य के अवचेतन तक नहीं पहुंचता।इसे स्वयं की अंतर्दृष्टि या प्रज्ञा को को जगाकर अपने भीतर से एक समग्र परिवर्तन के द्वारा ही पूर्णरूप से लाया जा सकता है।

अंतर्दृष्टि को जगाने के लिए वे चुनावरहित सजगता के द्वारा अपने अंदर कीअशांति को बिना किसी धारणा और व्याख्या के सीधे देखने अर्थात उसे जीने की बात करते हैं।उनके अनुसार अपने अंदर की अशांति को जी लेना ही,उसे समग्रता में देख लेना है और समग्रता में देखते

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:08:51 +05'30'

2021-22, Sl. No.-06

KIJAHS V9 (2022) 22-25

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

Doi: https://doi.org/10.52458/23484349.2022.v9.iss4.kp.a5

Science and Philosophy: A Synergetic Relationship

[1]Hari Narayan
[1]Assistant Professor, Department of Philosophy, Bali Ram Bhagat College, Samastipur, Bihar

Received October 06, 2022 | Revised November 13, 2022 | Accepted December 22, 2022

Article Info

ISSN: 2348-4349
Volume -9, Year-(2022)
Issue-04
Article Id:-
KIJAHS 2022/V-9/ISS-4/A05

© 2022Kaav Publications. All rights reserved

Keywords
Philosophy, Science, Wisdom, Induction, Holistic, Analytic, Synthetic, Synergetic, Critical, Philosophize

Abstract

In this paper I have tried to review the relationship between Science and Philosophy. Majority of philosophers and scientists agree on the fact that both Philosophy and Science are interdependent but there are some scientists like Stephen Hawking who argue that Philosophy is useless for Science. Therefore in this paper I will address the question of whether science after such great developments still needs Philosophy and how Philosophy contributed in the development of Science. During this deliberation I will highlight some positive perspectives that will reveal the synergetic relationship between the two very clearly. As we all know that by scientific knowledge we mean certain, exact and full organized knowledge while Philosophy stands for ,"Love of Wisdom". These definitions clearly indicate a relationship between the two. Many scientific thinkers such as C.D. Broad, Arthur Eddington, Dr. Herbert Dingle, Bertrand Russell, James Jeans etc. accept it loudly. On the Contrary Stephen Hawking has declared Philosophy as a 'dead' discipline? That's why Sebastian de Haro (Trinity College) calls this relationship as "A Love-Hate Relationship". But this provocative statement that 'Philosophy is Dead' doesn't reflect the whole perspective that the discipline 'Philosophy' encompasses. In this paper I have adopted holistic approach to sketch the domains of Philosophy and Science. Science provides us specific knowledge whereas Philosophy deals with general and fundamental questions about the same. The domain of Philosophy is wider than that of science as besides all the scientific knowledge it also concerns about the nature of mind (quest for perfection, curiosity, wonder, quest for ultimate truth etc.) as well as meaning and goals of human life. From observation of our own life we can easily see that human mind longs to know not merely how things act, but why they do so? The answer of how is the subject matter of Science whereas Philosophy efforts to give answer of why. In this process Philosophy goes beyond Science. Thus science alone can't satisfy the human mind and human life. All these observations and deliberations which have been discussed in this paper automatically reveal the relationship between Science and Philosophy.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=15e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:09:08 +05'30'

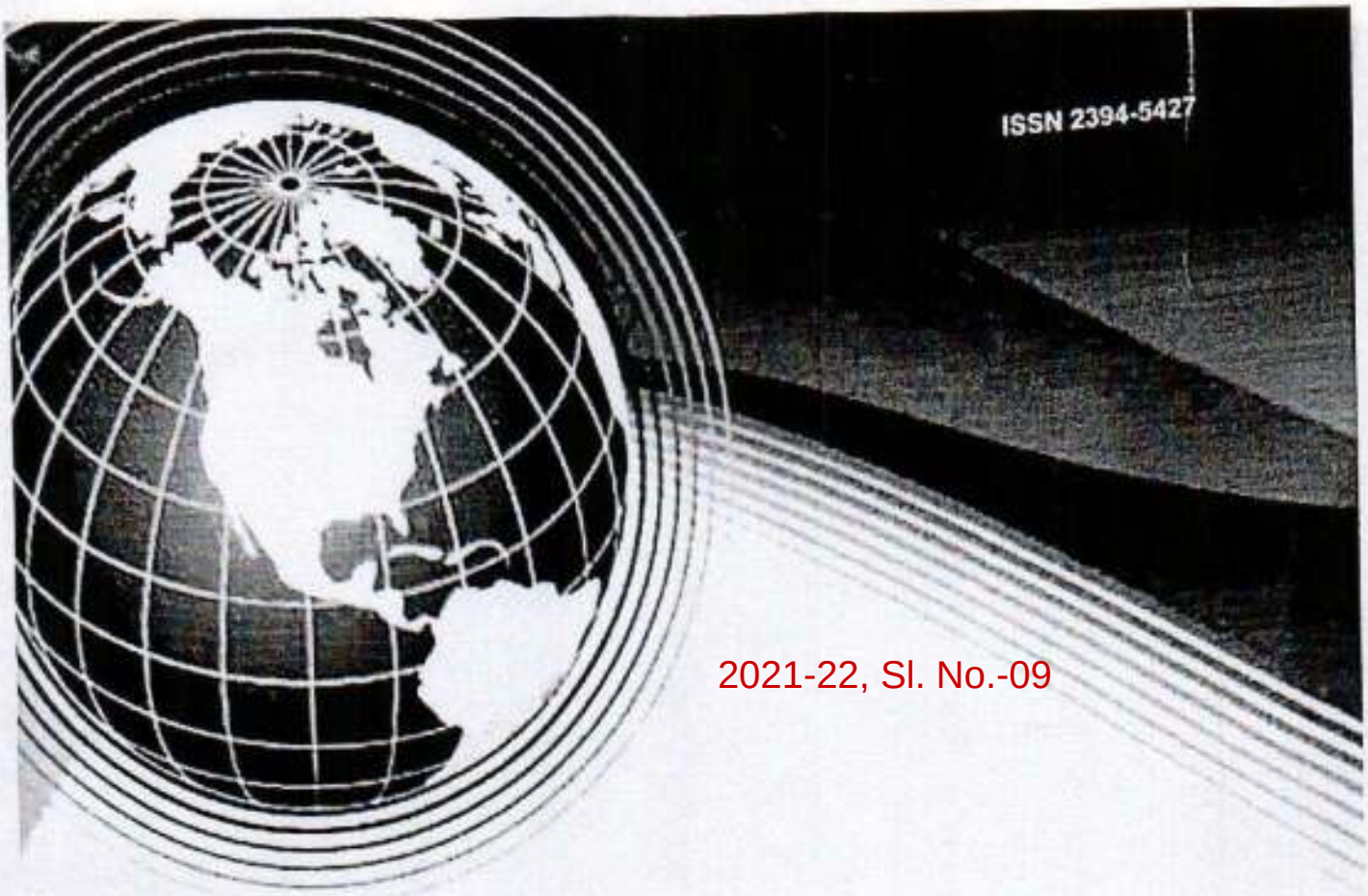

2021-22, Sl. No.-09

ISSN 2394-5427

ग्लोबल रिसर्च केनवास

बहुविध विषयों की त्रैमासिक शोध पत्रिका

माह अप्रेल-जून 2022 द्वितीय अंक

GLOBAL RESEARCH CANVAS

MULTIDISCIPLINARY P-REVIEWED(REFEREED) RESEARCH JOURNAL

Month of APRIL- JUNE. 2022 VOLUME-II

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:09:27 +05'30'

अनुक्रमणिका

हिन्दी और भारतीय भाषाएँ 4-6
डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी

आर्थिक विकास और बेरोजगारी के बीच संबंध 7-10
डॉ. छत्रपाल

कबीर और तुलसीदास का साहित्य : संत साहित्य या भक्ति साहित्य 11-12
डॉ. संतोष तांदळे

सोशल मीडिया और अप-संस्कृति 13-16
डॉ. अशोक कुमार मीणा

पर्यावरण और मानव समाज 17-20
डॉ. रश्मि दीक्षित

नीला चाँद मूल्यपरक अध्ययन 21-23
डॉ. ज्योति कुसुमबाल

रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण 24-26
अर्चना शर्मा

मुक्तिबोध का वैश्विक चिंतन 27-28
सतवीर सिंह

मॉरीशस में भारतीय डायस्पोरा : नृजातीयता एवं भाषागतिकी 29-32
डॉ. राजीव रंजन राय

चंद्रपुर जिले के आदिवासी किसानों का दर्द 33-35
हरिश एम. बावनगडे

हिन्दी जरूरी क्यों है 36-37
पिंकी कुमारी 'तुलसी'

भैरव प्रसाद गुप्त के उपन्यासों में प्रेम का विविधवर्णी स्वरूप 38-40
पूजा

राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में अनुदित कृतियों का योगदान 41-43
रीना देवी

21वीं सदी की हिन्दी बाल कविताओं में वैज्ञानिक चेतना 44-46
शैलेष कुमार बाबुभाई तलपदा

प्रेमचन्द की रचनाओं में किसानों की दारूण-दशा का चित्रण 47-49
डॉ. स्नेहलता कुमारी

साहित्य भूषण डॉ मिथिलेश दीक्षित का काव्य-आस्था, प्रेम व सौंदर्य का संगम 50-52
डॉ. सुरंगमा यादव

युवाओं के लिये स्वरोजगार के अवसर एवं चुनौती के स्वर्णिम भविष्य का आकर्षण 53-55
नन्दलाल मणि त्रिपाठी 'पीताम्बर'

Ecotourism and its Sustainable Development in Assam 56-59
Motiram Das

Paper on Study of Impact of Employee Monetary Motivation on Employees of Govt. & Privateeducation Sector 60-61
Jyotsna Gulati

Digital literacy and Netiquette: An exploratory study of Ethics and Behaviour on E correspondence 62-64
Dr. Sunita Dhankhar

An approach of pollution control : Control measures using ecological simulation modeling 65-66
Dr. Deepti Dubey

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:09:49 +05'30'

प्रेमचन्द की रचनाओं में किसानों की दारूण-दशा का चित्रण

डॉ. स्नेहलता कुमारी
सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
बी. आर. बी. कॉलेज, समस्तीपुर, बिहार

शोध-सार : हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में किसानों की जीवन दशा का चित्रण मिलता है। किसानों को बिना साथ लिए न तो जीवन की कल्पना की जा सकती है और न भारतीय अर्थव्यवस्था की। स्वास्थ्य के लिए गुणकारी और सेहतमंद फसलों को उपजाने वाले किसानों की आकांक्षाएँ, समस्याएँ और उनकी विपन्नता से जुड़े पहलूओं को अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचना का विषय बनाया है। किसानों का जीवन अत्यंत ही विद्रुपताओं से भरा पड़ा है। वे कर्ज में डूबे हुए हैं। सेठ-साहूकारों द्वारा सताए जा रहे हैं। शोषण-जुल्म, दमन की चक्की में लगातार पिसते रहते हैं। यद्यपि वर्तमान परिवेश में किसानों को पहले की अपेक्षा सुविधाएँ प्रदान की गई हैं तथापि ज्ञान और शिक्षा का अभाव इन सुविधाओं का लाभ प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा है। परिणामस्वरूप आज भी किसानों की अवस्था में सम्मानजनक परिवर्तन नहीं आया है। सामाजिक-आर्थिक रूप से आज भी हमारे किसान विषमताओं से घिरे हैं। किसान अपने जीवनस्तर को ऊँचा उठाने और परिवार को समृद्ध करने के लिए खेती से असंतुष्ट होकर मजदूरी करने को विवश हो रहे हैं।

शब्द संकेत : पूँजीवादी समाज, महत्वाकांक्षा, शोषण, असमानता, अकर्मण्यता, मजदूरी।

प्रस्तावना : "तुम्हें चाह जिसकी, वह कलिका इस वन में खिलती न कहीं, खोज रहा मैं जिसे, जिंदगी वह मुझको मिलती न कहीं।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियाँ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की हैं। इन पंक्तियों में पूँजीवादी समाज द्वारा सर्वसाधारण जनता पर किए जा रहे जुल्मों, अत्याचारों एवं शोषण-दमन की अवस्था को देखकर कवि का विप्लव एक सांप्रतिक संवेद गीत के रूप में उभरा है। विदित है कि पूँजीवादी, समाज के उत्पादन और 'विकास ने मेहनतकश जनता की गरीबी और मुसीबत को समाज के अस्तित्व की एक शर्त बना दिया। विख्यात दार्शनिक, इतिहासकार व समालोचक थॉमस कार्लाइल के शब्दों में आदमी और आदमी का एकमात्र संबंध नकद लेन-देन ही रह गया।"[2] प्रेमचन्द की कहानी 'पूस की रात' की शुरूआत कार्लाइल के इसी स्थापना से होती है। 'हल्कू ने आकर स्त्री से कहा- सहना आया है, लाओ जो रुपये रखे हैं, उसे दे दूँ, किसी तरह गला छूटे।'[3] प्रेमचन्द लिखित कहानी 'पूस की रात' का नायक हल्कू मामूली किसान है। उसके पास थोड़ी सी जमीन है, जिस पर खेती करके वह अपना और अपनी पत्नी मुन्नी का भरण-पोषण करता है। पूस माह की कड़ाके की सर्दी से बचने के लिए उसने बड़ी मुश्किल से मजदूरी करके तीन रुपये जमा किए लेकिन उन पैसों को भी सहना महाजन अपना बकाया वसूलकर ले जाता है। मुन्नी लाचारी और क्रोध की हल्की-सी त्वरित द्वन्द्वात्मक विरोध का स्वर प्रकट करती हुई हल्कू से कहती है वह खेती-बारी छोड़कर मजदूरी करना शुरू कर दे। प्रकृति और मानवकृत व्यवस्था के बीच हल्कू पूस की कठोर सर्दी में सुविधाविहीन और बेबसी के साथ अपने खेतों की रखवाली करता है। नील गायें रात में सारी फसल को चर जाती हैं। तब मुन्नी चिंतित होकर कहती है- 'अब मजदूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी।'[4] हल्कू खुश होकर कहता है- 'रात की ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा।'[5] कथा सम्राट प्रेमचंद ने जिस फलक पर 'पूस की रात'

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:10:08 +05'30'

2021-22, Sl. No.-12

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor
5.642

ISSN : 2395-7115
December 2022
Vol.-16, Issue-6

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्तमान में श्रीमद्भागवत गीता की प्रासंगिकता

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. सुलक्षणा अहलावत

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:10:28 +05'30'

19.	वर्तमान में भगवद्गीता की प्रासंगिकता	Dr. B. Keshava Prapanna Pandey	100-104
20.	श्रीमद्भगवतगीता की साहित्यिक एवं मनोवैज्ञानिक समीक्षा	डॉ. आशा कुमारी, डॉ. राजेश	105–112
21.	श्रीमदभगवद् गीता की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	राज बाला, प्रोफेसर (डॉ. सुनीता सिंह)	113–117
22.	श्रीमद्भगवद्गीता में मानव-कल्याण की अभिव्यक्ति	चोवाराम यदु	118–122
23.	श्रीमद्भगवद्गीता और वर्तमान समय में इसकी प्रासङ्गिकता : एक विश्लेषण	डॉ. चन्द्रशेखर उपाध्याय	123–126
24.	वर्तमान में श्रीमदभागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ. पूनम कुमारी	127–130
25.	श्रीमद्भगवद्गीता और वर्तमान संदर्भ में स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता	अमनप्रीत	131–136
26.	Shreemad Bhagwat Geeta-A scripture for modern day management	Dr. Anju Rani	137-143
27.	वर्तमान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता	अशोक कुमार	144–150
28.	RELEVANCE OF BHAGAVAD GITA IN MODERN TIME	Dr. Arti Kumari	151-155
29.	श्रीमद्भागवतगीता में नर-नारायण आस्था	डॉ. नेहा प्रधान	156–159
30.	वर्तमान वैज्ञानिक युग में गीता की प्रासंगिकता	प्रो. मीठालाल मीना	160–163
31.	The Srimad Bhagavad Gita is the Messenger of Ethics and Values : A Review	Dr. Avijit Mandal	164-167
32.	गीता में स्थितप्रज्ञता व वर्तमान जीवन	डॉ. कमल बाई मीना	168–172
33.	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित ज्ञान-विज्ञान योग की प्रासंगिकता	डॉ. घनकेश मीना	173–175
34.	वर्तमान में श्रीमद् भागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ0 ममता कुमारी	176–179

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:10:48 +05'30'

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 5.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
December 2022 Page No. : 176-179

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वर्तमान में श्रीमद् भागवत गीता की प्रासंगिकता

डॉ0 ममता कुमारी

इतिहास विभाग, बी0 आर0 बी0 कॉलेज, समस्तीपुर।

वर्तमान समय में मनुष्य की रफ्तार उसके जीवन शैली में काफी उतार–चढ़ाव बढ़ा दिया है। जिससे मनुष्य का संतुलन खो रहा है। और वह अधूरा–अधूरा सा हो गया है। आज का मनुष्य जो सुखी जीवन की बड़ी चाहत रखता है उसकी चाहत उसके कर्म में निहित है और उसके लिए सबसे पहले उसे अपने कर्म को समझना होगा तथा कर्म के रहस्य को समझने के लिए गीता के कर्मयोग माध्यम को जानना होगा कर्मयोग माध्यम से ही उसके जीवन का संतुलन सम्भव है। गीता में कर्मयोग के बारे में श्रीकृष्ण के द्वारा बताया गया है कि जो मनुष्य बिना फल प्राप्ति के आपना कर्म कुशलता पूर्वक करता है, तब मनुष्य की सारी शक्तियाँ केन्द्रीभूत हो जाती है तथा आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न होती है, क्योंकि बिना आध्यात्मिक ऊर्जा के मनुष्य अपने कर्म को श्रेष्ठ एवं उपयोगी नहीं बना सकता। गीता के इस कर्मयोग को जानकर अपनाकर शायद मनुश्य अपने जीवन को सुखद बना सकता है।

"श्रीमद् भागवत" गीता हिन्दुओं के लिए रामायण तथा महाभारत जैसा ही महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के माध्यम से श्रीकृष्ण मनुष्य हिन्दुओं के कर्म को सत्यमार्ग बताने का प्रयास किया। आधुनिक युग में जो सांस्कृतिक तथा व्यवहार में जो अस्थिरता आ गई है वैसे समय में गीता का उपदेश ही एक प्रमुख मार्ग है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जून को गीता का का दिव्य ज्ञान कुरूक्षेत्र की रणभूमि में रविवार के दिन सुनाया था और उस दिन एकादशी थी इसलिए हमारे हिन्दु धर्म में एकादशी का इतना महत्व है। इस ग्रंथ के अनुसार गीता उपदेश कृष्ण के द्वारा अर्जून को लगभग 45 मिनट में सुनाया गया थ। भगवान ने गीता का ज्ञान कर्त्तव्य से भटके हुए अर्जून को कर्त्तव्य सिखाने के लिए बताया तथा धरती पर आने वाली पीढ़ियों अर्जून की ही तरह अपने कर्त्तव्य पथ से ना हटे सदा धर्म के मार्ग पर चलने वाले को सीख दे।

वर्तमान के समय में श्रीमद् भागवत की बहुत बड़ी विशेषता तथा भूमिका रही :–

1. मानसिक शांति के लिए गीता का प्रयोग किया गया।
2. गीता जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।
3. मुश्किल समय में उभरने के लिए गीता ही एकमात्र ग्रन्थ है।
4. आधुनिक महामारी कोरोना में विचलित मन को शांत रखने के लिए उपयोग किया गया।

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:11:10 +05'30'

2021-22, Sl. No.-15

RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666

UGC Journal No: 41391

ISSN: 2230-8938

Impact Factor: 5.527

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal)

* Vol 13 * Issue 1 * January-March 2023

EDITOR
Suresh Chandra

SUB-EDITOR
Nilisha Singh
Mamtesh Kumari
Rakhi Panchola
Shikha Mamgain

PUBLISHED BY
Sahitya Kala Vigyan Tatha Sanskriti Anusandhan Samiti
Uttarkashi, Uttarakhand –249193 (INDIA)

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:11:34 +05'30'

EDITOR'S NOTE

With the progress of science in the modern era, research has special importance in our life because research is now being used for the in-depth study of each and every branch of knowledge. Through research efforts are made to answer those fundamental questions whose answers have not yet been available. But the answer to each question depends on the efforts of man. This concept can be clarified with this example, until a few years ago man did not reach the moon, in fact he did not know what the moon actually was? It was a problem that had no solution. Man had only assumptions about the moon, did not have pure knowledge. But with his efforts, he reached the moon, brought the soil from there, and from its analysis, it was possible to know what the moon is? Through research works, an attempt is made to find answers to those questions whose answer is not available in the literature or in the knowledge of man. In fact, the word 'research' is a process in which the activities of 'research' and 'investigation' are also included, in which a reliable solution to a problem is found on the basis of gathering and analyzing many types of facts. According to the nature of the word 'research', the process of enquiry, investigation, intensive inspection, extensive testing, planned study, purposeful and prompt general determination, etc. are important, that is, 'research' is a systematic and well-planned process by which human knowledge is increased. Human tensions are also reduced by research work. It is an effective method of solving scientific problems because research involves scientific investigation of a problem. The action of investigation is indicative of the fact that the problem should be looked at very closely. He should be investigated and his knowledge should be obtained.

As part of this process, the journal Anusandhan Vatika is presented to you as a medium of cognitive dialogue between Scholars, teachers and the academicians. Conceptual and experiential interpretation and analysis have been presented in this issue along with new factual information on multidisciplinary research related questions. Some of the research papers included in the research journal does not appear to be fully following the theoretical criteria of the research methodology. Nevertheless, due to the originality and novelty of the ideas, they have been given a place in the journal so that they can be combined in the integrated curriculum of the journal. Hope this issue of Anusandhan Vatika will be helpful in communication of research stream.

— Editor

ISSN: 2280-8398

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:11:59 +05'30'

TABLE OF CONTENT

Analyzing The Performance of Selected Co-Op Banks In Rajasthan- Mukesh Sankhla 1
वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण और भूमि प्रदूषण निवारण के उपाय- डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरोहित 10
उत्तराखण्ड राज्य के गठन में महिलाओं का योगदान- कल्पना ढपेती 15
NEP 2020: Visualizing The Teacher Education Of Tomorrow- SUDHAKAR PANDEY; Dr. Vikramjit Singh 17
गीतानुसार ज्ञानप्राप्तेः उपायः – मानस मण्डलः 22
The Theme of Struggle for survival as reflected in the Novel, The Road by Cormac Mc Carthy-Dr. S. David sundar; W. Nancy kanimozhi 25
वेदेषु अधिकारितत्व कृषिकर्मस्य आधुनिककाले समन्वयनम्- Jayashree Paul 28
भारत में कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व: मुद्दे और चुनौतियाँ-डॉ0 ओम प्रकाश शर्मा 31
'कतार में कटा सर' कथा संग्रह में सशक्त नारी भूमिका- मोहिनी गुप्ता 37
महिला में चेतना का बीजरूप: आवश्यकता एवं अभिव्यक्ति- डॉ0 त्रिपेता 39
Right To Education Act Empowerment of Citizens- Dr. T. S. Siyum Prasad 43
Study of Climate Change Detection Using Big Data Analysis- Poonam Sharma; Pawan Kumar 49
Study of Secured Data Retrieval In Encrypted Cloud Data Environment- Priyanka Verma; Pawan Kumar 55
स्वामी विवेकानन्द और उनका राष्ट्रवाद: एक अध्ययन- डॉ0 अंकेश कुमार 59
Ancient Indian Metallurgy- Dr. Akash Akul 62
संस्कृतसाहित्ये काव्यगुणविमर्शः- Prasenjit Malo 68
ब्रिटिश काल में अफीम की खेती: एक ऐतिहासिक विश्लेषण- अलका कुमारी; डॉ0 नाला सिंह 71
Factors responsible for shaping foreign policy of India- Kirti Kumar Pandey 75
Gender equality: A Progress Accelerating Towards Sustainability- Dr. Usha Pathak; Dr. Onima Sharma 79
The Status Of Artisan And Backward Castes (Service Castes) In Agrarian Society In Telangana- Dr. Musugu Srinivasa Rao 85
Indian Monsoon and its implications on Indian economy- Dr Pallavi 92
घरेलू हिंसा महिला जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप (घरेलू हिंसा कारण और निवारण)- डॉ0 अलका सक्सेना 98
मूक बधिर विशिष्ट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन- डॉ0 नाजना सिंह 102
लघु उद्योग और भारत का ग्रामीण विकास- विकास मोहन; डॉ0 रमन दीप सिंह 109
Career Choices in Metro and Non- Metro Cities: An Overview- Dr. Jyotima Pandey 115
चित्र मुद्गल के उपन्यासों में नारी संघर्ष- पिन्टू यादव 119
भारतीय सांस्कृतिक चेतना के संवर्धन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका- डॉ0 समीर कुमार पाण्डेय 122
हिंदी विभाग, शोध छात्र, एम. एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, गुजरात- अमित कुमार गुप्ता 126
स्वतंत्रता पूर्व भारत में दलित राजनीति: समीक्षात्मक अध्ययन- बृजेश कुमार रजक 129
बौद्ध धर्म और विज्ञान- डॉ0 ममता कुमारी 132
डॉ0 जगन्नाथ मिश्र का आर्थिक चिंतन एवं कार्य एक समीक्षात्मक अध्ययन- प्रो0 उषा झा; नीतू कुमारी 136
वैदिक वाङ्मय में वर्णाश्रमीय महत्व- डॉ0 मोनू कुमार 142
आचार्यमनुपदत्तस्यवेदिसम्मतिश्च उपनयनसंस्कारः- एकम् अध्ययनम्- Dr. Pritam Roy 144
Social Policy of the British Government in Modern India (with special reference to female infanticide)- Dr. Ravi Prakash 149
शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता एवं इसके बाधक तत्व- डॉ0 राकेश कुमार सिंह 154
विश्व भाषा हिन्दी- डॉ0 मनु कुमार शर्मा 161
शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रावधान- एक अध्ययन- डॉ0 अनिल कुमार 163

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:12:25 +05'30'

Women In Development: Post Independent India- Archana Pal; Ozima Sharma 166
कोविड 19 महामारी: अवसंरचना पर प्रथम सामाजिक एवं मानसिक प्रभाव- कौमुदी राय 174
Code on Social Security 2020 with Regard to Unorganised Workers: A Critical Study- Priyanka Chaturvedi; Dr. Pooja Gupta 179
भारत में कला और धर्म का सृजन- रश्मि ऐरी 183
महामना पं० मदन मोहन मालवीय की शिक्षा एवं जीवन-दर्शन- डॉ० अखिल कुमार पाण्डेय 192
भारत में महिला शिक्षा का इतिहास- शशिकला यादव; डॉ० इलधार यादव 196
जनजातीय महिलाओं के उत्थान में महिला आंदोलन की भूमिका (1947-2010)- डॉ० रेणुका पाठक 200
समकालीन हिन्दी आदिवासी कविता में अस्मितामूलक विमर्श- डॉ० प्रकाश कृष्णदेव धुमाल 203
औपनिवेशिक बिहार में उच्च शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन- रश्मि कुमारी; प्रो० अकली प्रसाद 209

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:12:52 +05'30'

RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666 ISSN: 2230-8938

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal)

* Vol 13 * Issue 1 * January-March 2023

बौद्ध धर्म और विज्ञान

डॉ0 ममता कुमारी

सहायक प्राध्यापिका (अतिथि), इतिहास विभाग, बी0 आर0 बी0 कालेज, समस्तीपुर

बौद्ध धर्म और विज्ञान के बीच का संबंध प्रमुख मुद्दा है। वैज्ञानिक पद्धति प्राकृतिक प्रश्नों का उत्तर है जिसे हम चौथ चरणों का उपयोग करके सबसे छोटी वस्तु के रूप में समझते हैं। इसे दो चरणों में संक्षेपित किया जा सकता है अर्थात् गणित और इंद्रियों के तर्कसंगत। बौद्ध दर्शन के लिए, बौद्ध दर्शन मानव की दो मुख्य समस्याओं में भी रुचि रखता है, अर्थात् सीधे मानव से संबंधित समस्याएं, या यह मानव और अन्य मानव के बीच संबंधित हो सकती हैं। बौद्ध दर्शन इस बात पर जोर देता है कि यह हमारा दिमाग है जो हमारे अपने दुखों में सबसे महत्वपूर्ण योगदान देता है और यह कि व्यक्ति को शांति, खुशी और समता की अधिक स्थिर भावना देने के लिए मन का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। साथ ही, बौद्ध धर्म को मानव कल्याण के सामान्य रूप से परिभाषित आयामों के लिए प्रासंगिकता के रूप में देखा जा सकता है। चार महान सत्य और महान अष्टांगिक मार्ग स्थिरता के साथ अच्छी तरह से संबंधित हैं जो कल्याण की ओर ले जाते हैं। महान सत्य का पहला और दूसरा दो दुख और अस्थिरता के कारणों के बारे में बताता है जबकि तीसरा और आखिरी चार महान सत्य प्रभाव या कल्याण प्राप्त करने के तरीके के बारे में बताते हैं। बौद्ध धर्म में भलाई पर जोर दिया गया है, जिसे नैतिक प्रेरणा से प्रेरित माना जाता है जो व्यक्ति और समूह को कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता है, जिससे समाज में कोई आंदोलन न हो। इस पत्र में बौद्ध धर्म और विज्ञान पर विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द– बौद्ध धर्म; मानव; विज्ञान; कल्याण।

परिचय

बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जो ईश्वर या किसी अलौकिक रचनाकार के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है। बुद्ध स्वयं ऐसे विषयों की चर्चा के विरोधी थे। बुद्ध ने अपने अंतिम संदेश में अपने शिष्यों को स्वयं की शरण लेने की सलाह दी। कलाम सूत्र में बुद्ध ने अपने शिष्यों से तर्कवादी दृष्टिकोण रखने और बिना सत्यापन के किसी भी चीज पर विश्वास नहीं करने के लिए कहा। इस अर्थ में बौद्ध धर्म कोई धर्म नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक तरीका है। बौद्ध धर्म की सच्ची भावना तर्कवाद और स्वतंत्र सोच की है। इससे विश्व के बुद्धिजीवी प्रभावित हैं। बौद्ध धर्म एक धर्म से अधिक आचार संहिता है। बुद्ध ने इसे सिला (बौद्ध उपदेश) कहा है जिसके आधार पर लोग अपना जीवन शांति और खुशी से जी सकते हैं। जब तक मनुष्य इस संसार में है तब तक एक ईमानदार और सदाचारी जीवन का मूल्य कम नहीं हो सकता। साथ ही, बौद्ध धर्मग्रंथ पर्यावरणीय मूल्यों के बारे में बुद्ध की सलाह से भरे हुए हैं और ये मठवासी और जीवन शैली पर लागू होते हैं। बौद्ध धर्म प्रेम और करुणा पर आधारित है। बुद्ध ने अपने शिष्यों को अच्छे और खुशी के लिए चारों ओर बिखरने के लिए कहा। वर्तमान 21वीं सदी में, बुद्ध की शिक्षाएं अभी भी बौद्धों और गैर–बौद्धों को दुनिया को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। वैश्विक समाज में बौद्ध धर्म का इसके विभिन्न रूपों में बढ़ता प्रभाव है। 21वीं सदी ने एक जीवंत और विकसित आंदोलन को जन्म दिया है, विशेष रूप से पश्चिम में, जिसे सामाजिक रूप से संलग्न बौद्ध धर्म या चौथा यान कहा जाता है, जिसकी जड़ें श्रीलंका और थाईलैंड जैसे पारंपरिक बौद्ध देशों में हैं।[1] बौद्ध दृष्टिकोण से, मन अस्तित्व में सब कुछ का अग्रदूत और स्रोत है, और बौद्ध धर्म को शब्द के पारंपरिक अर्थों में धर्म के बजाय एक नैतिक–मनोवैज्ञानिक प्रणाली के रूप में सबसे अच्छा वर्णित किया गया है।[2] आधुनिक दुनिया में बौद्ध धर्म की एक विशेष भूमिका है क्योंकि कई अन्य धार्मिक परंपराओं के विपरीत, बौद्ध धर्म विशिष्ट रूप से स्वतंत्रता की अवधारणा को प्रतिपादित करता है जो आधुनिक विज्ञान की मौलिक धारणाओं के साथ निकटता से मेल खाता है। बौद्ध धर्म को तीन मुख्य श्रेणियों – दर्शन, विज्ञान और धर्म की संज्ञा दी जा सकती है। धार्मिक भाग में ऐसे सिद्धांत और प्रथाएं शामिल हैं जो अकेले बौद्ध धर्म से संबंधित हैं, लेकिन अन्यान्याश्रितता के बौद्ध दर्शन के साथ–साथ बुद्ध के मन और मानवीय भावनाओं के विज्ञान से सभी को बहुत लाभ होता है।[3] जैसे–जैसे पश्चिम में बौद्ध धर्म अधिक प्रभावशाली होता जाता है, कई अभ्यासी, शिक्षाविद और कार्यकर्ता ग्रह की रक्षा और भेदभाव को मिटाने के लिए हमारे समय के दो सबसे जरूरी और महत्वपूर्ण मुद्दों के जवाब के लिए बौद्ध धर्म की ओर देखते हैं।

बौद्ध धर्म, पर्यावरणवाद, पारिस्थितिक आंदोलन और नारीवाद बहुत अंतःविषय कार्य का विषय रहा है। बौद्ध दर्शन, नैतिकता और इसकी ध्यान

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87463 7d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:13:20 +05'30'

2021-22, Sl. No.-08

ISSN 0973-3914

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer- Reviewed Research Journal

UGC Journal No. (Old) 40942
Impact Factor 5.125 (IIFS)
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory © ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205

Centre for Research Studies
REWA (M.P.)

2022

www.researchjournal.in

अंक 37 हिन्दी संस्करण वर्ष - 19 जुलाई-दिसम्बर 2022

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:13:49 +05'30'

जिनसे जीवन-यात्रा सुचारू रूप से संचालित होती है। परिवार और समाज में स्थायित्व के लिए दोनों की ही भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण रही है। किसी समाज में परिवर्तन और विकास का आधार पुरूषों और महिलाओं के पारस्परिक मेल-जोल, कदम से कदम मिलाकर चलने और दोनों की समान गतिशीलता पर ही निर्भर है। किसी भी एक पक्ष के पिछड़ने पर सामाजिक जीवन में अराजक स्थिति निर्मित होती है। मानव जाति का इतिहास इसका साक्षी है कि जहाँ महिलाओं की उपेक्षा की गई है, वहाँ समाज का विकास अवरूद्ध हुआ है। सृष्टि की रचना, बच्चों की शिक्षा, परिवार की परवरिश के रूप में महिला की भूमिका पुरूष से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होने से समाज रचना में उसकी स्थिति केन्द्रीय हो जाती है। अतः स्त्रियों की उन्नति के बिना मानव जाति और समाज का उत्थान नहीं हो सकता। जहाँ तक भारत का संबंध है "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ महिलाओं की पूजा होती है। वहां देवताओं का वास होता है। इस आदर्श के साथ कोई भी भारतीय स्त्री पश्चिमी स्त्री की तुलना में गौरव का अनुभव कर सकती है। विद्या का आदर्श सरस्वती में,धन का आदर्श लक्ष्मी में, पराक्रम का आदर्श दुर्गा में, पवित्रता का आदर्श गंगा में, यहाँ तक कि सृष्टि सृजन का आदर्श जगद् जननी के रूप में हमें केवल भारत में ही देखने को मिलता है।

(डॉ. अखिलेश शुक्ल)
प्रधान सम्पादक

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87463 7d81a7f738b832c087135dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:15:34 +05'30'

अनुक्रमणिका

01	वीर सावरकर: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अविस्मरणीय चरित्र **अरुण श्रीवास्तव**	09
02	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखंड की महिलाओं का योगदान **राजेश चन्द्र पालीवाल**	15
03	डॉ. लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तन: रामायण मेला योजना के विशेष सन्दर्भ में **सुधा गुप्ता**	20
04	महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना का समाजशास्त्रीय अध्ययन (आगरा जिले के पिनाहट विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में) **भूरी सिंह, अतुल कुमार**	25
05	भारतीय जीवन में शिवोपासना का धार्मिक महत्व **अशुतोष शुक्ल**	30
06	महात्मा गाँधी : महिला विकास के प्रति दृष्टिकोण **सीमा श्रीवास्तव**	39
07	महिला नेतृत्व के सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण (रीवा जिले की पंचायतों के विशेष संदर्भ में एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन) **कोमल पांडे, अखिलेश शुक्ल**	44
08	महिला अपराधिता पुनर्वास एवं जेल व्यवस्था **गजानन मिश्र**	53
09	घरेलू हिंसा: वर्तमान समय की गहन समस्या व समाधान **अलका रानी**	60
10	भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण **विन्ध्याचल साह**	66
11	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ **सिद्धार्थ मिश्र**	78
12	वैश्वीकरण का सामाजिक- आर्थिक प्रभाव **अजय सिंह गहरवार, अवनीश सिंह, महानन्द द्विवेदी**	82
13	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में स्टार्टअप योजना **संगीता कुँभारे**	92
14	स्टार्ट अप योजना एवं पिछड़े वर्ग की महिलाओं का सशक्तिकरण:एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **कृष्ण कुमार पटेल, एस.एम.मिश्रा**	101
15	सतना जिले में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की समस्या एवं समाधान **गायत्री देवी, आर. पी. गुप्ता**	108
16	मध्यप्रदेश में कृषि विकास की संभावनाएं एवं चुनौतियां	115

UGC Journal No. (Old) 40942,
Peer- Reviewed Research Journal
Impact Factor 5.125 (IIFS) ISSN 0973-3914
Vol.- 37, Hindi Edition, Year-19, July - Dec. 2022

भारतीय अर्थव्यवस्था और वर्तमान आर्थिक चुनौतियाँ: एक विश्लेषण

• बिन्ध्याचल साह

सारांश- कोरोना महामारी और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित हुई है। इससे खाद्यान्नों, ईंधनों, रसायनिक उर्वरकों और गैस की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि हुई है, जिसके कारण पूरे विश्व में मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ रही है। साथ ही, अनिश्चितता के कारण विनिमय दर अस्थिर हो गया है। केंद्रीय बैंक अपने मुख्य दरों को मुद्रास्फीति नियंत्रित करने के लिए लगातार बढ़ाते जा रहे हैं। इससे आमजन प्रभावित हो रहे हैं। भारत में भी इसका गंभीर असर देखने को मिल रहा है। भारत में खुदरा मुद्रास्फीति लगातार 6 प्रतिशत के ऊपर बनी हुई है। इससे निपटने के लिए केंद्रीय बैंक रेपो रेट को बढ़ाते हुए 6.25 प्रतिशत तक पहुंच गया है। इससे एक ओर जहां कर्ज महंगा हुआ है। और निजी निवेश हतोत्साहित हो रहा है, वहीं दूसरी ओर, अर्थव्यवस्था में गिरावट दर्ज की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 2022 के लिए भारत का विकास दर 7.4 प्रतिशत से घटाकर 6.8 प्रतिशत कर दिया है। आज भारतीय अर्थव्यवस्था अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इसमें बढ़ती मुद्रास्फीति, घटता विदेशी मुद्रा भंडार, बढ़ता व्यापार घाटा, चालू-खाता घाटा एवं राजकोषीय घाटा, रुपए का मूल्य-ह्रास, बढ़ती बेरोजगारी आदि प्रमुख हैं।

मुख्य शब्द - मुद्रास्फीति, खाद्य-श्रृंखला, मूल्य-ह्रास, विदेशी मुद्रा-भंडार, चालू खाता-घाटा, विनिमय-दर

प्रस्तावना- वैश्वीकरण के कारण सभी देश एक-दूसरे के साथ जुड़ गए हैं। विश्व में कहीं भी कोई हलचल होती है, तो इसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ता है, चाहे वह युद्ध हो, महामारी हो या फिर कोई आर्थिक या प्राकृतिक घटना। विगत दिनों हमने इसे देखा और महसूस किया है। कोविड महामारी से जब पूरी दुनिया परेशान थी, तो इससे निपटने के लिए बृहद पैमाने पर लॉकडाउन को अपनाया गया, जिससे आर्थिक गतिविधियां ठप्प पड़ गई और आयात-निर्यात बाधित होने से पूरा विश्व मंदी की चपेट में आ गया। कोरोना महामारी के प्रभाव से विश्व अभी बाहर निकल ही रहा था कि रूस-यूक्रेन में युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध के कारण पूरी दुनियाँ में ईंधन, गैस और खाद्यान्नों की कीमतों में आग लगी

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dcd3fe6f4cbcdb2cffb108834, 2.5.4.20=2c4e8ba3a0d7b2e4a4d0f1f5e7726c266e3c7c2b9e4e4d01f1f5e8f4a8, serialNumber=e0babd3a8974037d81a7f738b832c0871395dfaf37e6f69d853c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:16:02 +05'30'
BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

हो चुका है तो कई देशों (नेपाल, बंग्लादेश, फ्रांस, जर्मनी आदि) में आम जनता सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन कर रही है। मुख्यत: आपूर्ति श्रृंखला के बाधित होने से सभी देशों में घरेलू कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं। इससे निपटने के लिए वहां के केंद्रीय बैंक लगातार अपने मुख्य दरों को बढ़ा रहे हैं। इससे लोगों की क्रय-क्षमता निरंतर गिर रही है, निजी निवेश हतोत्साहित हो रहा है और उद्योग-धंधों के वृद्धि दर पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। कुल मिलाकर पूरे विश्व का ग्रोथ रेट गिर रहा है। भारत का भी जीडीपी वृद्धि दर निरंतर गिर रहा है। अंतरांष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, रेटिंग एजेंसियां और शोध संस्थान भारत के विकास दर को निरंतर घटाते जा रहे हैं। भारत की चुनौतियां अलग तरह की हैं। हम एक विकासशील अर्थव्यवस्था वाले विशाल और विश्व में दूसरे नंबर की जनसंख्या वाला देश है। देश में अभी भी गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भाग्यवादिता और अंधविश्वास विद्यमान है। देश में जन्म-दर एवं मृत्यु-दर अधिक है। बचत-दर, पूंजी-निर्माण दर और निवेश-दर विकसित देशों की अपेक्षा बहुत ही कम है। देश में उद्यमिता, नई तकनीक और शोध का अभाव है। अभी भी हम पूंजी और तकनीक के लिए विकसित देशों पर निर्भर है। मानसून की अनिश्चितता, कृषि क्षेत्र के माध्यम से एक बड़ी आबादी और राष्ट्र को प्रभावित करती है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मानकों और सूचकांकों में हम बहुत पीछे हैं। इस स्थिति में वैश्विक अनिश्चितता, प्राकृतिक आपदाओं, वर्चस्व के लिए राष्ट्रों के बीच संघर्षों, वैश्विक आर्थिक घटनाओं एवं निर्णयों का असर हमारी विकासशील अर्थव्यवस्था पर तीव्रता से पड़ रहा है। वर्तमान वैश्विक घटनाक्रमों और अन्यान्य कारणों से भारतीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। हमारी मुद्रा का निरंतर मूल्यह्रास होता जा रहा है। इससे निपटने के लिए केंद्रीय बैंक डॉलर को बाजार में बेच रहा है। साथ ही, बढ़ती घरेलू मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए रेपो रेट को बढ़ाते जा रहा है। इसका असर पूंजी की मांग, निवेश और आर्थिक गतिविधियों पर पड़ रहा है। अमेरिका के केंद्रीय बैंक द्वारा फेड दरों को लगातार बढ़ाने के कारण डॉलर निरंतर मजबूत और आकर्षक विकल्प बनता जा रहा है, जिससे विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक अपने निवेश को भारी मात्रा में निकाल कर ले जा रहे हैं। इससे विदेशी मुद्रा भंडार (डॉलर) निरंतर कम होते जा रहा है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अवरोध के कारण देश के आयात-निर्यात में असंतुलित वृद्धि होने से व्यापार-घाटा, चालू खाता-घाटा और राजकोषीय घाटा निरंतर बढ़ रहा है। सरकार इससे निपटने के लिए भारी मात्रा में कर्ज ले रही है और विनिवेश को बढ़ावा दे रही है। देश में बढ़ती आबादी, गुणवत्तापूर्ण व्यवसायिक शिक्षा, उद्यमिता, पूंजी निवेश, नवन्मेष; शोध आदि की कमी, सरकारी उदासीनता एवं संकल्प हीनता तथा उचित नियोजन एवं प्रबंधन के अभाव के कारण बेरोजगारी की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। विकसित भारत और मजबूत भारत बनने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए हमें पूरी रणनीति, कार्य-योजना एवं संकल्प के साथ उपरोक्त चुनौतियों से निपटना और आगे बढ़ना होगा।

2021-22, Sl. No.-06

Dalton Transactions

ROYAL SOCIETY OF CHEMISTRY

PAPER

View Article Online
View Journal

Check for updates

Cite this: DOI: 10.1039/d1dt02018h

Coupling 6-chloro-3-methyluracil with copper: structural features, theoretical analysis, and biofunctional properties†

Brajesh Kumar,[a] Tushar Das,[a] Subhadeep Das,[b] Waldemar Maniukiewicz,[c] Dmytro S. Nesterov,[d] Alexander M. Kirillov[*d,e] and Subrata Das[*a]

As nucleobases in RNA and DNA, uracil and 5-methyluracil represent a recognized class of bioactive molecules and versatile ligands for coordination compounds with various biofunctional properties. In this study, 6-chloro-3-methyluracil (Hcmu) was used as an unexplored building block for the self-assembly generation of a new bioactive copper(II) complex, $[Cu(cmu)_2(H_2O)_2]\cdot 4H_2O$ (**1**). This compound was isolated as a stable crystalline solid and fully characterized in solution and solid state by a variety of spectroscopic methods (UV-vis, EPR, fluorescence spectroscopy), cyclic voltammetry, X-ray diffraction, and DFT calculations. The structural, topological, H-bonding, and Hirshfeld surface features of **1** were also analyzed in detail. The compound **1** shows a distorted octahedral (CuN_2O_4) coordination environment with two *trans* cmu^- ligands adopting a bidentate N,O-coordination mode. The monocopper(II) molecular units participate in strong H-bonding interactions with water molecules of crystallization, leading to structural 0D → 3D extension into a 3D H-bonded network with a **tfz-d** topology. Molecular docking and ADME analysis as well as antibacterial and antioxidant activity studies were performed to assess the bioactivity of **1**. In particular, this compound exhibits a prominent antibacterial effect against Gram negative (*E. coli*, *P. aeruginosa*) and positive (*S. aureus*, *B. cereus*) bacteria. The obtained copper(II) complex also represents the first structurally characterized coordination compound derived from 6-chloro-3-methyluracil, thus introducing this bioactive building block into a family of uracil metal complexes with notable biofunctional properties.

Received 17th June 2021,
Accepted 2nd September 2021

DOI: 10.1039/d1dt02018h

rsc.li/dalton

Introduction

The coordination compounds incorporating heterocyclic ligands are broadly used in crystal engineering, supramolecular chemistry, and material and biological sciences.[1] Among these, chelating complexes of biomimicking heterocycles such as uracil and derivatives attract a special attention.[2] As nucleobases, uracil in RNA and 5-methyluracil in DNA exhibit a diverse range of biological activity, thus motivating the design of uracil based bioscaffolds.[3,4] The interactive binding between a compound or a protein with DNA or RNA often occurs with an involvement of metal ions, thus providing a clear motivation for the synthesis and investigation of uracil-based coordination compounds with potential biological and medicinal significance.[5,6]

In addition, uracil derivatives bear several hydrogen bond donor and acceptor sites, which drive diverse non-covalent interactions.[7] Different types of structurally characterized[8] metal complexes with ligands bearing an uracil core were reported.[9–12] Within this family, uracil could act as a monodentate (N1/N3), bidentate (N1 and O1), tridentate (N1, N3, and O4), or tetradentate (N1, O2, N3, and O4) ligand. Earlier we described the self-assembly synthesis of new coordination compounds of nitrosopyrimidine.[13] It was also observed that the halogenated derivatives of uracil may exhibit interesting bioactivity.[14]

Hence, in the present study, we selected 6-choro-3-methyluracil (Hcmu) as a virtually unexplored building block that can

[a]Department of Chemistry, National Institute of Technology Patna, Ashok Rajpath, Patna 800005, India. E-mail: subratadas@nitp.ac.in
[b]Department of Life Science and Biotechnology, Jadavpur University, 188 Raja S.C. Mallick Rd, Kolkata 700032, India
[c]Institute of General and Ecological Chemistry, Lodz University of Technology, Żeromskiego 116, Łódź, Poland
[d]Centro de Química Estrutural and Departamento de Engenharia Química, Instituto Superior Técnico, Universidade de Lisboa, Av. Rovisco Pais, 1049-001 Lisbon, Portugal. E-mail: kirillov@tecnico.ulisboa.pt
[e]Research Institute of Chemistry, Peoples' Friendship University of Russia (RUDN University), 6 Miklukho-Maklaya st., Moscow, 117198, Russian Federation

†Electronic supplementary information (ESI) available: Fig. S1–S23, Tables S1–S14, and Listings S1–S9 with additional experimental data and details. CCDC 2080093. For ESI and crystallographic data in CIF or other electronic format see DOI: 10.1039/d1dt02018h.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c488ba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:16:20 +05'30'

Chemical Data Collections 35 (2021) 100750

Contents lists available at ScienceDirect

Chemical Data Collections

journal homepage: www.elsevier.com/locate/cdc

Data Article

1,3-Dimethylvioluric acid as a colorimetric chemosensor for the selective detection of Fe^{3+} metal ion in aqueous medium

Brajesh Kumar, Subrata Das *

Department of Chemistry, National Institute of Technology Patna, Patna, India

ARTICLE INFO

Keywords:
1,3-Dimethylvioluric acid
UV-vis spectroscopy
Benesi-Hildebrand plot
LOD & LOQ value
Colorimetric chemosensor

ABSTRACT

We have reported the synthesis, solvatochromic and metal sensing properties of 1,3-dimethylvioluric acid (DMVA). The DMVA shows a colour change from colourless to a blue colour with the addition of Fe^{3+} metal ion. The structural properties and binding modes of DMVA and it's Fe^{3+} complex is studied at different pH using UV vis spectroscopy. The cyclic voltammetry of Fe^{3+}-DMVA complex shows reversibility in nature. The binding constant value as obtained by plotting Benesi–Hildebrand DMVA with Fe^{3+} cation found is to be $1.5736 \times 10^3\ M^{-1}$. Job's plot behavior of DMVA with Fe^{3+} cation shows binding at 3:1 molar stoichiometry. The LOD & LOQ values for DMVA with Fe^{3+} cations are found to be 66.9349 nM and 202.8356 nM, respectively. The LOD value is very promising and able to detect the Fe^{3+} is a very low concentration as compared to earlier reported.

Specifications Table [please fill in right-hand column of the table below]

Subject area	*Spectroscopy, Sensing*
Compounds	*1,3-dimethylvioluric acid*
Data category	*Spectral, Synthesized*
Data acquisition format:	*NMR, FTIR, Mass spectra, UV-vis, Fluorescence, Cyclic voltammetry*
Data type	*Raw, filtered, analyzed, figures, images and table presentation.*
Procedure	*1,3-Dimethyl-6-aminouracil is synthesized by warming equivalent wt. of 1,3-dimethylurea, cyanoacetic acid, and acetic anhydride at 60°C for 3 hours in the absence of humidity. Sodium hydroxide solution is steadily applied to the cooled, agitated residue, yet the precipitate of 1,3-dimethyl-6-aminouracil. After this, chilled solution of sodium nitrite in water are added and acidified over 1 hour by acetic acid. The red-violet product of 1,3-dimethyl-5-nitroso-6-aminouracil is precipitated out. Finally, acidic reflux of 1,3 dimethyl-5-nitroso-6-aminouracil with HCl results in the formation of DMVA. The DMVA acid is crystalline in room temp. with one water molecule having crystal system monoclinic and space group P21/n. The metal sensing experiments are performed by dissolving the DMVA in methanol. The association constant can be calculated using the Benesi-Hilderbrand equation. The binding constant, LOD and LOQ value is calculated using job's plot and related reported equations.*
Data accessibility	*Data is with this article is presented in graphical, images and table form.*

* Corresponding author.
E-mail address: subratacorphera@gmail.com (S. Das).

https://doi.org/10.1016/j.cdc.2021.100750
Received 11 March 2021; Received in revised form 9 June 2021; Accepted 4 July 2021
Available online 6 July 2021
2405-8300/© 2021 Elsevier B.V. All rights reserved.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d1782 6c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c0871 3f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:16:41 +05'30'

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान पटना
National Institute of Technology Patna

Sl. No. 003255

अभिषद् की अनुशंसा पर

ब्रजेश कुमार

को निर्धारित अर्हताएँ सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर

विद्या वाचस्पति

रसायन विज्ञान

की उपाधि आज दिनांक २४ दिसम्बर २०२२ को प्रदान की गई।

शोध प्रबन्ध शीर्षक: सिन्थेसिस, स्ट्रक्चर एन्ड स्पेक्ट्रोस्कोपिक एनालिसिस ऑफ कम्प्लेक्सेज विथ बायोरिएक्टिव पाइरिमिडीन डेरिवेटिव्स

On the recommendation of the senate

BRAJESH KUMAR

having successfully completed the prescribed requirements of

Doctor of Philosophy

Chemistry

is being awarded the Degree on this day of 24th of December 2022.

Thesis Title: Synthesis, Structure and Spectroscopic Analysis of Metal Complexes With Bioactive Pyrimidine Derivatives

निदेशक एवं अध्यक्ष, सीनेट
Director & Chairman, Senate

अध्यक्ष, प्रबंधक-मंडल
Chairman Board of Governors

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:17:01 +05'30'

2021-22, Sl. No.-14

Registration No. V-36244/2008-09 ISSN :- 2350-0611

The journal has been listed in 'UGC Approved List of Journals' with Journal No. – 48441 in previous list of UGC

JIFE Impact Factor – 3.23

Research Highlights

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Referred Research Journal

Editor
Dr. Kamlesh Kumar Singh
Assistant Professor
Gaya Prasad Smarak Govt. P.G. College
Azamgarh

Volume - IX No. - 4 (Oct. – Dec. 2022)

Published by
Future Fact Society
Varanasi (U.P.) India

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:17:20 +05'30'

CONTENTS

"Research Highlights"

➲	The State of Education in India in 20th Century: Education under a Post-Welfare State ***Prem Singh Choudhary*** ***Mahendra Somarwal***	01-05
➲	Africa India Maritime Collaboration in the Western Indian Ocean ***Dr. Nidhi***	06-16
➲	Patterns of NOTA Voting in Uttar Pradesh Assembly Elections 2022 ***Sukanshika Vatsa***	17-20
➲	Impact of the COVID-19 pandemic on Indian Economy ***Ravi Kant***	21-23
➲	Life Experiences and Depression ***Dr. Sarika Pandey***	24-28
➲	Relationship between Parenting Style and Anxiety among Female Adolescents ***Prof. Rajendra Prasad Singh***	29-33
➲	Role of Educational Portals in Development of E- Learning and Online Learning ***R. P. Bharatiya*** ***Dr. L. Prasad***	34-42
➲	Heavy Metal Pollution Monitoring of Sarya River in Chapra (Bihar) ***Akhtar Parwez*** ***Dr. Md. Jamaluddin***	43-48
➲	Mahesh Dattani's Thirty Days in September: A Play about Silence and Betrayal ***Dr. Pinki Kumari***	49-53
➲		

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:17:40 +05'30'

Mahesh Dattani's *Thirty Days in September:* A Play about Silence and Betrayal

Dr. Pinki Kumari*

Abstract

Mahesh Dattani's Thirty Days in September, a play about silence and betrayal, treats the sensitive and generally taboo issue of child sexual abuse. The play endeavors to lift the veil of silence which surrounds child sexual abuse and addresses the issue unflinchingly. The play is described as "a silent scream ... on the issue of sexual abuse". Dattani's much acclaimed play, Thirty Days in September was organized on 7th April 2006 at FICCI Auditorium. Child sexual abuse is a heinous crime prevailing in the society. The play aimed to sensitize the masses about this issue. In the play, the focus is on an interior kind of story, with a lot of happenings inside the minds of the characters. Dattani personally feels that it is a kind of progression in his writing. The style is more sub-textual than overt text. Dattani personally went to Delhi to research the play; visited and spoke to eight incest and child sexual abuse survivors for about a week. With intense interviews, they came out with their stories talking about what had happened to them, which was also a kind of therapy. His plays capture the pulse of urban audience by reflecting the problem of its day. However, the problem that Dattani has handled skillfully in the play is related to all the classes of society. He has rightly mentioned that the audience needs to arrive at the "moment of truth". He has successfully created a world-view by focusing the issue of child sexual abuse.

Key Words: Silence, Betrayal, Sexual abuse, Lecherous, Hypocrite, Frozen.

Introduction

One of the most obvious and most commented aspects of Dattani's plays is the questioning of dominant gender roles. He has managed to bring into centre-stage certain issues of marginalized identities as well as aspects of hegemony and chauvinism present in our daily lives.

Dattani feels that *Thirty Days in September* is his most severe play till date, contravening his usual design. The seriousness has to keep going throughout the play. It is by far the most melancholy of all his plays, with a weightiness that is maintained throughout the play. Given the seriousness of the problem that it addresses a malaise that can at no level be taken lightly, Dattani tackles it with raw emotion and the stark realities are dramatized vividly. *Thirty Days in September* is a stage play in three acts.

The play is entirely Mala's story and Dattani uses very little sub-plot, dealing with the memories of the molester, visualizing him, and confronting those terrifying moments that will leave the spectator feeling sickened to the core. The play centres on a mother, Sharta and her daughter, Mala who was sexually molested by her uncle, Vinay, while young. The plot, however, is rooted in this very milieu, the final system that betrays the individual - a child called Mala - who will carry these scars into adulthood, and never trust it

* Assistant Professor (G.T.), Department of English, B.R.B. College, Samastipur, L.N.M. University, Darbhanga

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:18:03 +05'30'

CLASSIC REPRINT SERIES

2021-22, Sl. No.-01

BENGAL, PAST AND PRESENT

Vol. 117, Issue: (IV) October - December 2021

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:27:11 +05'30'

by

Calcutta Historical Society

Forgotten Books

Contents

Sr. No.	Name of Topic	Page No.
152	IMPLEMENTATION OF NEP-2020 GUIDELINES TO MAHARASHTRA	720-723
153	FROM CLASSICAL TO PROTOTYPES- A RELATIVE STUDY OF THREE MAHISHAASURMARDINI SCULPTURES OF GOA	724-727
154	ANALYTICAL METHOD DEVELOPMENT AND METHOD VALIDATION FOR DETERMINATION OF THE ELEMENTAL IMPURITIES IN NISOLDIPINE TABLETS BY INDUCTIVELY COUPLED PLASMA MASS SPECTROMETERY (ICP-MS)	728-736
155	CONCENTRATION OF FRUIT FARMING IN SOLAPUR DISTRICT WITH SPECIAL REFERENCE TO GRAPEVINE CULTIVATION	737-739
156	STUDY OF THE PERFORMING FOLK THEATRE IN MAHARASHTRA	740-741
157	THE PROMOTER OF LEGISLATIVE THOUGHT - GOPAL KRISHNA GOKHALE	742-745
158	ASSESSMENT OF WATER POLLUTION THROUGH QUALITY ANALYSIS: A CASE STUDY OF ERNAKULAM CITY	746-752
159	PHILOSOPHY IN ART: REFLECTIONS OF IDEAS ON TEMPLE SCULPTURES	753-761
160	HELAVAS: THE LIVING TRADITION OF ORAL HISTORY	762-765
161	DEVELOPMENT CONTESTATIONS AND MIGRANT POPULATION TEA PLANTATION ECONOMY IN WEST BENGAL, INDIA	766-773
162	IMPACT OF ENVIRONMENTAL STRESSORS ON HEALTH OF ADVOCATES WITH SPECIAL REFERENCE TO SOLAPUR DISTRICT	774-779
163	TRIBAL WOMEN, STRUCTURAL VIOLENCE AND DEVELOPMENT- A CASE STUDY OF A TEA GARDEN, INDIA	780-787

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:27:39 +05'30'

UGC Care Group 1 Journal
ISSN:0005-8807

ASSESSMENT OF WATER POLLUTION THROUGH QUALITY ANALYSIS: A CASE STUDY OF ERNAKULAM CITY

Dr. Ullas T
Assistant professor, Department of Geography
Bali Ram Bhagat College, Samastipur, Bihar.

Introduction

Water covers about 70.87 per cent of our earth, surface. In nature, water is present in three forms: the atmospheric moisture, precipitation and soil water. The precipitation or rain fall is the major source of soil moisture. The main water resources are the oceans, lakes, streams, rivers, ponds and springs. It is a universal solvent which contains several essential minerals and gases on which life depends. Thus water is very essential components for the survival of all living organisms. However, today water resources have been the most exploited natural system since man strode the earth. Thus water bodies are polluted increasingly due to rapid population growth, industrial proliferations, urbanisation, increasing living standards and wide spheres of human activities.

We can define water pollution as the alteration in physical, chemical and biological characteristics of water which may be cause harmful effects on human and aquatic biota. Water pollution is a phenomenon that is characterised by the deterioration of the quality of land water or sea water as a result of various human activities (Jat and Mathur, 2007).

Dozens of times a day those of us who live in the industrialised nations of the world enjoy a blessing denied to 75 per cent of the world population: abundant supplies of clean water. But water is essential for life in earth. No known organisms can live without it. For centuries water has been used as a dumping ground for human sewage and industrial wastes (Rana, 2006). While many of the chemicals and substances that are regulated may be naturally occurring the concentration is often the key in determining what is a natural component of water, and what is a contamination. Many of the chemical substances are toxic. Pathogens can produce waterborne diseases in either human or animal hosts. Alteration of waters physical chemistry includes acidity, electrical conductivity, temperature and eutrophication. Eutrophication is the fertilisation of surface water by nutrients that were previously scarce. Water pollution is a major problem in the global context. It has been suggested that it is the leading worldwide cause of deaths and diseases and that it accounts for the deaths of more than 14000 people daily (Raju, 2009).

Study area

Ernakulam city is the largest urban agglomeration in Kerala, and it is classified as B-1 grade city by Government of India, making it the highest graded city in Kerala. The civic body governing the Ernakulam city is the Corporation of Cochin. Ernakulam city is facing major water contamination problems due to rapid industrialisation, commercialisation, unplanned growth of settlements, increase heaps of garbage as well as improper management of solid waste. Many works have already been conducted in water quality of urban areas on big cities of India and only little attention has been given to smaller cities. So, a city level study of water quality analysis is very important.

Database and methodology

The study is mainly based on secondary sources of data obtained from published and unpublished records from concerned agencies and institution like, Centre for Earth Science Studies (CESS) Thiruvananthapuram, Municipal Corporation of Cochin, Kerala State Pollution Control Board (KSPCB) Ernakulam, Central Ground Water Board Thiruvananthapuram, State Ground Water Board Ernakulam, Central Pollution Control Board (CPCB) New Delhi, Health Department Corporation of Cochin, Kerala State Water Authority Aluva, Greater Cochin Development Authority (GCDA) Ernakulam, Jawaharlal Nehru National Urban Renewal Mission (JNNURM) Ernakulam,District Information Centre Ernakulam, District Educational Office Ernakulam. The analysis of surface water quality Chitrapuzha river station at Irumpanam, Oil tanker jetty at Wellington Island and underground water quality well at Vytilla were taken to collect the water samples. The data was use to analyse the physico-chemical, bacteriological and metal content during the period 2007 to 2012.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.24 17:27:58 +05'30'

2018-19, Sl. No.-07

PNI No. UPHIN / 2012 / 45466

ISSN 2456-8775

जनवरी - मार्च 2019

इस अंक का मूल्य 50/- प्रति

शीतल वाणी

साहित्य की शीतलता और
जीवन की जीवंतता का मंत्र

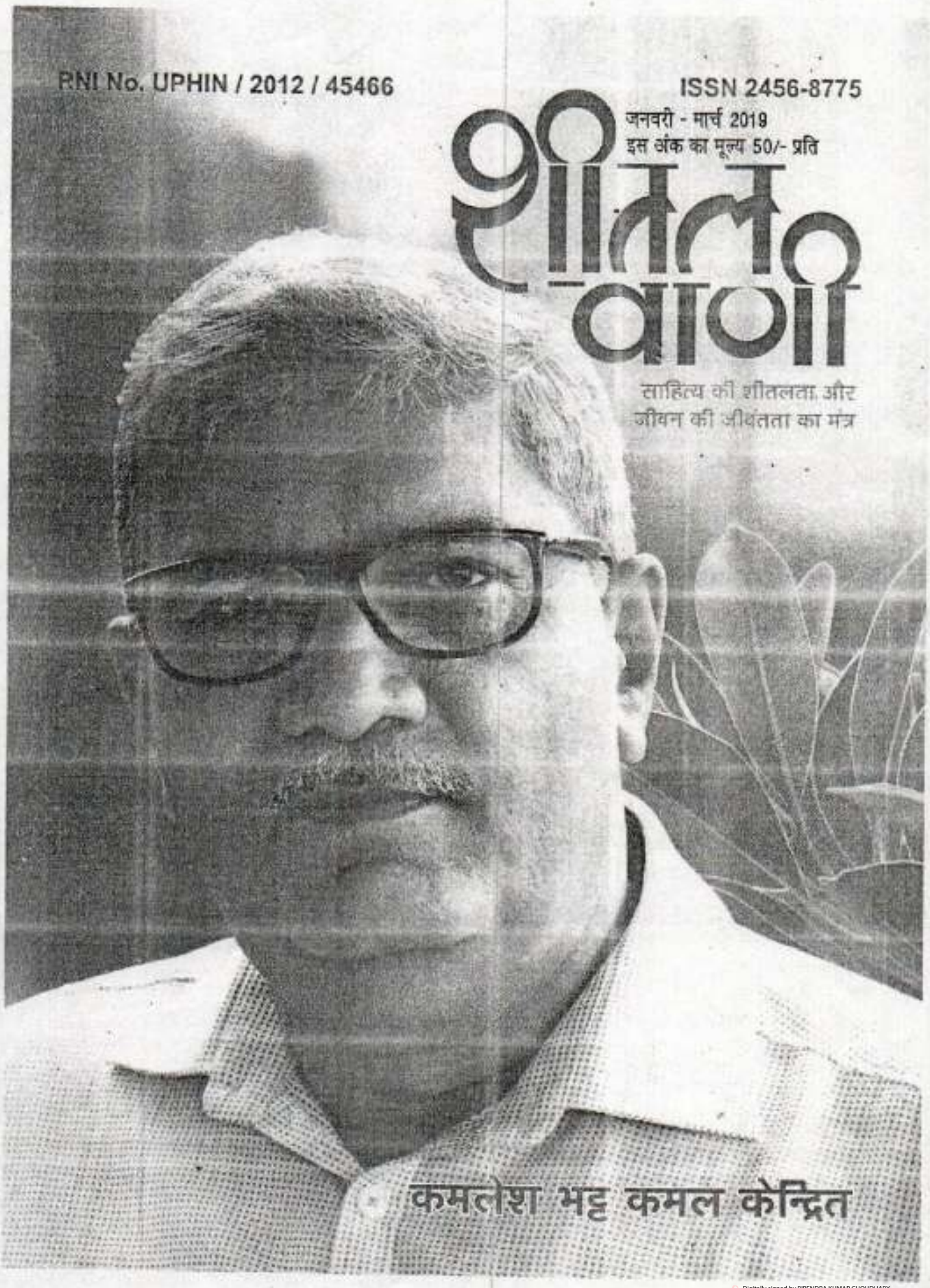

कमलेश भट्ट कमल केन्द्रित

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:35:44 +05'30'

शोध आलेख

ISSN 2456-8775

डॉ. पूनम कुमारी -त्रिपुरा विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी (स्वर्ण पदक प्राप्त) तथा इसी विश्वविद्यालय से "समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री जीवन 1990-2000" विषय पर पी.एच.डी। त्रिपुरा दूरदर्शन केन्द्र से अनेक साहित्यिक वार्ताएँ प्रसारित, अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर शोध प्रकाशित तथा महिला सशक्तिकरण व समाज से जुड़े अनेक ज्वलंत मुद्दों पर निरंतर लेखन और अनेक सेमिनारों में सक्रिय हिस्सेदारी।

संपर्कः क्वाटर नं. 508, टाइप-3, आई सी ब्लॉक, सेन्ट्रल गवर्नमेंट डवरस पूल अकोमोडेशन कोलकाता-700106 मो.: 7001856694

भारतीय समाज में स्त्री के आर्थिक सरोकार

• डॉ. पूनम कुमारी

कष्ट के सहन की एक सीमा होती है। नारी की सहनशीलता भी अपनी चरमसीमा लांघ चुकी है, उसे अपने होने का एहसास हो गया है। उसने अपनी परवशता, बंधन, पतन और शोषण के प्रति विद्रोह किया। घर का आँगन छोड़कर चौराहे पर आई और अपने अधिकारों की माँग करने लगी। समाज के तंज तोड़ना के बावजूद भी वह कमजोर नहीं हुई। घर के साथ बाहर के काम का भार और उत्तरदायित्व संभालते हुए आज की काम-काजी नारी यन्त्रवत् हो गयी। आर्थिक मुक्ति का दूसरा उपाय भी तो नहीं है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी विभिन्न क्षेत्रों में बाहर आई है। नारी में विभिन्न क्षेत्र शैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि में काम किया है। ऑफिस, कॉलेज, फैक्ट्री, व्यवसाय आदि विभिन्न अंग में सम्बन्ध का नया रूप उभरकर आया है। इन सब में नारी को विभिन्न मनःस्थितियों के मध्य से गुजरना पड़ा है। आर्थिक स्वावलंबन का नारी के व्यक्तित्व पर दोहरा प्रभाव पड़ा है। एक ओर उसका निजी व्यक्तित्व प्रभावित हुआ है तो दूसरी ओर पारिवारिक सम्बन्ध पर भी प्रभाव पड़ा है। वैचारिक भिन्नता, शैक्षणिक अन्तर, आय की समानता, कार्य क्षेत्र में अन्तर के कारण परिवार में पति-पत्नी के संबंध में बदलाव एवं विघटन हुआ है। आज ऐसी नारियाँ भी है जो परिवार से अलग रहती हैं और अर्थोपार्जन करती हैं। किसी भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक जीवन का आधार वहाँ की आर्थिक व्यवस्था होती है। जिस प्रकार समाज में व्यक्ति के स्थान का निर्णय उसकी आर्थिक स्थिति से किया जाता है। उसी प्रकार अन्तराष्ट्रीय क्षेत्रों में किसी राष्ट्र की स्थिति उसे अपने आर्थिक विकास पर निर्भर करती है। भारतीय अर्थव्यवस्था का एक स्तम्भ कृषि एवं खेत खलिहान में काम करने वाले मजदूर भी है। इस विषय को स्पष्ट करते हुए डॉ ज्ञान अस्थाना लिखते हैं "हमारा देश कृषि प्रधान देश रहा है। कृषि एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें परिवार के स्त्री-पुरुष दोनों को काम करना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि पुरुषों के कार्य में स्त्रियों का बराबरी से सहयोग देना हमारे देश के लिए नयी बात नहीं है। पश्चिमी सभ्यता और शिक्षा ने हमारी सुप्त चेतना को झकझोरा और नारी में अपना घूँघट हटाकर पैर की जंजीरों को तोड़ खुले आसमान के नीचे आजादी से साँस ली। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी की समुचित प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। फिर भी आज की नारी की वास्तविक स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती।" [1] वर्गीय चेतना संपन्न दृष्टि से स्त्री के आर्थिक स्थिति पर विचार करते हुए लेखक आगे लिखते हैं "प्रत्येक वर्ग की नारी आज भी इस पुरुष प्रधान समाज के शोषण का शिकार हो रही है। खन्दक और खाई में कार्य करने वाली अथवा ईंट, गारा ढोने वाली स्त्री को पुरुष से कम मजदूरी दी जाती है। समानाधिकारों की यह विडम्बना पूर्ण स्थिति है। मध्य वर्ग में पहले यह लिखने की आवश्यकता ही नहीं समझी जाती, अपितु यह धारणा थी कि पढ़ लिखकर लड़कियाँ घर-गृहस्थी के काम नहीं कर सकती हैं। अनवरत संघर्ष ने इस धारणा को बदल दिया है कि पढ़ी लिखी स्त्रियाँ, परिवार, शिशु पालन, अतिथि सत्कार एवं स्वच्छता आदि में अशिक्षित स्त्री से अधिक कुशल है। लेकिन पुरुषवर्ग अभी-भी अपनी तानाशाही का स्वभाव नहीं छोड़ सका। पत्नी या बेटी के बाहर काम करके आर्थिक सहायता देने के बाद भी वह उनसे घर परिवार के उन सारे कामों को करने की इच्छा करती थी। पूछा जा सकता है कि यह गृहस्थी और बच्चों से क्या उस पुरुष का कोई संबंध नहीं

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:36:28 +05'30'

International Journal of Research and Analytical Reviews

An open Access, Peer Reviewed, Refereed, Indexed, online and printed International Research Journal

Approved by UGC
Journal No. 43602

E ISSN 2348-1269
Print ISSN 2349-5138
Impact Factor 5.75

Certificate of Publication

This is to certify that Prof. / Dr. डॉ. पूनम कुमारी had contributed a paper as author / co-author to

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

Impact Factor 5.75

COSMOS Impact Factor 4.236

Title स्त्री अस्मिता : मुक्तिकामी सपने

and has got published in volume 6, Issue 1, Jan. – March, 2019.

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the Intellectual Contribution of the author / co-author.

Executive Editor **Editor in Chief** **Member Editorial Board**

Self attested
Poonam Kumari

2018-19, Sl. No.-08

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=Personal, pseudonym=1f5c7a5c5d9e4dcc0dbcc0f6108b5d, 2.5.4.20=3c2c2f8b6ccb3a0c7c7bc0a0fc2c9b6a1c7b2c2c3c3c3

[VOLUME 6 | ISSUE 1 | JAN. – MARCH 2019]
http://ijrar.com/

e ISSN 2348 –1269, Print ISSN 2349-5138
Cosmos Impact Factor 4.236

स्त्री अस्मिता : मुक्तिकामी संघर्ष

डॉ पूनम कुमारी
एम.ए. हिंदी (स्वर्ण पदक प्राप्त)
पी.एच.डी

Received: January 17, 2019 Accepted: March 06, 2019

मुक्ति की कामना प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक कामना होती है । अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र होना आवश्यक है । स्वतंत्र का अर्थ केवल आजादी नहीं बल्कि एक जीवन मूल्य है । इसीलिए जब कभी व्यवस्था व्यक्ति का शोषण कर उसे गुलाम बनाने का प्रयत्न करती है तब उस व्यवस्था से मुक्ति के लिए संघर्ष प्रारंभ होता है । विश्व में नारी मुक्ति के संघर्ष का इतिहास उतना ही पुराना है जितना नारी के शोषण का इतिहास । नारीवादी आंदोलन का प्रारंभ पश्चिम से हुआ जिसका प्रभाव भारत पर पड़ा । नारी के अधिकारों के प्रति चेतना पहले पश्चिम में दिखाई दिया । नारी मुक्ति के संबंध में इरफाना बरद ने कहा है :–

" नारी मुक्ति से मेरा मतलब तो यही है कि उन्हें समान शिक्षा और काम करने की आजादी दे, उन्हें समान अधिकार मिले जिसके तहत वे अपने परिवार का और पूरे समाज का विकास कर सके ।" '1

नारी अपने आपको सामर्थ और सबल बनाकर ही अपने अधिकार अर्जित कर सकती है । इसी बारे में मोहन कृष्ण बोहरा ने तसलीमा के विचारों को व्यक्त करते हुए लिखा है–"वस्तुतः तसलीमा का विरोध पुरुष जाती से नहीं है विरोध है पुरुष की उस सामंती मनोवृत्ति से जो नारी को दासी से अधिक का दर्जा नहीं देती है ।" '2 इससे यह स्पष्ट है कि नारी का मुक्ति संघर्ष पुरुष विरोधी आंदोलन न होकर यह उस व्यवस्था विरोधी आंदोलन से है जिसमें नारी का शोषण किया जाता है ।

प्राचीन भारतीय संस्कृति सनन्वयवादी संस्कृति रही है जिसके कारण यहाँ व्यक्तिवाद की अपेक्षा परिवार को अधिक महत्व दिया जाता रहा है । परिवार में नारी सूत्रधार होने के कारण वैदिक संस्कृति के प्रारंभिक काल में उसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है लेकिन उत्तर वैदिक काल में नारी की स्थिति में गिरावट आती गयी और नारी का स्थान गौण होता गया । नारी मुक्ति का संघर्ष यहीं से आरंभ हुआ । वैसे भारतीय स्त्री का मुक्ति संघर्ष कहाँ से शुरू होता है, इसके कुछ निश्चित प्रमाण नहीं मिलते । लेकिन एक बात निश्चित है कि हमारे यहाँ नारी मुक्ति का अर्थ, पश्चिम के अर्थ में पुरुषों की सत्ता से मुक्ति कभी नहीं रहा । भारतीय नारी का मुक्ति संघर्ष पश्चिम नारी के मुक्ति संघर्ष से भिन्न है ।

आशारानी वोरा के अनुसार–"हमारे यहाँ का नारी मुक्ति संघर्ष पश्चिम के नारी मुक्ति आंदोलन से एकदम भिन्न है । यहाँ स्त्रियों ने लगभग एक सदी की लंबी अवधि तक अपनी मुक्ति की लड़ाई पुरुषों से उनके विरुद्ध खड़ी होकर और अपमान झेलकर लड़ी । भारत में यह लड़ाई विदेशी दासता व प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध एक साथ लड़ी गई । जिसमें स्त्री पुरुष प्रतिद्वन्दी नहीं सहयोगी थे । पुरुष इसमें पहले कर्ता व प्रेरक रहे ।" '3 इसलिए स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के लिए सबसे पहले पुरुषों ने ही कोशिश किया ।

आधुनिक काल में नारी का मुक्ति संघर्ष 19वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ । ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज तथा थियोसोफिकल सोसायटी के कारण नारी–उत्थान को प्रमुख स्थान मिला । उनके द्वारा सुधारवादी आंदोलन चलाए गए राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया । ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने पाराशर संहिता का आधार लेकर विधवा विवाह का समर्थन किया और यह सिद्ध किया कि विधवा विवाह शास्त्र सम्मत है । इसी के परिणामस्वरूप विधवा कानून बनाया गया । दयानंद सरस्वती ने समान शिक्षा और समान अधिकारों की बात सिद्ध की । विवेकानन्द, तिलक, दलपत राय आदि ने भी नारी उत्थान के कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

भारत में स्त्री आंदोलन की असली शुरूआत 19वीं सदी के आखिरी दशकों में हुई जब पंडिता रमाबाई, रमाबाई रानडे, आनंदीबाई जोशी जैसी महिलाएँ अपने घरों में पुरुष प्रधान समाज द्वारा थोपे गये बंधनों को तोड़कर ऊँची शिक्षा के लिए विदेश गयी और लौटकर उन्होंने भारत में स्त्रियों के आंदोलन को आगे बढ़ाया । पहली बार स्त्रियों ने स्वतंत्र संगठन कायम किया । 1886 में स्वर्ण कुमारी देवी ने 'लेडीज एसोसिएशन' स्थापित किया । 1892 में पंडिता रमाबाई ने स्त्रियों के लिए पुना में (शारदा सदन खोला)। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा और रोजगार के लिए प्रयत्न किए, बाल विवाह, विधवा विवाह पर व्याख्यान दिए जिसके कारण उनको अनेक विरोध सहना पड़ा । रमाबाई के समान ही ब्लावत्सकी, मार्गरेट कोजिन्स एनी बेसेंट और मीराबेन जैसी कुछ विदेशी महिलाओं द्वारा भारत में नारी जागरण का कार्य किया गया । 1917 में मद्रास में श्रीमती मार्गरेट कजिन्स ने 'इंडियन वुमेन एसोसिएशन' की स्थापना की और महिलाओं के संगठित कर उनकी गतिविधियाँ संचालित की । ब्लावत्सकी ने 'थियोसोफिकल सोसायटी' की स्थापना की जिसका नेतृत्व श्रीमती एनीबेसेंट ने किया । एनीबेसेंट ने भारत में खुलकर नारी–जागृति का बीड़ा उठाया । 1917 में श्रीमती सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं का एक डिपुटेशन मंडल 'सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया' को मिला और महिलाओं के लिए मताधिकार की माँग की । 1921 में बंबई तथा मद्रास में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ । 1925 में सरोजिनी नायडू भारतीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनी । वह प्रथम भारतीय महिला थी जो इस पद पर आसीन हुई । 1926 में स्त्रियों ने चुनाव में भाग लिया और 1927 में अनेक महिलाएँ विधान सभा की सदस्य बनी ।

1927 में 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' नामक गैर राजनीतिक संगठन की स्थापना हुई । इस संगठन का मुख्य काम महिलाओं का सामाजिक और वैधानिक स्थिति को सुधारना था । 1929 में बाल–विवाह निरोध अधिनियम पास हुआ जो महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार के क्षेत्र में एक नया मोड़ था ।

नारी–मुक्ति संघर्ष में महात्मा गाँधी का योगदान महत्वपूर्ण है । उन्होंने अपने आश्रम में तथा अपने सभी कार्यक्रमों में स्त्रियों को पुरुषों के समान ही प्रत्येक काम में भाग लेने के लिए समान दर्जा प्रदान किया था । इसलिए, स्त्रियों ने गाँधीजी के साथ स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया । 1930 में गाँधी जी का नमक सत्याग्रह आंदोलन में सैकड़ों महिलाओं ने भाग लिया । मुम्बई में सैकड़ों स्त्रियाँ नमक–कानून तोड़ने के लिए समुद्र तट पर पहुँची, जिसके परिणामस्वरूप अनेक महिलाओं की गिरफ्तारी हुई । महात्मा गाँधी के गिरफ्तारी के बाद श्रीमती सरोजनी नायडू, कमला देवी चट्टोपाध्याय और रुक्मिणी नायडू ने संभाला । 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में स्त्रियों ने भाग लिया । पुरुषों और स्त्रियों के सहयोग से ही 1947 में भारत आजाद हुआ और 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ । संविधान में यह व्यवस्था की गई कि बिना किसी भेदभाव के स्त्रियों को समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए । नारी मुक्ति आंदोलन के कारण ही नारियों को यह सफलता मिली । डॉ० नीला रजवार के अनुसार–"नारी ने यह अनुभव किया कि पति भक्ति और परिवार ही उसकी सीमा नहीं है वरन् समाज, देश, जाति और समाज के विकास कार्यों में भी उसका सहयोग अपेक्षित है" ।'5

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d9e4fe4cbc6db2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=edbabd5af874637d81a7f738b832c08713f5dfa157e0f69dd83c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:37:44 +05'30'

Vol.-23 No.- 3-2020 2019-20,Sl. No.-05 RNI No. -46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-23-संख्या- 3-2020

Refereed, Peer Reviewed Quarterly Journal Approved by UGC CARE

कला एवं धर्म शोध संस्थान,
लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी

कला सरोवर

KALA SAROVAR

(भारतीय कला एवं संस्कृति की विशिष्ट शोध पत्रिका)

प्रधान सम्पादक

डॉ० प्रेमशंकर द्विवेदी

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff61083d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2de42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf57e0969d8f5c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:38:08 +05'30'

(Vol. 23-No.-3-2020) RNI No- 46269/87 ISSN-0975-4520 वर्ष-23-संख्या-3-2020

विषयानुक्रमणिका

क्रम	पृष्ठ सं.
सम्पादक की कलम से	iii-iv
भारतीय चित्रकला में दुर्गा डॉ0 प्रेमशंकर द्विवेदी	5-12
श्री राधाचरण गोस्वामी जी का हिन्दी भाषा में योगदान डॉ0 अम्बिका उपाध्याय	13-16
रंगरामानुजाचार्य की रचनाओं में भक्ति-दर्शन पुष्पांजलि रंजन	17-20
शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकार शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन राम किशन पाल, डॉ0 अखिलेश कुमार श्रीवास्तव	21-25
Customary Law in the Hoary Past of India *Dr. Devendra Kumar*	26-30
A Study of Reaction of Parents towards Right to Education Act-2009 in Uttar Pradesh *Sunil Kumar, Prof. S.N. Singh*	31-38
Impact of Inductive Thinking Model and ICT based Teaching on Concept Formation Ability of Class IX Commerce Students *Megha Gangwar , Prof. S. N. Singh*	39-45
Test Anxiety: A Comparative study *Dr. Preeti Manani*	46-50
विज्ञापन में स्त्री की अश्लील छवि का मनोवैज्ञानिक प्रभाव डॉ0 पूरणमल मीणा, शिवा भारती	51-54
आत्म-सम्मत्ययः एक लघु समीक्षात्मक अध्ययन डॉ0 नलिनी मिश्रा , रफ़त फातिमा	55-62
इतिहास लेखन की चुनौतियाँ और विस्मृत अध्याय महिला लेखन के सन्दर्भ में डॉ0 सपना गुप्ता	63-69
Innovative Methods of Teaching Yoga : Design & Development of Yoga Materials Series-III *Manish Kumar, Poonam Panwar & Paran Gowda*	70-76
निराला की माषिक-योजना अनूप कुमार सिंह	77-80
प्राचीन भारतीय साहित्य एवं समाज में नारी डॉ0 इन्द्रदेव प्रसाद यादव	81-84
भारतीय साहित्य में हनुमान चरित का माहात्म्य पिन्की कुमारी	85-88
पहाड़ी चित्रकला में भावाभिव्यंजन डॉ0 मनीष कुमार द्विवेदी	89-94

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff61083d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:38:48 +05'30'

नये भारत में गाँधी के गाँव और पत्रकारिता 95-103
डॉ0 नागेन्द्र कुमार सिंह

कोरोना महामारी के दौरान प्रसारित फेक न्यूज का विश्लेषणात्मक अध्ययन 104-108
डॉ0 अख़्तर आलम, रंजीत कुमार

साम संगीत की शास्त्रीय अवधारणा 109-112
डॉ0 संगीता घोष

भारत में वृद्धजनों की समस्याएँ : एक सैद्धान्तिक व्याख्या 113-117
रन्जू सिंह

दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों की उच्चशिक्षा में बाधक तत्व एवं सुझाव 118-125
सौरभ राय, डॉ0 आद्याशक्ति राय

"अंधेरे में" : एक विराट स्वप्न फैंटेसी 126-128
डॉ0 पूनम कुमारी

Yoga for Improving Physical And Mental Health During Pandemic (Covid-19) 129-134
Tilak Raj Gaur

Treatment of Cultural Consciousness and Identity in Revolution 2020 : Love.Corruption. Ambition of Chetan Bhagat 135-141
Naresh Kumar, Dr. Savita Ahuja, Dr.Rabir Parashar

Non-Performing Assets: A comparative analysis of Public and Private Sector Banks in India 142-145
Rajnish Kumar, Prof J K Tandon

Pastoralism on crossroads: Review from Jammu & Kashmir perspective 146-150
Hilal Ahmad War

Use of Social Networking Sites and its Impact on Younger Adolescence 151-155
Dr. Sapna Kashyap

"A Study on the Impact of Women's Self-Help Group (SHG) and its Contribution to their Socio-Economic Development" (with special reference to Nainital district of Uttarakhand) 156-165
Dr. Snigdha Rawat

"Contribution of Kalamukha Vachanakara Siddharama to the Karnataka Culture and Society 166-171
Dr. Uma Devi

Embodiments of the enchanting mountains 172-175
Pushkar Singh Bisht

Dietary Pattern and Clinical Nutritional Survey of the Children Suffering from Encephalitis (With special reference to Muzaffarpur district) 176-182
Priyanka Kumari, Dr.Sangeeta Rani

Garlic and its Multifunctional Medicinal Properties: An Overview 183-186
Dr. Pallavi Dixit

महात्मा गाँधी की शिक्षा-योजना 187-191
डॉ0 मानसी पाण्डेय

सामी के काव्य में माया का स्वरूप 192-195
श्रीमती पुष्पा कोहवानी

व्यक्ति एवं समाज के सर्वांगीण विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका 196-202
डॉ0 माधुरी पाण्डेय

पुस्तक-समीक्षा 203-204

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1fse7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d1782 6c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c0871 3f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:39:13 +05'30'

''अधेरे में'' : एक विराट स्वप्न फैंटेसी

★ डॉ0 पूनम कुमारी

'चाँद का मुँह टेढा है' संकलन मे संकलित 'अंधेरे मे' कविता मुक्तिबोध की एक महत्वपूर्ण कृति है। इस कविता में कवि ने स्वतंत्र भारत के आम जनता के आत्मसंघर्ष की कहानी को चित्रित किया है। समता, समरसता एवं सदभावना के लिए जो आजादी की लडाई लड़ी गयी थी, वह 'अंधेरे में' आकर मिल गयी।जिन लोगों ने अपनी जान पर खेलकर आजादी दिलाई, वे ही स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में पंगु और नपुंसक बनकर अंधेरे की स्याही में डूब गये। यह अंधेरा भ्रष्टाचार, अन्याय और अत्याचार का अंधेरा है जिसमें पत्रकार, कवि, लेखक, विद्वान, मंत्री, उधोगपति, अपराधकर्मी आदि शामिल हैं। इस कविता में संघर्ष दोनों स्तरों पर घटित हुआ है – एक तो व्यक्ति मन, दूसरे सामाजिक भूमिका पर। इसमे मध्यमवर्ग के उस आदमी के आत्म-संघर्ष को शब्दबध्द किया गया है जो एक ओर तो सामाजिक अव्यवस्था और विकृतियों के विरुद्ध क्रांति छेड़ता है और दूसरी ओर अपनी सुविधाओं को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। वास्तव में यह एक साथ ही 'रक्तालोकस्नात' पुरुष बनने का आकांक्षी भी है और दूसरी वह डरता भी है। आदमी के एक साथ दो जगहों पर हाजिरी देने की यह कोशिश उसे द्वन्द की स्थिति में ले आती है। यही द्वन्द अंधेरे मे कविता का मूल कथ्य है।

यह कविता आठ खण्डों में विभक्त है। सभी खण्ड एक-दूसरे से भिन्न है पर किसी न किसी रुप में किसी-न- किसी सूत्र से जूडे रहते हैं। 'अंधेरे में' कविता फैंटेसी के सहारे वस्तु स्थिति का वर्णन करते हुये प्रारंभ होती है। जिंदगी के अंधेरे कमरों में कोई लगातार चक्कर लगाता रहता है। जिसके पैरों की आवाज सुनायी देती है किन्तु वह दिखाई नहीं देता।

यह कविता दो व्यक्ति चरित्रों में विभक्त हैं एक है, काव्य नायक मैं और दूसरा है, उसका प्रतिरुप 'वह' है। कविता का आरम्भ इस तिलिस्मी खोह के रहस्यमय दृश्य से होता है जो अपने प्रभाव में काफी नाटकीय है।

''अकस्मात् गिरते हैं भीत से
फूले हुए पलस्तर
गिरती है चूनी भरी रेत
सिसकती हैं पपड़ियाँ इस तरह''
''खुद-ब-खुद
कोई बड़ा चेहरा बन जाता है, स्वयंमयि
मुख बन जाता है दिवाल पर,
नुकीली नाक और भव्य ललाट है, दृढ़ हनु।''*[1]

प्रश्न उठता है 'कौन मनु' ? और इस प्रश्न के साथ ही जैसे काव्य-नायक प्रकट होता है उसे याद आता है कि यह रहस्यमय व्यक्ति वही है, जो कभी शहर के बाहर पहाड़ी के उस पार तालाब के सलिल के तम-श्याम शीशे में कुहरीली श्वेत आकृति के रुप में प्रकट हुआ था, और फिर थोड़ी देर बाद लाल –लाल कुहरे में से एक रक्तालोक-स्नात पुरुष के रुप में निकला हुआ देखा था। रात के अंधेरे में बन्द दरवाजे की साँकल खटखटानेवाला पुरुष शायद वही है।

इस कविता में दो रक्तालोक स्नात पुरुष है। पहला वह जो जिन्दगी के अंधेरे कमरों में चक्कर लगा रहा है और दूसरा वह जो बाहर तालाब की लहरों मे अपना चेहरा देखता हुआ अंदर आने के लिए सांकल बजा रहा है। मुक्तिबोध ने इस 'रक्तालोक स्नात पुरुष' के प्रतीक के माध्यम से सामाजिकता

★ सहायक प्राध्यापिका (अतिथि) बी0आर0बी0 कॉलेज समस्तीपुर (बिहार)।

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:39:44 +05'30'

ISSN 2277 - 7083

आधुनिक

Sahitya

2021-22, Sl. No.-10

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved Care Listed Journal

वर्ष/Year-11 अंक/Vol.-41 द्विभाषी/Bilingual

जनवरी – मार्च / Jan. - Mar. 2022

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:40:13 +05'30'

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

अनुक्रम

संपादकीय

- डॉ॰ आशीष कंधवे / राष्ट्रीय दृष्टिकोण और संतुलित शासन के मंत्र / 8

कथा-संसार

- डॉ. गिरधारी लाल लोधी / एक दान...महाविद्यालय के नाम / 15
- मनीष कुमार सिंह / अंधेरे की परछाईयाँ / 19

चिंतन-मंथन

- कोमल / राम की शक्ति पूजा और आज / 24

आलेख

- डॉ. अनीता यादव / सुरेंद्र वर्मा के एकांकी नाटकों में स्त्री स्वातंत्र्य की छटपटाहट / 28

शोध-संसार

- डॉ. आर.के. पाण्डेय एवं कल्पना सिदार / आदिवासी समाज की संस्कृति का स्वरूप / 31
- डॉ. आलोक प्रभात / कुँवर नारायण की मिथकीय चेतना / 34
- डॉ. कल्पना मिश्रा एवं कु. चिंकी यादव / गोविन्द मिश्र के उपन्यास 'पाँच आँगनों वाला घर' में सामाजिक परिदृश्य / 37
- डॉ. (श्रीमती) सविता मिश्रा एवं अन्तिमा गुप्ता / चित्रा मुद्गल की 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' उपन्यास में तृतीयलिंगी समाज की मार्मिक दास्तान / 41
- डॉ. ऋता दीक्षित / ज़हीर कुरैशी की हिन्दी-ग़ज़लों का मूलस्वर / 46
- डॉ. साधना / रामकाव्य परम्परा और अभिनन्द कृत रामचरित / 51
- प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल एवं कु. कुसुम / संजीव बख्शी के भूलनकांदा उपन्यास में ग्रामीण संवेदना / 56
- डॉ. (श्रीमती) शैल शर्मा एवं ज्योतिबाला साहू / छत्तीसगढ़ी लोक-जीवन में रामधुनी की प्रासंगिकता / 59
- प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल एवं कुमारी महेश्वरी पात्रे / भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन / 63
- डॉ. आर.के. पाण्डेय एवं चोवाराम यदु / गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में अभिव्यक्त विश्वबंधुत्व और मानवतावाद / 67
- डॉ. (श्रीमती) सविता मिश्रा एवं मिनेश्वरी / साकेत में उर्मिला का चारित्रिक वैशिष्ट्य / 74
- डॉ. स्वामीराम बंजारे एवं शैलेन्द्र कुमार साहू / छत्तीसगढ़ के रचनाकारों के नवगीतों में पर्यावरण चेतना / 78
- डॉ. कल्पना मिश्रा एवं सीमा मिश्रा / सत्यभामा आडिल की लम्बी कविताओं में गांधी दर्शन / 83
- स्नेहा कुमारी / 'कुरुक्षेत्र' की वर्तमान संदर्भों में प्रासंगिकता / 88
- डॉ. हितेश कुमार एवं शंकर लाल कुँजाम / छत्तीसगढ़ की अस्मिताः जनभाषा छत्तीसगढ़ी / 91
- डॉ. अजीत कुमार पुरी / नई कविता की सामाजिक पृष्ठभूमि / 98
- डॉ. सत्य प्रकाश तिवारी / जिद्दू कृष्णमूर्ति के दर्शन में मूल्य मीमांसा / 102
- विजय सिंह एवं डॉ. गुड्डी बिष्ट पंवार / शेखर जोशी की कहानियों में चित्रित पर्वतीय समाज / 106
- विवेकानन्द उपाध्याय / मध्यवर्गीय कहानीकार- अमरकांत / 115

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066fc88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e00abd3a1874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:40:42 +05'30'

- सीमा देवी / गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व उत्थान में रत्ना की भूमिका / 118
- मोहन लाल / आदिवासी- विमर्श के दृष्टिकोण से हिन्दी फिल्म 'न्यूटन' / 121
- श्रीमती नायराह कुरैशी / हिंदी का वैश्विक परिप्रेक्ष्य / 127
- डॉ. दीपा शर्मा / पुरुषों के प्रति घरेलू हिंसा : पीड़ित पुरुषों के विशेष सन्दर्भ में व्यक्तिगत अध्ययन / 130
- बबीता चौहान एवं डॉ. तबस्सुम खान / हंस संपादक राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्ग व भारत की स्थिति / 135
- कुंवर पाल सिंह एवं प्रोफेसर शांति नयाल / भारतीय आयोगों में अध्यापक शिक्षा से संबंधित दिये गये सुझावों का समालोचनात्मक अध्ययन / 140
- डॉ. नवनाथ गाड़ेकर / मराठी से हिंदी में अनूदित संत गोरा कुम्हार के अभंगो में विठ्ठल भक्ति / 145
- डॉ. पूनम कुमारी / समाज का दंश झेलती विधवा नारी / 150
- डॉ. सुधा शर्मा / उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में अस्तित्ववाद की गूँज / 154
- राजेश्वर कुमार / छायावाद और निराला का भारतबोध / 158

काव्य-कलश

- कमलेश / एक दीया समर्पित / 165
- डॉ. अरुण तिवारी गोपाल / गीत / 166
- समीर उपाध्याय / आगे बढ़ना ही है तो एवं शब्दोत्सव / 167
- अंकुर सिंह / सरस्वसती वंदना एवं शिव वंदना / 168
- अभय शुक्ला / गजल / 169
- नंदा पाण्डेय / गीली मिट्टी एवं मनरंगना / 170

पुस्तक-समीक्षा

- डॉ. रामनिवास 'मानव' / वर्तमान दौर की कथाएं कहती प्रियंका 'सौरभ' की कृति 'दीमक लगे गुलाब' / 171

ENGLISH SECTION

Research Article

- Ms. Desiree Ann. A, Dr. J. Minny & Dr. D. Dhanalakshmi / **Leaving, Loving and Yearning: Ifemelu's Zigzagging Emotions in Chimamanda Ngozi Adichie's *Americanah*** / 175
- V. Chandra and Dr. J. Dharageswari / **Animal World with Anthropomorphic Representation: A Study of R.K. Narayan's A Tiger for Malgudi** / 180
- D. Bhuvani and Dr. J. Dharageswari / **Eccentricities of New World -Bharati Mukherjee's Fictional Narrations: An Analysis of Refashioning Self** / 185
- Suriya R and Dr. T.S. Ramesh / **Chanakya's Hypothetical Sense of Transformation in David Malouf's *An Imaginary Life*** / 191
- Ms. Ethina and Dr T.S. Ramesh / **The Matter and Manner; From Flat Mediocrity to Sparkling Charm in Translation** / 195
- Ms. M. Charmaigne Owenita and Dr. V. Francis / **Racial Segregation in Bama's Vanmam** / 199
- Ms. K Manjula and Dr. Shymaladevi / **Political Ideas and Religious Beliefs in Girish Karnad's Tughlaq** / 205

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:41:12 +05'30'

समाज का दंश झेलती विधवा नारी

—डॉ. पूनम कुमारी

भारतीय समाज में नारी ही धर्म, संस्कृति और सभ्यता की रक्षक रही है। यह सूत्रधारक होने से स्त्री कहलाती है। धर्म और संस्कृति पर पड़ने वाले इस दबावों के कारण नारी की मानसिकता में बहुत बड़ा परिवर्तन आया जिसका परिणाम उसकी सोच और आचरण में दिखाई देता है। विधवा नारी का जीवन उस समय और भी अधिक पीड़ादायक हो जाता है जब उसके छोटी संतान हो और वह आर्थिक रूप से स्वाबलंबी न हो। उसकी नन्हीं मासूम बच्ची को भी पिता की मृत्यु का दोषी ठहराया जाता है। यह हमारे देश की लिए काफी चिंता का विषय है कि विधवा नारी के साथ उसके बच्चों को भी कलंकित किया जाता है। हमारे समाज की यह कैसी विडम्बना है कि आज भी विधवा नारी के हेय दृष्टि से देखा जाता है।

'यत्र' नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' कहा जाता है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है। वहाँ देवता निवास करते हैं लेकिन हमारे समाज में एक ओर स्त्री के विवाह के बाद ससुराल में कदम रखते ही उसे गृह लक्ष्मी कुलवधु आदि कई नाम देते हुए उसकी आरती उतारी जाती है वहीं दूसरी ओर पति के मञ्चत्यु के बाद उसे कुलक्षणी कहकर उसी घर में अपमान किया जाता है। जिस घर के लिए वो शुभ थी उसी घर में विधवा होने के बाद अशुभ के रूप में देखी जाती है। घर के किसी भी मांगलिक कार्य में उसे सामने नहीं आने दिया जाता है और उसका आशीर्वाद, आशीर्वाद न होकर शाप माना जाता है। आखिर क्यों ? इसमें उस विधवा नारी का कसूर क्या है। उसके साथ ये क्रूर अन्याय क्यों ? इसी सवाल में जवाब में हमें उस खोखली समाज से चाहिए जो धर्म के ठेकेदार हैं। जिसने ये परंपरा बनाई है। ये कैसी विडम्बना है। इस पर हमें पहल करनी चाहिए।

वैसे देखा जाए तो प्राचीन काल से ही विधवा नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय रही है। अलबरुनी के अनुसार-'यदि किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती है तो वह किसी दूसरे पुरुष से विवाह नहीं कर सकती। उसके सामने सिर्फ दो ही विकल्प रहते हैं या तो वे जीवित रहे या मृत पति के साथ जल मरें और बाद वाला रास्ते चुनना वे ज्यादा पसंद करती थी, क्योंकि विधवा जब तक जीवित रहती उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। इस नियम में अपवाद तभी किया जाता है जब विधवा की उम्र ज्यादा होती है और उन विधवाओं के मामले में जिन्हें छोटे बच्चे होते थे क्योंकि बच्चे माँ की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होते है।' अधिकांश स्त्रियाँ विधवा रह कर जीना पसंद नहीं करती थी क्योंकि विधवा की जिन्दगी मौत से भी बदतर होती थी। वे अपने बच्चे के सिवाय और सभी के लिए अशुभ मानी जाती थी। उसके चारों ओर उदासी ही उदासी छाई थी। वह पारिवारिक समारोहों में शामिल नहीं हो सकती थी। पति के मृत्यु के बाद उसकी पत्नी को सभी सांसारिक सुखों से वंचित

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7738b832c0871 3f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:41:46 +05'30'

ISSN 2277-5587
Impact Factor 4.705
Indexed in ULRICH, ISIFI, SJIF & DOJI
UGC Valid Journal (The Gazette of India
Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

शोध श्री

2020-21, Sl. No.-12

Issue - 4 October-December 2020 RNI No. RAJHIN/2011/40531

CHIEF EDITOR
Virendra Sharma

EDITOR
Dr. Ravindra Tailor

shodhshree@gmail.com
www.shodhshree.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266ea b1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7738b832c0871 3f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:42:21 +05'30'

Shodh Shree

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

Contents

Volume-37 **Issue-4** **Ocotber-December 2020**

1. **महिलाएँ एवं लैंगिक विषमता** 1-9
ममता गंगवार, हल्द्वानी एवं प्रो. आनन्द प्रकाश सिंह, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

2. **बहुश्रुत चिंतक एंव मौलिक रचनाकार : आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा** 10-16
डॉ. जयलक्ष्मी एफ. पाटील, धारवाड़ (कर्नाटक)

3. **ठा. केसरी सिंह बारहठ : आजादी के पुरोधा** 17-24
डॉ. दिनेश कुमार चारण, चूरू एवं डॉ. सुदर्शना बारेठ, लक्ष्मणगढ़

4. **शहरों में बढ़ रहा बाल-अपराध** 25-31
डॉ. रितिका सिंह, नैनीताल (उत्तराखंड)

5. **भारतीय उदारवाद और भारतीय पुनर्जागरणः विवेचना और विश्लेषण** 32-42
डॉ. अनुज कुमार मिश्रा, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

6. **भूमिदान पत्र ऐतिहासिक लेखन व सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में सहायकः आंध्रप्रदेश व कर्नाटक से प्राप्त भूमिदान पत्रों के विशेष संदर्भ में** 43-47
डॉ. रजनी शर्मा, किशनगढ

7. **'मन की बात का समाज पर प्रभाव' एक अध्ययन (भीमताल उत्तराखंड के विशेष संदर्भ में)** 48-53
हर्षवर्धन पाण्डे, नैनीताल (उत्तराखंड)

8. **मौर्यकाल में स्त्रियों की स्थिति** 54-58
डॉ. (श्रीमती) प्रेरणा माहेश्वरी, बीकानेर

9. **राष्ट्र की अवधारणा और भारतीय चिन्तन** 59-62
डॉ. संजीव कुमार लवानियाँ, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

10. **मध्यकालीन शिकार परम्परा : एक अध्ययन** 63-66
डॉ. प्रियदर्शी ओझा, उदयपुर

11. **प्राचीन भारत के गृहस्थ जीवन में स्त्री की स्थिति तथा भूमिका - एक विश्लेषण (धर्मसूत्रों के सन्दर्भ में 600-300 ई.पू.)** 67-72
शबाना, दिल्ली

12. **भारतीय राजनीति में नैतिक संकट एक मूल्यांकन** 73-75
डॉ. सोमवती शर्मा, कोटा

13. **स्वराज दल एवं सतपुड़ांचल** 76-79
डॉ. संकेत कुमार चौकसे, छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश)

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:42:55 +05'30'

14. मालाणी के सांस्कृतिक वैभव में लोकगीतों का योगदान — 80-83
डॉ. संतोष कुमार गड़वीर, बाड़मेर एवं तारा चौधरी, जोधपुर

15. वंशीधर शुक्ल के काव्य में व्यवस्था-विद्रोह — 84-88
डॉ. आभा शुक्ला, लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

16. ज्योतिषशास्त्र में जातक के तिथि निर्णय की अवधारणा — 89-92
डॉ. हरकेश बैरवा, कोटा

17. वर्त्तमान समय में पुलिस व्यवस्था की स्थिति : एक अध्ययन — 93-97
अंकित पाण्डेय, सिद्धार्थनगर (उत्तरप्रदेश)

18. गांधी और वैश्वीकरण के दौर में उनकी प्रासंगिकता : हिंद स्वराज के विशेष संदर्भ में — 98-102
डॉ. नरेन्द्र नाथ एवं जगदीश प्रसाद, बीकानेर

19. साहित्य सृजन में पंच तत्व और पर्यावरण — 103-108
डॉ. रंजन शर्मा, गुना (मध्यप्रदेश)

20. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगः एक संगठनात्मक अध्ययन — 109-113
डॉ. वंदना शर्मा, कोटा

21. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की बदलती भूमिकाः एक समीक्षा — 114-119
डॉ. सरस कपूर, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

22. भारत-नेपाल : एक-दूसरे के पूरक — 120-122
अनिल सरोवा, सीकर

23. स्वाधीनता समर में बुंदेलखंड (छतरपुर जिले के संदर्भ में) — 123-129
डॉ. चित्रगुप्त, झांसी (उत्तरप्रदेश) एवं श्री शत्रुघ्न कुमार खरे, चित्रकूट (मध्यप्रदेश)

24. 18 वीं सदी में नागौर एक प्रमुख व्यापारिक मार्ग के रूप में — 130-133
कामिनी, जोधपुर

25. भारत में पर्यटन उद्योग की दशा और दिशा — 134-139
सुनील भारती, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

26. इतिहास के पन्नों में फलौदी और हुमम्यूं (एक अध्ययन) — 140-142
दिनेश गहलोत, सोधार्थी, जोधपुर

27. भारत में जनजातीय समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवम् शैक्षणिक स्थिति — 143-145
डॉ. पूनम कुमारी, समस्तीपुर (बिहार)

28. योगमाहात्म्य — 146-149
मनजीत कंवर, जोधपुर

29. अर्वाचीन संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण चेतना — 150-152
डॉ. राजमल गालव एवं डॉ. उमा बड़ोलिया, कोटा

30. व्यंग्यायुध : मुहावरे-लोकोक्तियाँ — 153-161
डॉ. आशा पाण्डेय, दिल्ली

31. मध्यकालीन रेण नगर का स्थापत्य — 162-164
संजय सैन, जोधपुर

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:43:32 +05'30'

भारत में जनजातीय समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवम् शैक्षणिक स्थिति

डॉ. पूनम कुमारी
अतिथि शिक्षिका, बलिराज भगत महाविद्यालय, समस्तीपुर (बिहार)

शोध सारांश

किसी भी समाज की उन्नति एवं विकास के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा के अभाव में हम एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं कर सकते हैं। भारत एक विशाल देश है। जिसमें अनेक विविधताएँ हैं। आदिकाल से ही यह विभिन्न धर्मों, मतों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों, प्रजातियों, जनजातियों की कर्म भूमि रही है अधिकतर जनजातियाँ ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करती है जहाँ अभी भी सभ्यता का विकास नहीं हुआ है। भारतीय संविधान में उन वर्गों के उत्थान और कल्याण के लिए विशेष प्रावधान किये गये हैं जो सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े हुए है। सरल अर्थों में कहें तो जनजातियों का अपना एक वंशज, पूर्वज तथा सामान्य देवी देवता होते है। वे अमूमन प्रकृति पूजक होते हैं। भारतीय संविधान में जहाँ उन्हें अनुसूचित जनजाति कहा गया है तो दूसरी ओर उन्हें अन्य कई नामों से भी जाना जाता है जैसे- आदिवासी, आदिम जाति, वनवासी, प्रागैतिहासिक इत्यादि।

संकेताक्षर : *भारत, जनजातीय समुदाय, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति।*

जनजाति या आदिवासी का मूल अर्थ है-निवासी। डी.एन. मजूमदार ने "जनजाति को परिवार का संकलन कहा है जिसका अपना एक सामान्य नाम होता है जिसके सदस्य एक निश्चित भू-भाग पर रहते है, सामान्य भाषा बोलते हैं, विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते है तथा एक सुनियोजित आदान-प्रदान की व्यवसाय का विकास करते है। इस प्रकार आदिवासी कहने से एक ऐसे परिवार का बोध होता है, जिसकी अपनी भाषा, संस्कृति, एक सुनिश्चित भू-भाग होता है, जिसमें वे परम्परागत विधि-विधानों से परिपूर्ण स्वतन्त्र सुरक्षात्मक संगठन के जरिये अपने समाज का संचालन करने में समर्थ होते हैं।

आदिवासी जनजातियाँ भारत के लगभग सभी भागों में पायी जाती है। उत्तर में हिमालय की ऊँची चोटियाँ, भारत के मध्य में सतपुड़ा और विन्ध्याचल के हरे-भरे पर्वत, पश्चिम भारत में अरावली की पहाड़ियों और पूर्व के भारी वर्षा वाले सघन क्षेत्रो में आदिवासी जनजातियाँ रहती है। मूलतः आदिवासी शहरी सभ्यता को शहरीपन से दूर है। उनकी अपनी अलग संस्कृति है, अलग तरह की सभ्यता है। उनका जीवन रीति रिवाज और परम्परायें अलग तरह की है। उनके जीवन में गीत और नृत्य को बहुत महत्व दिया जाता है कठिनाईयाँ भरे अपने अभावपूर्ण जीवन को वे गीतों और नृत्यों के द्वारा सुखमय और मनोरंजन पूर्ण बना लेते है।

भारत में पाई जाने वाली विशेष जनजातियाँ

पूर्वोतर, मध्य, दक्षिण एवम् द्विपीय क्षेत्र : कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड तथा पूर्वोतर के सभी राज्य इस क्षेत्र में आते हैं। इन क्षेत्रों में बकरवाल, गुर्जर, थारु दूबसा, राजी,जौनसारी, शौका, भोटिया,गद्दी, किन्नौरी, खासी, जायंतिया, जमातिया, चकमा, रियांग, लेपचा, मुण्डा, भुटिया, लुसाई, कुकी, भील, संथाल, इत्यादि जनजातियाँ निवास करती है।

दक्षिण राजस्थान, आँध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा आदि राज्य इस क्षेत्र में आते है जहाँ भील, गोंड, रेड्डे, संथाल, हो, मुंडा, कोरवा, उँराव, कोल, बंजारा, मीणा, कोली आदि जनजातियाँ निवास करती है।

5587

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca113a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:44:06 +05'30'

2021-22, Sl. No.-11

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
December 2022
Vol.-16, Issue-6

Impact Factor
5.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal [The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018]

वर्तमान में श्रीमद्भागवत गीता की प्रासंगिकता

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. सुलक्षणा अहलावत

सम्पादक :
डॉ. नीरा सिन्हा, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:44:43 +05'30'

दिसम्बर 2022

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. सुलक्षणा अहलावत	10-10
2.	शुभकामना संदेश		11-11
3.	श्रीमद्भागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	12-15
4.	गीता के माध्यम से वैदिक, मध्य एवं वर्तमान युग में नारी-विमर्श	प्रतिमा कुमारी	16-21
5.	श्रीमद्भगवद्गीता में मानवीय धर्म की उपादेयता	कविता	22-25
6.	संस्कृति और सभ्यता में अंतर	सपना पाटोदिया	26-28
7.	गीता के जीवन-दर्शन के आलोक में संजीव के उपन्यास	धर्मेन्द्र कुमार	29-32
8.	वर्तमान में श्रीमद् भागवत गीता की प्रासंगिकता	अरविन्द कुमार	33-38
9.	गीता में लोकमंगल की भावना और वर्तमान संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता	सतीश कुमार भारद्वाज	39-44
10.	श्रीमद्भगवद्गीता की वर्तमान में प्रासंगिकता	सुरेन्द्र कुमार	45-48
11.	वर्तमान समय में श्री भागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ. अशोक कुमार द्विवेदी	49-55
12.	श्रीमद्भगवद्गीता : परिचय, महत्व एवं इसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता	डॉ. रमेश चन्द्र टांक	56-71
13.	राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का उदार रूप	डॉ. कृष्ण भगवान दुबे	72-74
14.	वर्तमान में श्रीमद्भागवत गीता की प्रासंगिकता	कु. रंजीता ठाकुर	75-82
15.	वर्तमान में युवाओं के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता	मनजीत, डॉ. धर्मबीर यादव	83-86
16.	गीता में जीवन दर्शन	पूजा	87-89
17.	श्रीमद्भगवद्गीता की वर्तमान में प्रासंगिकता	शमशेर सिंह	90-93
18.	वर्तमान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता	रीना कुमारी	94-99

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266ea b1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c087135dfaf37 e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:45:21 +05'30'

19.	वर्तमान में भगवद्गीता की प्रासंगिकता	Dr. B. Keshava Prapanna Pandey	100-104
20.	श्रीमद्भगवतगीता की साहित्यिक एवं मनोवैज्ञानिक समीक्षा	डॉ. आशा कुमारी, डॉ. राजेश	105–112
21.	श्रीमदभगवद् गीता की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	राज बाला, प्रोफेसर (डॉ. सुनीता सिंह)	113–117
22.	श्रीमद्भगवद्गीता में मानव-कल्याण की अभिव्यक्ति	चोवाराम यदु	118–122
23.	श्रीमद्भगवद्गीता और वर्तमान समय में इसकी प्रासङ्गिकता : एक विश्लेषण	डॉ. चन्द्रशेखर उपाध्याय	123–126
24.	वर्तमान में श्रीमदभागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ. पूनम कुमारी	127–130
25.	श्रीमद्भगवद्गीता और वर्तमान संदर्भ में स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता	अमनप्रीत	131–136
26.	Shreemad Bhagwat Geeta-A scripture for modern day management	Dr. Anju Rani	137-143
27.	वर्तमान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता	अशोक कुमार	144–150
28.	RELEVANCE OF BHAGAVAD GITA IN MODERN TIME	Dr. Arti Kumari	151-155
29.	श्रीमद्भागवतगीता में नर-नारायण आस्था	डॉ. नेहा प्रधान	156–159
30.	वर्तमान वैज्ञानिक युग में गीता की प्रासंगिकता	प्रो. मीठालाल मीना	160–163
31.	The Srimad Bhagavad Gita is the Messenger of Ethics and Values : A Review	Dr. Avijit Mandal	164-167
32.	गीता में स्थितप्रज्ञता व वर्तमान जीवन	डॉ. कमल बाई मीना	168–172
33.	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित ज्ञान-विज्ञान योग की प्रासंगिकता	डॉ. धनकेश मीना	173–175
34.	वर्तमान में श्रीमद् भागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ0 ममता कुमारी	176–179

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:46:01 +05'30'

35.	भगवद् गीता और उसकी सारगर्भिता	अंजलि शर्मा	180–184
36.	श्रीमद्भगवद् गीता के परिप्रेक्ष्य में संत साहित्य	पिंकी देवी	185–189
37.	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित प्राकृतिक संरक्षण की वर्तमान उपादेयता	प्रो. राकेश मीना	190–193
38.	गीता में कर्म योग	डॉ मनोज कुमार	194–197
39.	वर्तमान में श्रीमद्भागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ. जे.के. संत	198–199
40.	श्रीमद्भगवतगीता की प्रासंगिकता	मीना देवी	200–204
41.	श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद : जीवन का सार	स्नेहलता शर्मा	205–207
42.	वर्तमान सन्दर्भ में श्रीकृष्ण और भगवद्गीता की प्रासंगिकता	डॉ. रेखा कुमारी	208–211
43.	श्रीमद्भगवद्गीता की वर्तमान आवश्यकता : एक विश्लेषण	होमेश्वर उपाध्याय	212–214
44.	Bhagavad Gita : The Modern Management	Abdul Saboor Noori	215-222
45.	An Artistic Approaches and Visual Expression of Shrimad Bhagwat Geeta	Rakesh Kumar Chaudhary	223-228
46.	प्राचीन भारत के इतिहास में श्रीमदभगवद् गीता की उपादेयता	सुमन रानी, प्रोफेसर (डा). ललित पाण्डेय	229–232
47.	कर्मयोग उपचार	Dr. SUPRIYA SANJU	233-240
48.	Karma Yoga : A Perspective from Bhagavad Gita	Dr. Shradhanvita Singh	241-245

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48cbba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87467d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:46:39 +05'30'

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 5.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
December 2022 Page No. : 127-130

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वर्तमान में श्रीमदभागवत गीता की प्रासंगिकता

डॉ. पूनम कुमारी

सहायक प्राध्यापिका, बलिराम भगत महाविद्यालय, समस्तीपुर।

श्रीमदभागवत गीता हिन्दुओं के पवित्र–ग्रंथों में से एक है। यह ग्रंथ महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है। इसमें 18 अध्याय और 700 छंद हैं। यह मूलतः संस्कृत भाषा में लिखा गया है, लेकिन अब इसे 175 भाषाओं में अनुवादित किया गया है। श्रीमदभागवत गीता का दिव्य ज्ञान महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को सुनाया था। जब पांडवों और कौरवों के बीच में महाभारत युद्ध हुआ, तब अर्जुन का सारथी बनकर भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को यह उपदेश दिया था। युद्ध के आरंभ में ही जब अर्जुन को मालुम हुआ कि मुझे अपने गुरुजनों, पितामहों, भाईयों और साथियों के साथ ही युद्ध करना है, तब उन्होंने निराश होकर कृष्ण से कहा–'हे कृष्ण! मैं विजय नहीं चाहता हूँ और राज्य भी नहीं चाहता हूँ मैं इस विजय या राज्य को लेकर क्या करूगा? आखिर इस सुख–भोग और इस जीवन से क्या प्रयोजन है?'[1] अर्जुन को इस प्रकार निराश और हताश होकर श्री कृष्ण ने उसे कर्म करने की प्रेरणा देने के उद्धेश्य से ही गीता का उपदेश दिया।

महात्मा गाँधी के अनुसार–"निराशा के घने अंधकार में जब मैं अकेला तथा असहाय हो जाता हूँ और प्रकाश की एक किरण नहीं देख पाता हूँ तब मैं भागवत गीता के शरण में जाता हूँ। उसे उलट–फेर कर श्लोक का पाठ करता हूँ और सहन दुखों के क्षणों में भी मैं तुरंत मुस्कुराने लगता हूँ। मेरा जीवन बाह्य दुखों से भरा हुआ है किंतु मेरे मुख पर उन दुखों का कोई अमिट छाप नहीं पड़ सका। इसका एक मात्र कारण मैं भागवतगीता के उपदेशों को ही मानता हूँ।"[2]

गीता पर केवल देश–विदेश के तमाम विश्वविद्यालयों में शोध कार्य किये जा रहे हैं। इसमें मानव जीवन के मूल मर्म को खोजा जा रहा है। वैसे देखा जाए तो गीता आज के समय में धर्म से ज्यादा जीवन के प्रति अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को लेकर भारत में ही नहीं विदेशों में भी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। आज हमारा जीवन आधुनिकता से परिपूर्ण तो है लेकिन मनुष्य संतुष्ट नहीं है। इसका क्या कारण हो सकता है? यही सवाल हमें सोचने पर मजबूर कर रही है।

महान दार्शनिक अरविन्दो ने भी कहा है कि "गीता एक धर्मग्रंथ एवं एक किताब न होकर एक जीवन शैली है जो हर उम्र के लोगों को अलग संदेश देती है और हर सभ्यता को अलग अर्थ समझाती है"।[3] किसी भी ग्रंथ की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि वह हमें जीवन के इस चरम लक्ष्य तक पहुँचाने में कहाँ तक सहायक है? इस कसौटी पर श्रीमदभागवत गीता एकदम खरी उतरती है और युगों–युगों से वह अपनी सार्थकता

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:47:17 +05'30'

सिद्ध करती आई है जो निम्न है –

(1) कर्तव्य बोध :-

गीता में मनुष्य के कर्तव्य को तीन भागों में बाँटा गया है– व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक अर्जुन को कहते हैं कि हे अर्जुन तुम्हें यह कायरता वाली बात शोभा नहीं देती, तुम्हें अपने क्षत्रिय धर्म का करना चाहिए। युद्ध न करने से तू अपयश को प्राप्त करेगा। फिर वह अर्जुन को कर्म सिद्धान्त के बारे में हैं कि– प्रत्येक मनुष्य कर्म के बंधन से बंधा हुआ है वह कर्म किए बिना रह नहीं सकता, कर्म तो करना ही अपने विवेक ज्ञान के आधार पर कौन सा कर्म करना चाहिए इसका चयन करना चाहिए।

कर्तव्यों का निर्वहन करते, पाप–पुण्य का विचार नहीं किया जाता। अपने कर्तव्यों को त्याग करन धर्म आज्ञा देता है और न ही अध्यात्म है। वह कर्म जो बिना फल की इच्छा के किए जाते है निष्काम व है।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुमा ते संगोऽस्त्वकर्मणि"।।"[4]

वैसे देखा जाए तो कर्न करना हर मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है। बिना कर्म किए कोई भी व्यक्ति अपने में सफल नहीं हो सकता।

(2) आरोग्यता :-

वर्तमान जीवन शैली इतनी व्यस्त है, कि मनुष्य के पास अपने लिए समय ही नहीं है। कुछ म ऐसे हैं जो सूर्य की रोशनी को देख भी नहीं पाते है, ऐसे में मनुष्यों का स्वास्थ्य खराब हो जाता है। श्रीमदभागवत गीता में योग करने की सलाह दी गयी है और कहा गया है कि योग उसी का सिद्ध होत समय पर अभ्यास करता है, समय पर भोजन करता है, जरूरत से अधिक परिश्रम नहीं करता है, न ही सोता है और न ही अधिक जागता है। श्री कृष्ण आहार को सात्विक, राजसिक एवं तामसिक माना है, जिर का मनुष्य भोजन करता है उसको वैसा ही फल मिलता है। सर्वश्रेष्ठ आहार सात्विक भोजन है। उचित से मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है।

'युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।"[5]

(3) मानसिक द्वंद :-

मनुष्य का जीवन जितना सुविधाओं से परिपूर्ण है, उतना ही बेचौनी निराशा, दुःख, तनाव, असफल परेशानियों से भरा हुआ है। जिसके कारण आज मानव मानसिक विकृति का शिकार हो गया है। गीता में म रोगों के निवारण हेतु जप, यज्ञ, दान की महिमा का वर्णन किया गया है। भगवान कृष्ण कहते है कि– भी रास्ता न मिले तो ईश्वर पर छोड़ते हुए निष्काम कर्म करना चाहिए जिससे आत्मसंतुष्टि मिले आत्मविश्वास बढ़ेगा।

"गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै शास्त्रविस्तरैः।

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c488ba35a0d7e739e2dee842c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:47:57 +05'30'

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपदामिदिनिस्सुता।।"[6]

(4) **आजीविका :-**

मनुष्य को अपने स्वभाव के अनुसार काम करना चाहिए। वह काम जिसमें उसे खुशी मिलती है।

"सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृते ज्ञानिवानपि।

प्रकृति यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति।।"[7]

(5) **स्वस्थ्य आचरण :-**

वर्तमान जीवन में मनुष्य को अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रहता है। उसे अपनी मर्यादाओं और रिश्तों का ज्ञान नहीं है। कृष्ण कहते है– 'अर्जुन गुण दो प्रकार है दैविय गुण और राक्षसी गुण। मनुष्यों को दैवीय गुणों का आवरण करना चाहिए और राक्षसी गुणों वाले मनुष्यों की उपेक्षा करनी चाहिए।

(6) **मोक्ष मार्ग :-**

मनुष्य का जब सांसारिक बंधनों से मोह भंग हो जाता है और इस मोहभंग की निवृत के मार्ग की जानकारी न होने के कारण, वह अपने जीवन में द्वंद, निराशा और भटकाव आदि की स्थिति में पहुँच जाता है। ऐसी स्थिति में गीता ही एक सहारा है जो ईश्वर की शरण में जाने एवं मोक्ष की प्राप्ति के अनेक साधनों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। भगवान श्री कृष्ण मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनेक उपाय बताये हैं जैसे– कर्म योग, भक्तियोग, ज्ञानयोग आदि।

इस प्रकार गीता में मानव जीवन के सभी पक्षों का संदेश निहित है। कुछ विद्वानों का कहना है कि गीता में वह शक्ति है जो हारे हुए, निराश व्यक्ति को पुनः संपूर्ण बल एवं आशा के साथ खड़ा कर सकती है। यदि भारत गीता को आत्मसात कर आगे बढ़े तो वह फिर से विश्व गुरू का दर्जा हासिल कर सकता है, विशेष कर युवा पीढ़ी के लिए यह ग्रंथ अंधेरे में एक रोशनी की तरह है।

आज श्रीमद्भगवत गीता हमें यह संदेश देती है कि मनुष्य जीवन की हर स्थिति में जीना सीखे और समस्या उत्पन्न होने पर उसके समाधान के उपाय खोजे, जो व्यक्ति जितना उत्तरदायित्व–पूर्ण कार्य करेगा, उसी अनुपात में उसके सामने समस्याएँ आएगी और उनके परिप्रेक्ष्य में ही उसकी महानता का निर्धारण किया जाएगा। सीता हरण जैसी विकट समस्या उत्पन्न होने पर श्री राम ने न धैर्य खोया और न ही निराशा प्रकट की, उन्होंने समुद्र पर सेतु बनाने जैसे दुष्कर कार्य को करके समस्या का समाधान किया।

इसलिए हमें संघर्ष से डरना नहीं चाहिए क्योंकि प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है लेकिन प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। ऐसे भक्तों की रक्षा भगवान कृष्ण हमेशा करते रहते हैं :–

"यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्"।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे–युगे।।

अर्थात् 'जब–जब दुनिया में धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब अधर्म को मिटाकर

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d883c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:48:48 +05'30'

धर्म की रक्षा करने के लिए मैं जन्म लेता हूँ। साधुओं की रक्षा करने के लिए और दुखों का नाश करवं स्थापना करने के लिए मैं हर युग में जन्म लेता हूँ।

इस प्रकार भगवान कृष्ण ने अपने भक्त अर्जुन के माध्यम से मानव जीवन के लिए यह संदेश कि सांसारिक माया से मुक्त होने की कोशिश करते हुए हमें निष्काम कर्म करना चाहिए। यही मेरा उ

संदर्भ ग्रंथ :-

1. श्रीमदभागवत गीता, गीतप्रेस, गोरखपुर–273005
2. Google-https:/www.ichowk.in/culture/bhaavad-gita-is-the-passage-of
3. वहीं।
4. श्रीमदभागवत गीता, गीतप्रेस, गोरखपुर–273005
5. वहीं।
6. वहीं।
7. वहीं।
8. वहीं।

punammehada@gmail.com

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:49:30 +05'30'

2021-22, Sl. No.-13

ISSN 2277 - 7083

आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved Care Listed Journal

अंक/Year-12 अंक/Vol.-45 द्विभाषी/Bilingual

जनवरी - मार्च / Jan. - March 2023

संपादक

डॉ. आशीष कंधवे

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cffe10883d, 2.5.4.20=9a26e48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c023066fcc88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:50:15 +05'30'

- डॉ. भगवान गव्हाडे / भाषा का प्रश्न और हिंदी सिनेमा / 145
- दीपक सोराड़ी / राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बहुभाषिकता / 147
- डॉ. जय प्रताप सिंह / वैश्विक पटल पर भाषा का प्रश्न / 152
- डॉ. हरप्रीत कौर/हिंदी भाषा का समाजभाषिक अध्ययन / 157
- नीरज / हिंदी भाषा एवं गद्य का उद्भव और विकास / 161
- प्रियंका चौधरी/भाषा का प्रश्न और स्त्री/557
- प्रभंजन कुमार झा, प्रो- संजय कुमार /फोर्ट विलियम कॉलेज और हिन्दी भाषा का प्रश्न/561
- सूरज प्रकाश बडत्या/महात्मा बुद्ध और साहित्य -समाज परिवर्तनकारी चेतना/566
- संदीप कुमार जायसवाल/भाषा का प्रश्न और वेब सीरीज/573
- रमेश एस. लाल, प्रो. हासो दादलाणी/सामी के काव्य में वेदांत/580
- प्रो. मंजुला राणा/कृष्णा सोबती का रचना-संसार/589
- डॉ. मनोरमा मिश्रा/भारतीय साहित्य में नैतिक मूल्य/594
- डॉ. पूनम कुमारी/परशुराम की प्रतीक्षा और भारतीय प्रसंग/598
- कल्पना उप्रेती/वर्तमान शिक्षा प्रणाली में त्रि-भाषासूत्र का महत्व व चुनौतियाँ/602
- प्रो. सुशील कुमार शर्मा/माटी के सम्मान की कविताएँ: 21वीं सदी का आदमी/607
- अमित आर्य, प्रो. मैथिली गंजू/अपराध, राजनीति, और व्यापार से संबंधित ख़बरें और 'एनडीटीवी'/611

ENGLISH SECTION

- S. Gangaiamaran, Dr. K. Sindhu/**Portrayal of a Tribal Woman's Life as seen in Mahasweta Devi's Rudali / 167**
- P. Kumar, Dr. K. Dharaniswari / **Women's Liberationist Outlook in Manju Kapur's Novels 174**
- 1R.Vijayarani / **Emancipation of Woman in Gayle Jones's Healing / 179**
- R. Gopiram, Dr. J. Jayakumar / **Assumption of Ethnicity and Change of Modern Materialism in Kurt Vonnegut's Slaughter House Five / 186**
- C.Athiyaman, Dr. V. Radhakrishnan / **Woman as a Symbol of Sacrifice in Kamala Markandaya's Novel Nectar in a Sieve / 192**
- S. S. Uma Sundara Sood, Dr. P. Mythily/ **A Psychological Study of the Struggle between Love and Ambition of a Catholic Priest in Colleen Mccullough's The Thorn Birds. / 197**

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf374f0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:51:04 +05'30'

अनुक्रम

संपादकीय

- डॉ॰ आशीष कंधवे / शिक्षाः संस्कृति का संरक्षक / 10

हिंदी प्रभाग

- डॉ. बिपिन कुमार ठाकुर / जी 20 की अध्यक्षता: भारत के लिए एक स्वर्णिम अवसर / 15
- उर्मिला शर्मा, कविता नाहरवाल / भगवान चित्रगुप्त / 20
- डॉ. दीपांकुर जोशी, डॉ. शालिनी चौधरी / घरेलु हिंसा से पीड़ित महिलाओं का संरक्षण: एक अध्ययन / 23
- डॉ. अमृता श्री / राष्ट्रभाषा हिंदी की आवश्यकता / 30
- कुलदीप कुमार, डॉ. रीता सिंह / एस. आर. हरनोट की कहानियों में वृद्धों का जीवन संघर्ष / 35
- साकेत बिहारी / भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय शिक्षा नीति / 41
- दिगंत द्विवेदी / कोंदर जनजाति की सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन / 50
- डॉ. नलिनी सिंह / वैश्विक पटल पर भाषा का प्रश्न और हिंदी भाषा की स्थिति / 54
- अपर्णा वर्मा, डॉ. वी. शिरिषा / भारतीय भाषाओं के उन्नयन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 / 61
- बसंत कुमार / भारत में राष्ट्रीयता और हिंदी भाषा/ 66
- स्वप्निल पांडेय / वैश्विक अभिव्यक्ति की ओर अग्रसर हिंदी भाषा / 70
- श्रीमती पॉली भौमिक / त्रिपुरा में हिन्दी का भाषाई महत्त्व / 74
- डा॰ आनंद जायसवाल, ममता रानी / पत्रकारिता और हिन्दी भाषा का आंतरिक सम्बन्ध / 77
- नंदकिशोर / नन्द किशोर नवल : भाषाई व्यक्तित्व / 82
- राजेश कुमार / हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय करण में प्रवासी साहित्य का योगदान / 94
- श्रीमती चैताली सलूजा, डॉ. नंदिनी तिवारी / भाषा का प्रश्न और प्रवासी साहित्य / 98
- डॉ. परिस्मिता बरदलै / असमीया संस्कृति और राम-कथा की परंपरा / 107
- डा. सुजीत कुमार, डा. गौरव रंजन / इंटरनेट के युग में लोकजीवन एवं युवाओं की सामाजिक चेतना / 122
- बी आकाश राव / पूर्वोत्तर की भाषाई विविधता और हिंदी उपन्यास / 125
- सिमरन / ब्रिटेन की चयनित प्रवासी हिन्दी कहानियों में स्वदेशभक्ति / 130
- पूजा / भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति / 135
- कुसम सबलानिया / भाषा का प्रश्न और पूर्वोत्तर का हिंदी साहित्य / 140

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:51:59 +05'30'

- Harshita Rathee, Prof. Sujata Rana / **Examining the Stereotypes of Religion and Faith: A Reading of William Dalrymple's Nine Lives: In Search of the Sacred in Modern India / 304**
- Konsam Romabati / **Religion as a medium for Social Change: Ambedkar's Perspective / 310**
- Dr. Neena.TS / **Relevance of integral education in the 21st-century Indian context / 318**
- A. Akthar Parveen, Dr. P. Kumaresan / **Everending Waves of Female Struggle in Chitra Banerjee Divakaruni's "The Last Queen". / 326**
- Saurabh Mishra / **Exploring the tribal history of Jharkhand through ethnography / 332**
- A. Pearlin synthia, Dr P. Kumaresan / **Impairment undergone by Women in their Shattered Identities; A critical Study on Alice Walker's Select Works / 341**
- R. Prathap Chandran, Dr. P. Kumaresan / **Gynocentrism in Langston Hughes' Selected Poetic Works / 351**
- Dr. (Prof.) Jayalaxmi / **Folk Narratives in the Age of Digitalization in Manipur / 358**
- P. Jaya Prabha, Dr. T . Alagarasan / **Spiritual Realization and Cultural Identity through Music and Dance in Paulo Coelho's The Witch of Portobello / 368**
- Rajni, Dr. Manjit Kaur / **Easterine Kire's portrayal of the multi-conflict struggle of Nagas for identity / 374**
- Amanjyoti Kaur / **Impact of Social Media Influencers on Generation Z / 381**
- Dr. Yuki Azaad Tomar / **Parched : Story of Women Empowerment through Cinema / 391**
- Mrs.P. Nirmala Rani, Dr.P.Kumaresan / **Pitfalls of Prosperity in John Steinbeck's The Pearl / 401**
- Dr. Ramyabrata Chakraborty / **Re-interpreting the Nationalistic Discourses in Raja Rao's Kanthapura / 408**
- Dr. Shinam Batra, Dr. Sunil Kumar / **Effect of Learning and Thinking Style on Academic Achievement of CBSE and ICSE Board Students Using ICT: A Comparative Study / 414**

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d1fe4f4cbcfdb2cff61083d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:53:26 +05'30'

- Mrs. J. Jebila, Dr. S. Briolgith Jusbell / **Hunger for Power and Emancipation in Nuruddin Farah's Sweet And Sour Milk / 203**
- Ms. R. Sakthi Priya, Dr. R. Sheela Banu / **Feminine Sensitivity in Chitra Banerjee Divakaruni's The Palace of Illusion /208**
- N. Priyadharshini / Dr.B.Visalakshi N. Priyadharshini / Dr.B.Visalakshi / **Bond and Beyond: Portrayal of Women and Nature in Anita Desai's Fire on the Mountain / 215**
- A. Arockiyaraj, Dr. S. Diravidamani / **Challenges Faced by First Generation Undergraduate Learners in Second Language Acquisition / 222**
- D. Eswaran, Dr. S. Diravidamani / **A Phenomenon of Second Language Spelling: A Study at Undergraduate Level / 231**
- Dr. M. Leena, Dr. N. Kavitha / **Social Background Exposes Distinctiveness in Namita Gokhale's Gods, Graves & Grandmother & Rohinton Mistry's A Fine Balance. / 240**
- Dr. K. Kannadasan / **Struggle and Success of Women in Rohinton Mistry's novel A Fine Balance / 247**
- Indusoodani / **Defocalization and the Magical Realist Text / 252**
- Dr. S. Maheswari / **The Pursuit of Justice in Arthur Conan Doyle's Sherlock Holmes Stories / 257**
- Mrs.Y. Ilarasi, Dr. B. Kavitha / **Feminist ambivalent ideas in Kamala Markandaya and Angela Carter Novels. / 264**
- C. Jeeva, Dr. C. Govindaraj / **The Portrayal of Slave Narratives and Racism in the Select Novels of Ishmael Reed / 271**
- S. Senthil Kumar, Dr. C. Govindaraj / **The Portrayal of Feministic Elements in Jamaica Kincaid's Select Novels: A View / 276**
- Dr Inderjeet Singh / **Failure of the State: Nation Right after the Independence Through the Eyes Khushwant Singh / 282**
- Rananjayaa Singh / **Environmental Racism: A Reading of Richard Wright's Eight Men / 289**
- Dr. Mandeep Kaur / **Study of Relatedness of Occupational Aspiration and Home Environment of Adolescents with Respect to Some Demographical Variables / 295**

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:54:31 +05'30'

- Madan Mohan Joshi, / **Saiva Dharma as Depicted in the Icons of Kumaun Himalaya / 422**
- Nikita Kumawat, Ashok Singh Rao / **Thundering Sounds of Silence in Nature / 432**
- Bipin Kumar Thakur / **Overcrowding by Political Parties in General Elections in India / 439**
- Imdad Ali Ahmed / **Medieval History and Culture of Assam as Depicted in Jean Baptiste Tavernier's Travels in India: A Critical Study / 447**
- Indrani Hazarika / **Discomfort in 'comfort': A reading of Ian McEwan's The Comfort of Strangers / 453**
- J. Jayalakshmi, Dr. K. Anand / **The Plight of Untouchables in Mulkraj Anand's Untouchable and Coolie / 460**
- Bavatharani. A, Dr. T.S. Ramesh / **The Posthuman Postulation of Consciousness in Richard Morgan's Altered Carbon / 464**
- V. Anitha, Dr.K. Ananad / **Ecological Concern in Reading the Poetry of Kamala Das / 471**
- V. Hamsaveni, –Dr. M. Maheswari / **Dubious Relationship In Shobha De's Snapshots / 477**
- R. Sivasankarit, Dr. K. Lavanya / **Blacks' Struggles after Slavery in Chester Himes' The Third Generation / 486**
- M. Karthik, Dr. K. Kumar / **Individuality and freedom in the frame with reference to Githa Hariharan's Times of Siege / 490**
- M.Prakash1, Dr. K. Lavanya / **Transformation of the Human Race in Octavia E. Butler's Clay's Ark / 497**
- Dr. Rajeshvari/**Dimensions of Language Learning: Special Reference of 'English Vinglish'/500**
- Nidhi Arora, Manisha Gupta, Mridul Dharwal, Nitendra Kumar/**Couture turns Communal-A Post Covid-19 Case Study of Brand Collaborations 506**
- Dr. M.N.V.Preya/**Objectification is a Way of life- A study on Disquieting Existence of Monisha and Jaya in Voices in the city and That Long Silence/524**
- Dr. Suresh Kumar/**Role of Digital Currency in Changing The Future of Banking Sector in India/529**
- Rishab Manocha, Dr. Mridul Dharwal, Dr. Nitendra Kumar/**Millennials Attitudes and Purchase Intentions toward Secondhand Clothing in North India/542**

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 12:55:20 +05'30'

परशुराम की प्रतीक्षा और भारतीय प्रसंग

–डॉ. पूनम कुमारी

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ओज और वीर रस के कवि थे। उनकी रचनाओं में ओज और वीर रस का समन्वय मिलता है। परंतु इनकी श्रृंगारिक भावनाओं से ओत-प्रोत उर्वशी और रसवंती जैसी काव्य-कृतियाँ भी है, जहाँ कवि की आत्मा वास करती है। रेणुका, हुंकार, रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, सामधेनी और परशुराम की प्रतीक्षा आदि इनकी काव्य-कृतियाँ है।

लगातार तीन सौ वर्षों की गुलामी के बाद जद्दोजहद के पश्चात् आजादी मिलने से लगा था कि भारतवर्ष में चारों ओर सुख-समृद्धि और शांति का आलम स्थापित हो जाएगा परंतु ऐसा संभव नहीं हो पाया। चीनी आक्रमण के समय सारा भारत देश जिस चरम क्रोध से एक होकर गरज उठा था उसकी मिसाल भारत के समग्र इतिहास में नहीं है, बल्कि गर्जन प्राचीन और मध्यकालीन युगों में भी सुनाई पड़ा होगा। राष्ट्रकवि दिनकर ने उस आग को एक कविता के भीतर समेट कर अमर कर दिया है। आगे आने वाली संततियों जब-जब 'परशुराम की प्रतीक्षा' को पढ़ेगी उन्हें यह आग गर्मी पहुँचाएगी और लोग याद करेंगे कि भारत के इतिहास में कोई घड़ी ऐसी भी आई थी जब राष्ट्रीय अपनापन से क्षुब्ध होकर सारा भारतवर्ष एक साथ हुँकार उठा था।

साहित्य सड़क पर या युद्धभूमि में घटित होनेवाली घटनाओं का विवरण नहीं लिखता। वह काम इतिहासकार का है। कवि तो घटनाओं के पीछे छिपी भावनाओं का अंकण करते हैं, उन आवेगों का चित्रण करते हैं, जिनका चित्रण इतिहासकारों और दार्शनिक पंडितों के लिए भी अशक्य हैं। आग की लपटें जो मनुष्य के हृदय से निकल कर शून्य में बिखर जाती हैं शोक के उच्छवास जो वायु में विलीन हो जाते हैं प्रेम की मस्ती जो वसंत के साथ विदा हो जाती है, ये सब जीवित इसलिए मंजूषा में बंद कर देता है।

नेफा के मैदान में जब भारतीय सेना पराजित हो गई तब उस पराजय के दंश से सारा भारत बेहाल हो उठा और प्रत्येक व्यक्ति

इस सिपाही के अनुसार भारत की पराजय इसलिए हुई कि व्यवहार को भूलकर वह आदर्श और कल्पना में गया था। राष्ट्रकवि दिनकर का कहना है कि जो जाति अपने आपद्धर्म का पालन नहीं कर सकता, उसका परम धर्म आप से आप विनष्ट हो जाता है। उच्चतर मनुष्यता सचमुच ही श्लाघ्य और काम्य है। किन्तु यह आदर्श पर्वत की चोटी पर अवस्थित है

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:06:36 +05'30'

नेफा की लड़ाई का सबसे कारुणिक पक्ष यह है कि बिना किसी तैयारी के हमारे नौजवान उस युद्ध में झोंक दिये गए थे। उस समय यह अपवाह देश में सर्वत्र सुनी जाती थी कि हमारे सिपाहियों के हाथ में सर्वत्र सुनी जाती थी कि हमारे सिपाही के हाथ में जो बंदूके थी वे महज मामूली किस्म की थी और उनके पास गोलियाँ काफी तादाद में नहीं थी। घायल सिपाहियों का एक दल जब मैदान से लौटा तो इलाज के लिए दानापुर (पटना) में अस्पताल में रखा गया। उन सिपाहियों का अभिनंदन करने को जनता मिठाईयाँ और पुष्पाहार लेकर दोड़ी, लेकिन सिपाहियों ने कहा 'ये फूल मिठाईयाँ क्यों लाए हो। अगर हो सके तो हमें बंदूक और गोलियाँ लाकर दो जिससे हम दुश्मन के अंहकार को चकनाचूर कर सके।

इसी पृष्ठभूमि के याद रखते हुए कवि ने सिपाहियों से दूसरा सवाल यह पूछा है कि हे वीर तुम्हारी हत्या का दायित्व किस पर है? वह कौन है, जिसे हम तुम्हारे वध के लिए जिम्मेदार मान सकते है।

सिपाही कहता है हम दुश्मन से नहीं हारे हैं। पराजय हमारी अपने ही घर में हुई है। जिस देश का राजनीतिज्ञ लोभ के मारे सत्य नहीं बोल सकते, जिस देश के सत्ताधारी चारों ओर ठगों का पक्ष लेते हैं तथा चाटुकारों को अपना मित्र समझते हैं। जिस देश में आत्मबल की मिथ्या प्रशंसा के लिए बाहुबल की अपेक्षा की जाती है जिस देश के नेता केवल शांति की बातें बोलते है और जिसके कवि धरती को छोड़कर आकाश में उड़ान भरते है, वह देश लड़ाई में कभी भी विजयी नहीं हो सकता।

घातक है जो देवता सदृश दिखता है। समझो उसने ही हमें यहाँ मारा है। चारों के हैं जो हित ठगों के बल है, या चाटुकार जन से सेवा लेते है। " * 4

यह पाप उन्हीं का हमको मर गया है, भारत अपने घर में ही हार गया है"+5

जिसके देश शासन में विलासिता, आलस्य और कदाचार हों उस देश की सेना युद्ध विजय नहीं पाती है। लड़ाई जीतने की जिम्मेदारी केवल फौजियों की नहीं होती। लड़ाई जितने के लिए शासन को निष्कपट और शुद्ध होना पड़ता है तथा सभी लोगों को कठोर जीवन बिताना पड़ता है। जिस समय मोर्चों पर गए हुए जवान अपना रक्त बहा रहे हो, उस समय देश के भीतर प्रत्येक व्यक्ति को उस रूधिर का मूल्य अपने स्वेद से चुकाना चाहिए। नेफा का सिपाही कहता है कि राजाओं, व्यापारियों और मजदूरों से कहो कि वे न्यायशील हो। अगर शासन में पवित्रता नहीं आई तथा अयोग्य बढ़ते गये तो इस देश को युद्धों में विजय कभी भी नहीं मिलने वाली है।

कविता की तीसरी खण्ड कवित्व की दृष्टि से कदाचित सर्वश्रेष्ठ है। इस खण्ड में भारत के उन सभी वीरों का आह्वान किया गया है जिन्होंने भारत का गौरव की रक्षा के लिए कभी तलवार उठाई थी। चाणक्य और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य और राणा प्रताप, गुरु गोविंद सिंह और शिवाजी महाराज और लक्ष्मीबाई, भगत सिंह का आह्वान कवि ने ऐसी भावाकुलता से किया है कि उसे पढ़कर एक वाल भुजाएँ फड़क उठती है। कवि कहता है कि भारत कोई साधारण देश नहीं है। कसूर उसका यह है कि उसने शरीर बल की उपेक्षा अपना सारा ध्यान आत्मा पर केंद्रित कर दिया।

अतः चीनी आक्रमण के समय देश की आत्मा अपना लक्ष्य परशुराम को बनाना चाहती थी, अतएव

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff61083d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a07738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:07:31 +05'30'

2021-22, SL. No.-16

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor
5.642

ISSN : 2395-7115
December 2022
Vol.-16, Issue-6

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

विशेषांक सम्पादक :
डॉ. सुलक्षणा अहलावत

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266ea b1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37 e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:11:12 +05'30'

19.	वर्तमान में भगवद्गीता की प्रासंगिकता	Dr. B. Keshava Prapanna Pandey	100-104
20.	श्रीमद्भगवतगीता की साहित्यिक एवं मनोवैज्ञानिक समीक्षा	डॉ. आशा कुमारी, डॉ. राजेश	105-112
21.	श्रीमदभगवद् गीता की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	राज बाला, प्रोफेसर (डॉ. सुनीता सिंह)	113-117
22.	श्रीमद्भगवद्गीता में मानव-कल्याण की अभिव्यक्ति	चोवाराम यदु	118-122
23.	श्रीमद्भगवद्गीता और वर्तमान समय में इसकी प्रासङ्गिकता : एक विश्लेषण	डॉ. चन्द्रशेखर उपाध्याय	123-126
24.	वर्तमान में श्रीमदभागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ. पूनम कुमारी	127-130
25.	श्रीमद्भगवद्गीता और वर्तमान संदर्भ में स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता	अमनप्रीत	131-136
26.	**Shreemad Bhagwat Geeta-A scripture for modern day management**	**Dr. Anju Rani**	**137-143**
27.	वर्तमान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता	अशोक कुमार	144-150
28.	**RELEVANCE OF BHAGAVAD GITA IN MODERN TIME**	**Dr. Arti Kumari**	**151-155**
29.	श्रीमद्भागवतगीता में नर-नारायण आस्था	डॉ. नेहा प्रधान	156-159
30.	वर्तमान वैज्ञानिक युग में गीता की प्रासंगिकता	प्रो. मीठालाल मीना	160-163
31.	**The Srimad Bhagavad Gita is the Messenger of Ethics and Values : A Review**	**Dr. Avijit Mandal**	**164-167**
32.	गीता में स्थितप्रज्ञता व वर्तमान जीवन	डॉ. कमल बाई मीना	168-172
33.	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित ज्ञान-विज्ञान योग की प्रासंगिकता	डॉ. धनकेश मीना	173-175
34.	वर्तमान में श्रीमद् भागवत गीता की प्रासंगिकता	डॉ0 ममता कुमारी	176-179

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c488bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:11:44 +05'30'

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 5.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
December 2022 Page No. : 151-155

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

RELEVANCE OF BHAGAVAD GITA IN MODERN TIME

Dr. Arti Kumari

Assistant Professor (G.T), Department of English, B.R.B College, Samastipur.

Abstract :-

One of the most profound book that sums up the essence of all Hindu philosophy stands for, the Bhagavad Gita, from the original Sanskrit version has been translated into several languages of the world due to its significance, importance and relevance in modern time. In a world confronted by materialistic strife, terrorism and conflicts, the sermons that Lord Krishna gives to his favorite disciple Arjuna in the midst of Kurukshetra battlefield where two large enemies are ready to battle has come to occupy a central theme about the inner and outer conflict that mankind has faced ever since he evolved into a thinking being. Considered as the crux of all vedantic thought Krishna urging Arjuna to do his duty and not shy away for the battle he faces, simply because the opposing army consists of cousins, uncles ,gurus and other close relatives, lays emphasis on the theory of karma where the question of birth, death and rebirth are also debated. One will find in Bhagavad Gita all that is contained in other scriptures, but the reader will also find things which are not to be found elsewhere. That is the specific standard of the Gita. In the present paper attempt has been made to throw light on the relevance 0f Bhagavad Gita in modern time.

Keyword :- Bhagavad Gita, Relevance , Karma , Duty, Sermons, Modern Time

"Whether from an ancient Yogi or a modern- day practitioner's perspective, the Bhagavad Gita speaks to anyone who ever feels as though their mind is a battlefield."

The Bhagavad Gita is one of India's ancient texts derived from the epic poem The Mahabharata. Throughout history , this stands as the longest poem to have been written, with over 100,000 shlokas or over 200,000 verses. Although only a part of this huge text, the Bhagavad Gita is perhaps one of the most important and highly revered yogic texts ever to have been written.

Texts like The Upanishads and The Dhammapada are also part of this epic poem, but it is the Bhagavad Gita which is often cited as the one that holds the key to personal transformation:

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:12:09 +05'30'

2020-21, Sl. No.-06

APPROVED UGC CARE

ISSN-2348-2397

★ Vol. 06 ★ Issue - 25 ★ January - March 2020

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

SHODH SARITA

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPILANARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Editor in Chief

Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt.- Gold Medalist

Published by

SANCHAR EDUCATIONAL & RESEARCH FOUNDATION LUCKNOW, U.P. (INDIA)

Website: http:// www.seresearchfoundation.in
http://www.seresearchfoundation.in/shodhsarita

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:12:28 +05'30'

ISSN-2348-2397
UGC Approved, Journal No. 48836

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol-06, Issue-25, January-March-2020

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

CONTENTS / अनुक्रम

S.No.	Topic	Page	Author
1.	Voices of The Marginalised In Manto's Short Stories–Bitter Harvest and The Return.	1-4	Mukesh Mahato
2.	Teachers' Perception of Inquiry-based Science Education in Indian Primary School	5-11	Md. Aarif
3.	A Critical Appraisal of Motivational Effects of Bank Finance for Entrepreneurship Development:- A Case Study of Nawada District of Bihar.	12-21	Rupesh Kumar
4.	कबीर कालीन उत्तर भारत की राजनैतिक पृष्ठभूमि	22-31	प्रदीप कुमार
5.	Paradigm Shift in the Modernization of Sexuality: A Study on Body Surveillance	32-34	Anuj Kumar Verma
6.	गया जिला में कृषि उद्योग पर जनसंख्या का प्रभाव : एक भौगोलिक विश्लेषण	35-41	सतीश कुमार
7.	कन्या भ्रूण हत्या एक अभिशाप	42-43	डॉ0 नेहा कुमारी
8.	विभिन्न सामाजिक संवर्गों में मतदान व्यवहार	44-49	डॉ0 कुंदन कुमार वर्मा
9.	समकालीन हिन्दी कहानियों में विसंगतियों का चित्रण	50-52	सुजाता गुप्ता
10.	Relationship between India and Israel and its prospective	53-59	Manish Kumar
11.	Nayantara Sahgal: Anatomist of the Feminine Psyche	60-64	Dr. Arti Kumari
12.	निर्गुणधारा के कवियों की स्त्री-संबंधी धारणाएँ	65-70	संजय कुमार सिन्हा
13.	भारत में व्याप्त सामाजिक असमानता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।	71-74	Dr. Krishandeo Kumar Bharti
14.	गाँधी व गाँधीवाद एक समीक्षा	75-77	दीपेश कुमार
15.	मतदान व्यवहार में क्षेत्रीय विविधता	78-81	डॉ0 निवेदिता
16.	Rural Development In West Champaran District Socio-Economic And Infrastructure Characteristics	82-84	Dr. Raju Kumar
17.	असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिला मजदूरों की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति	85-87	डॉ0 मनीषा कुमारी
18.	मिथिला लोक चित्रकला में नारी शक्ति का कलात्मक उत्कर्ष	88-90	डॉ0 राजीव कुमार
19.	भारतीय समाज में जेण्डर असमानता एवं चुनौतियाँ	91-95	डॉ0 सरिता कुमारी

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266ea b1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37 e0f69d8f3c4e466ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:12:51 +05'30'

ISSN-2348-2397
UGC Approved, Journal No. 48836
SHODH SARITA
Vol-06, Issue-25, January-March-2021
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Nayantara Sahgal: Anatomist of the Feminine Psyche

DR. ARTI KUMARI
Guest Faculty,
Department of English
B.R.B.College, Samastipur
L.N.M.U. Darbhanga
Email-anupamnitya007@gmail.com
Mob No-7488638146

Abstract

Freedom for the Indian woman meant freedom from centuries of male dominance and male ordained social and cultural norms. Patriarchy had compelled the Indian women to be totally subservient to the male in both the social and economic spheres. The work of Indian women writers is significant in making society aware of women's demands and providing a medium for self expression. Among the writers, who have portrayed the new woman, who is inclined to take the road not taken and walking on their 'own road; Nayantara Sahgal undoubtedly arrests our attention. Almost in all her novels, Sahgal has gone deep into the female psyche. She has explored the nature and scope of the trauma of women breed. Suffering and loneliness have mellowed Sahgal and she has been able to transform these into understanding and compassion. She believes that the potentialities in women are not exploited to the full. Sahgal's female characters are individuals who can remain independent within the frame-work of society into which they are born. She is able to go deep into the mindset of her female characters and analyze them with sympathy and understanding. Sahgal has pictured women's sufferings without sentimentality and with such distinctness that she may well be described as "the anatomist of the feminine psyche. In most of her novels, Sahgal figures women who prophet a new morality a morality not grounded to physical chastity. It demands compliance of individual longings for self fulfilment, autonomy, self-realization, independence, individuality and self-actualization Displaying a mature understanding of Sahgal's female psyche, the present paper explores the various issues of woman in her novels demands compliance of individual longings for self fulfilment and chases consideration not just for the reality but for the heart and feelings.

Keywords- female psyche, feminism, freedom, man-woman relationship.

Nayantara Sahgal is one of the distinguished Indo-English writers. In most of her writings, she has tried her best to free the female morality from the age long control of male domination. Sahgal's women are no more goddesses; they are human beings and move from bondage to freedom, from indecision to self assertion, from weakness to strength. Women come to occupy the central position in her fictional world, As jasbir Jain observes; in almost

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87463 7d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:13:18 +05'30'

2020-21, Sl. No.-07

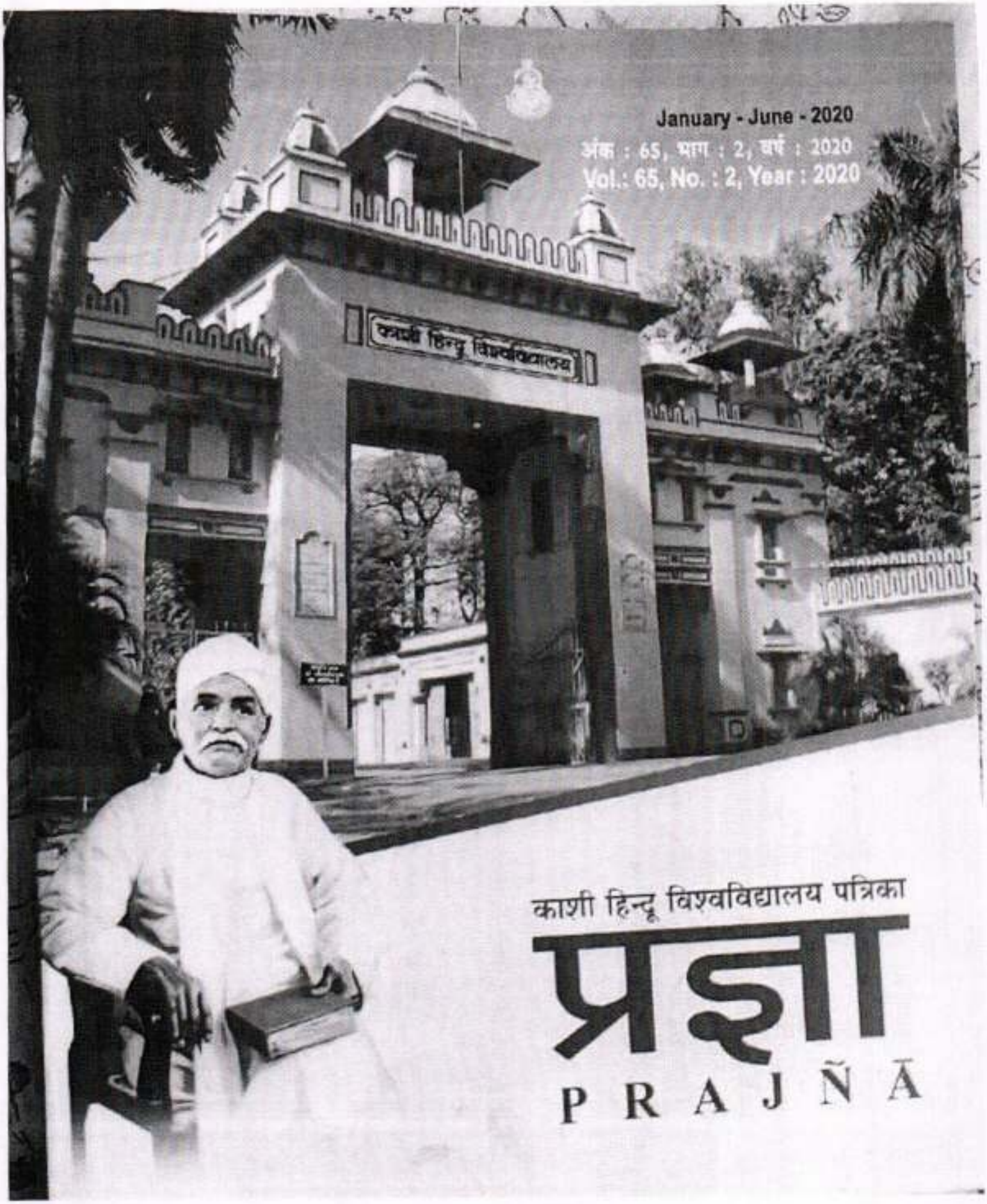

January - June - 2020
अंक : 65, भाग : 2, वर्ष : 2020
Vol.: 65, No. : 2, Year : 2020

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका

प्रज्ञा

PRAJÑĀ

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:13:41 +05'30'

प्रज्ञा UGC CARE LIST JOURNAL
अंक-65, भाग-2, वर्ष 2020
Impact Factor-6.87
ISSN-0554-9884

14. Study of power and politics in Achebe's Anthills of the Savannah — 84
Dr. Rajive Kumar Ranjan

15. पर्यावरण अवनयन एक विस्तृत विवेचन — 88
रंजन कुमार

16. कृष्णभक्त कवियों की स्त्री संबंधी अवधारणाएँ — 92
संजय कुमार सिन्हा

17. Trump and Modi Became Global sight — 98
Manish Kumar

18. कबीरकालीन समाज-एक विश्लेषण — 105
प्रदीप कुमार

19. आर्थिक राष्ट्रवाद के विकास में बुद्धिजीवी वर्ग की भूमिका: एक अवलोकन — 113
केशव कुमार राय

20. Meena Alexander's Feminist Approach in her novels — 118
Arti Kumari

21. Scope of Tourism In Purbi Champaran District of Bihar : A Geographical Study — 123
Bhubneshwar Kumar Mandal

22. वैश्विक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में दहेज प्रथा — 133
डॉ0 सरिता कुमारी

23. मौर्य एवं गुप्तकाल के मध्य सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति: एक दृष्टि — 143
राजन कुमार शर्मा

24. शिक्षा का अधिकार और मूल अधिकार : पटना जिले के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन। — 149
संदीप कुमार अत्री

25. गौतम बुद्ध के शिक्षा दर्शन में तत्व, तर्क और ज्ञान — 160
डॉ0 नीभा कुमारी

26. समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर का व्यक्तित्व — 167
डॉ0 संजय कुमार सिंह

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:14:18 +05'30'

प्रज्ञा UGC CARE LIST JOURNAL
अंक-65, भाग-2, वर्ष 2020
Impact Factor 4.82
ISSN-0554-7094
January-June-2020

Meena Alexander's Feminist Approach in her novels

ARTI KUMARI
Research Scholar
Department of English, B.R.B.College, Samastipur
L.N.M.U. Darbhanga
Email-anupamnitya007@gmail.com
Mob No-7488638146

Abstract

Merriam –webster's word for the year 2017 is " feminism" ... The meaning of the term has evolved from essentially , " the qualities of the female" to social , economic and political equality of the sexes that often sees it as a movement," orgainised activity on behalf of woman's rights and interests" Chetna Nahal in his article," Feminism in English fiction" , defines feminism as " a mode of existence in which the woman is free of the dependence Syndrome. There is a dependence syndrome: whether it is the husband or the father or the community or whether it is a religious group, ethic group .When women free themselves of the dependence syndrome and lead a normal life, my idea of feminism materializes" Born in Allahabad, Meena Alexander was among the rare writers who have put their talents and ideologies into writings, particularly as a patron of equality to women. Critical discussion of her writings often centers on her contributions to Anglophone postcolonial literature , but scholars also have responded to her feminist perspective on literary and cultural issues. The present paper aims to highlight Alexander's feminist approach in her novels.

Keywords- Feminism, approach , dependence Syndrome, diaspora.

" While I do not think I consciously write as a woman. I have little doubt that some of my deepest emotions and insights spring from having been born into a female body , learning to grow up a woman.

Meena Alexander , a South Asian American feminist-author –teacher and a woman cracked by multiple migrations is painfully aware of the fault lines that divide, clash and create disorder within herself as well as the society she resides in one that is laden with racial, gender and class inequalities. Within the developing group of south Asian woman writers struggling with the paradoxes of writing about women issues in English, Meena Alxander emerged as one of the most significant voices in the realm of South Asian women writers. Her creative work lies at the intersection of postcolonial ethnic American , and women's studies. Author of the critical study Women in Romanticism;Mary Woolstonecraft , Dorothy Wordsworth and Mary Shelley, Alexander is particularly interested in contemporary Indian

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35e0d7e739e2ded42c9fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69dd f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:16:25 +05'30'

Sl.No. 317

64th All India English Teachers' Conference

Organised By

Post Graduate Department of English & Research Centre

MAGADH UNIVERSITY, BODH GAYA - 824234

06 - 08 February, 2020

under the aegis of

Association for English Studies of India

Theme: An Overview of Literatures in English Language: Continuity and Departure

Certificate

This is to certify that Prof/Dr/Mr/Ms. Arti Kumari, Guest Faculty

of Department of English, B.R.B College, Samastipur, L.N.M.U. Darbhanga *participated in the Conference.*

He/She chaired a session/presented a paper entitled.....

Dr. Sushil Kumar	Dr. M.N. Anjum	Dr. Nibha Singh
Coordinator-cum-Treasurer	Coordinator	Local Secretary

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=Personal, 2.5.4.20=9a26c48bba355d07e739c2a6d42cf8b5d178262c66ab1c0206656c88c8d, postalCode=848101, st=BIHAR, pseudonym=1f5e7fdc5d8e64bcb6b2cf6108833d, 2.5.4.42=5f3d7b7d7d7d7d7d7d7d7d7d7d7d7d7d, serialNumber=a9742d969d8f3c4e466ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:20:06 +05'30'

Accredited
C++ by NAAC

INTERNATIONAL CONFERENCE

On

"Interdisciplinary Research For
Sustainable Development : Innovations & Opportunities"

Organised by

D.B. College, Jaynagar, Madhubani (Bihar)

(A Constituent Unit of Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga)

Associated with

Bihar Entrepreneurs Association (BEA)

Indian Association For Management Development (IAMD)

(16th-17th March, 2020)

Certificate

It is here by certified that Prof./Dr./Mr./Ms./Mrs. Arti Kumari, Guest Faculty

Department of English *University/College/Organisation* B.R.B. College, Samastipur

Scholary participated in International Conference as Delegate / Academician / Research Scholar & Student. He/She presented a paper entitled A Literary Review of Women Empowerment through Women Writer's Eyes *In International Conference (ICSD-2020) organised by D.B. College, Jaynagar, Bihar in association with Bihar Entrepreneurs Association, Bihar and Indian Association for Management Development (IAMD) held from 16th to 17th March, 2020.*

His/Her contribution enhanced the intellectual excellence of the International Conference.

IAMD

Dr. Anand Kunwar

Dr. Anand Kunwar
Organising Secretary
ICSD-2020

Dr. Shailesh Kumar Singh
Chief Editor, IAMD Journal
Convener, ICSD-2020

Chairman
Technical Session-I/II/III/IV
ICSD-2020

Dr. Nand Kumar
Principal, D.B. College
Patron, ICSD-2020

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=3a5448ba35e057c72ba204f42c5f93d117826c26eab1c623066c5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0bab0a8a8746370817a7f738b832c087135df af37e0f60d8f2c4ef4cca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:20:35 +05'30'

महिला सशक्तिकरण

अवधारणा, चिंतन और सरोकार

डॉ. शैलेश कुमार सिंह । डॉ. अनामिका तिवारी
अनिल कुमार बैरोलिया

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266ea b1c623065c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37 e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:21:36 +05'30'

11. महिला सशक्तिकरण: सामाजिक एवं आर्थिक आयाम-समीक्षात्मक अध्ययन 75
डॉ0 रमण कुमार ठाकुर

12. कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन : बिहार राज्य के संदर्भ में 83
डॉ. राजीव रंजन

13. स्वतंत्रता संग्राम में मिथिला की महिला 93
आशुतोष मिश्र

14. राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका : एक मूल्यांकन 97
डॉ. रंजीत कुमार

15. महिला सशक्तिकरण के विकास में चुनौतियाँ और सरकार की भूमिका 102
लूसी कुमारी

16. राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल प्रमुख महिलाएँ : एक अध्ययन 111
लक्की कुमारी

17. Impact of ICT on Women Empowerment in India 118
Ms. Asmita Khanna and Prof. H.K. Singh

18. Empowerment of Indian Rural Women Through Education 127
Mrs. Sudeepa Dey, Mrs. Ipsita Chakraborty

19. Women in Kamala Markandaya's Novels 135
Dr. Deepa Kumari

20. Feminism in 'Buddhism " A Historical Study 139
Sandeep Kumar Jha

21. Sudha Murty : Epitome of Women Empowerment Through Socio – Economic Transformation 143
Dr. Arti Kumari

22. The Role of Education in Gender Equality And Women's Empowerment: A Depth Study of Its Dimensions 151
Dr. Meera Singh and Dr. R.K. Singh

23. SIDBI - Dynamic Role Player in Women Entrepreneurship 161
Dr. Anamika Tiwari and Anil Kumar Bairolia

24. Women Entrepreneurship Development India and its History 169
Dr. Shailesh Kumar Singh

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3afb74637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:22:10 +05'30'

21

Sudha Murty : Epitome of Women Empowerment Through Socio – Economic Transformation

Dr. Arti Kumari

ABSTRACT

Sudha Murthy , a name not unknown to all is no doubt a living inspiration to many , with the multiple roles she has played over the years of an engineer, author, philanthropist , homemaker and many more. A woman is a full circle. Within her is the power to create, nurture and transform. But unfortunately woman in this male dominating society finds herself living in a world where men compels her to assume the status of the other. Breaking all the stereotypes , Sudha Murthy in this male dominating society has marked her presence by doing the extreme works in that era or period wherein women in general, were neither given any support nor were appreciated to work and study. She was way ahead of her time and very confident. She, later on, became the backbone of Infosys, co-founded by her husband Narayan Murthy. She stands as an eminent and worthy example of women empowerment through socio- economic transformation.

Keywords –Epitome, Women, Empowerment, Socio – Economic Transformation

"I know what my goals are and where I am heading, and I don't need anyone's help to reach my destination. God has been very kind to me. I have been fortunate enough to live in a place like Bombay where this mad rush has a humane side to it .I have excellent friends who trust me and will not hesitate to help me' if I am in trouble. All my students are as dear to me as my own children would have been. Their unconditional love has never made me think of myself blemished. I cannot help feeling sad for those women who are still at the mercy of their husbands and in- laws, and are emotionally and economically

Department of English, B.R.B. College, Samastipur

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babcd3a6874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:22:39 +05'30'

2017-18, Sl. No.-15

ISSN: 2231-1688

SHODH-DARPAN
शोध-दर्पण

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. VIII Issue 1 January - June 2017

Editor-in-Chief
Dr. Gyan Prakash Mishra

Editor
Dr. Rajesh Kumar Rai

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cffe10883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af87637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:23:29 +05'30'

डॉ० धर्मेन्द्र कुमार राय
❖ इतिहास लेखन के क्षेत्र में ग्रीको रोमन परम्परा का योगदान
डा० शिव नारायण 223-226
❖ Occurrence of new host of root-knot nematode on different crops in Jammu region of J&K
V. K. Singh
R. K. Singh 227-231
❖ कला–संरचना में नदी देवियों का प्रतिमांकन (मध्य–छत्तीसगढ़ क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)
प्रो.दिनेश नंदिनी परिहार
एकता ताम्रकार 232-237
❖ The Ancient Megalithic practices in Jashpur district (Chhattisgarh region)
Dr. Nitesh Kumar Mishra
Anshu Mala Tirkey
Baleswar Kumar Besra 238-242
❖ lourishing Vedic Tradition Under the Chālukyas of Bādāmi
Arpita Chatterjee 243-251
❖ महाकवि कर्णपूर : व्यक्तित्व और कृतित्व
डॉ. नरेन्द्र झा 252-256
❖ गोपाल सिंह 'नेपाली' की राष्ट्रीय चेतना : स्वरूप और वैशिष्ट्य
डॉ० आर्य सिंधु 257-262
❖ महात्मा गांधी के विचारधारा में आधुनिकतावाद : एक विश्लेषनात्मक अध्ययन
रंजीत कुमार 263-267
❖ सिंधु घाटी सभ्यता में विकसित नगरीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव
नीलू कुमारी 268-271
❖ वैदिक समाज में महिलाओं का स्थान
डॉ० मुनीन्द्र कुमार शुक्ल 272-274
❖ प्राचीन भारतीय समाज में सामन्तवाद का उद्भव एवं विकास तथा सामाजिक स्थिति पर इसका प्रभाव
मिलिन्द कुमार 275-278
❖ Shashi Despande's Articulations of Middle Class Feminine Psyche
Arti Kumari 279-284
❖ महिला लेखन एवं दलित लेखन का औचित्य
डॉ. कंचन यादव 285-289
❖ Impact of E-Commerce in Indian Economy
Kancham Prasad 290-297
❖ प्राचीन भारत में नारी शिक्षा
डॉ० प्रतिभा ओझा 298-300
❖ शिक्षा का मौलिक अधिकार : कार्यान्वयन की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ 301-303

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c087135dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:24:00 +05'30'

Shashi Despande's Articulations of Middle Class Feminine Psyche

Arti Kumari
Research Scholar, L.N. Mithila University, Darbhanga

Abstract :

Shashi Deshpande as an author mirrors a realistic picture of the contemporary middle –class, educated, urban Indian woman A close analysis of her novels leaves no doubt about her genuine concern for women Shashi Despande has presented a woman's world from a woman's point of view. She explores the traumas and agonies of being a woman. With Sashi Despande, we move into a much more middle – class ethos and the forms of male repression within the family that takes on an uglier, more obvious form. She mainly portrays women from the middle class. The portrayal is quite unique .Her protagonist neither represents the old, orthodox image, nor a modern westernized woman and She is the ' every woman' of the Indian middle class society , who tries hard to rise above tradition but is involuntarily adapted to it. She maintains a unique position among the contemporary, up –coming Indian writers in English.

Keywords: - Woman, Middle class feminine psyche traumas and agonies of women.

"Most of my writing comes out of my intense and long suppressed feelings about what it is to be a woman in our society: it comes out of the experience of the difficulty of playing the different roles conjoined upon me by society , out of the knowledge that I am something more and something different from the sum total of these roles .My writing comes out of my consciousness of the conflict between my idea of myself as a human being and the idea that society has of me as a woman.'

Shashi Despande has emerged as a strong new voice and a great literary force in the field of fiction by women writers .Her dignified presence ,innate warmth and grace can win the hearts and minds of anyone from aspiring writers to intellectuals opponents . Her twinkling eyes believe a razor-sharp mind , one which sees through human subterfuges and smiles at the quirks and ironies of life. The prolific author began her career with the publication of a collection of short stories entitled " *The Legacy*' (1978) and has gone on to pen nine short story collections, twelve novels and four books for children.

Shashi Despande has penchant for writing whose major themes are inclined towards a realistic picture of contemporary middle –class women. She focuses on women's issues. The operative sensibility in her stories is distinctly female and modern . In his preface to *The Legacy*, Professor G.S. Amur has identified her central theme: " Woman's struggle in the context of contemporary Indian society to find and preserve her identity as wife , mother and most important of all , as human being in Shashi Despande's major concern as a creative writer and this appears in all her important stories.'

She has a woman's perspective on the world .One of the finds that the primary reason for Shashi Despande to write is that she allows to create her own world.

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:24:34 +05'30'

2018-19, Sl. No.-13

Registration No. 1803/2008

ISSN No. 2319-6297
Impact Factor: 3.963

The Original Source
JOURNAL FOR ALL RESEARCH

An Interdisciplinary Quarterly Research Peer Reviewed Journal

Vol. 4.1 No. 19 April-2018

UGC Approved Journal

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:25:12 +05'30'

Chief Editor
Prof. (Dr.) Ashok Kumar Singh

Editors
Dr. Rajeev Kumar Srivastav
Dr. B.K. Srivastav

CONTENT

20.	माओवादी आन्दोलन और उत्तर प्रदेश : वर्तमान परिदृश्य डॉ० आनन्द कुमार पाण्डेय	....	76-79
21.	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नवादा के भूले बिसरे नायक– एक ऐतिहासिक अध्ययन डॉ. अशोक कुमार प्रियदर्शी	....	80-82
22.	Discussion on Methodology related to phytolith study for Palaeo-environmental reconstruction Dr. Tulika	....	83-88
23.	"भारत में कुपोषण की सबसे बड़ी समस्या अभाव, अशिक्षा व अज्ञानता " डॉ० मंजूश्री	....	89-91
24.	PERFORMANCE OF PUNJAB NATIONAL BANK IN RETAIL ADVANCES Dr.Sugandha Pandey	....	92-96
25.	N.B.P. Sites in the Close Vicinity of the Ganges in Begusarai District Dr. Amiya Krishna	....	97-99
26.	Marxist Approach of Women's Employment Dr. Mukesh Kumar	....	100-102
27.	पंचायती राज संस्थाओं में नव–नेतृत्व वर्ग का उदय एवं राजनीतिक सहभागिता डॉ० प्रवीण कुमार सिन्हा	....	103-106
28.	Depiction Of Stigma , Struggle And Emancipation Of Women In Alexander' s Nampally Road ARTI KUMARI	....	107-111
29	स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति में बदलाव एवं निरंतरता सुमित कुमार सिंह	....	112-114
30	मनरेगा का राष्ट्रीय महत्व: एक विश्लेषण सोनी कुमारी	....	115-116
31.	Empowerment of Women in Tirhut Division Chandni Chavala	....	117-120
32.	SOME CORRELATES OF SOCIAL SKILLS Dr. DHANVIR PRASAD	....	121-124
33.	भारतीय समाज में महिला की स्थिति एवं अपराध : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण राखी प्रजापत	....	125-129
34.	"प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति एक अध्ययन" सिम्मी कुमारी	....	130-132
35.	भारतीय समाज में लैंगिक असमानता : एक विश्लेषण असलमा परवीण	....	133-136
36.	दलित मुसलमान "राईन" : एक ऐतिहासिक अवलोकन दीपक महतो	....	137-141
37.	भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक स्वरूप एवं ग्रामीण औद्योगीकरण डॉ. कृष्ण कुमार सिंह	....	142-145
38.	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी का रचनाकर्म सार्थकता की तलाश डॉ. रवीन्द्र पाठक	....	146-150

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:25:48 +05'30'

Impact Factor : 3.963 (IIJF)

ISSN :- 2319-6297

DEPICTION OF STIGMA , STRUGGLE AND EMANCIPATION OF WOMEN IN ALEXANDER'S NAMPALLY ROAD

ARTI KUMARI •

ABSTRACT

"If all men are born free, how is it that all women are bornslaves?"

The world has entered into a new millennium, but from the dawn of civilization till date, the woman of the patriarchal society of India continues to be oppressed and ill- treated. She is dependent , weak , exploited and faces gender discrimination in all spheres of life. Violence against women occurred throughout their life cycle from pre birth, infancy , childhood , adolescence , adulthood to senescence. Meena Alexander was among the rare writers who have put their talents and ideologies into writings , particularly as a patron of equality to women . Much of her literature depicted her own involvement with the issues of women and what it mean to be a women in a patriarchal society. Born in Allahabad in a Syrian Christian family from Kerala, Meena Alexander had gained a prestigious position among women writers writing in English. She had penchant for writing whose major themes are inclined towards diasporic experience, feminist consciousness, and multiple facets of violence against women. Meena Alexander, a South Asian American feminist –author-teacher and a woman cracked by multiple migration was painfully aware of the fault lines that divided , clashed and created disorder within herself as well as the society she resided in , one that was laden with racial, gender and class Inequalities. The novel Nampally Road gives proper merit and value to women. This is because Meena Alexander has experienced this problem in Hyderabad, where she taught for a few years. In her 1992 novel NampallyRoad , Alexander gives fictional form to a true episode of the rape of a muslim women in Hyderabad in police custody. Haunting and lyrical , the novel vividly potrays contemporary India and one woman's struggle to piece together her past. The novel reproduces accurately the climate of political repression, the brutal treatment of Rameeza and the manner in which it galvanizes women activist and other social and political groups. Unlike the real events , however, the novel does not follow the Rameeza be trial but focus on her immediate rehabilitation after the traumatic event. This paper examines the depiction of stigma , struggle and emancipation of women in MeenaAlexander'sNampally Road .

Keywords- *Feminism, Women Violence, Struggle, Emancipation, Gender Identity Crisis , Justice*

"While I do not think I consciously write as a woman. I have little doubt that some of my deepest emotions and insights spring from having born into a female body , learning to grow up as a woman.....". Passinnate, lyrical, evocative, brilliant, ironic, Meena Alexander was a leading member of a very special generation of women writers. At home, on several continents, in exile from all of them, they are creating a multicultural sensibility for the late twentieth century." She as a prodominant poet and a prominent women writer of postcolonial diaspora defined herself as a hyphenated "women- poet- of colour, as South Indian- woman poet...a third- world- women poet" textualized gender issues ,and what it meant to be born into a female body. Feminist issues comprise majority of her work, including her scholarly studies. Meena Alexander was a South Asian American feminist- author- teacher whose literary oeuvre destabilizes many categorical distinctions; among these are the binaries of nation and diaspora, home and exile, language andsilence, and the private and the public. In literary forms, seemingly distinct like the memoir and lyric on the one hand and the novel on the other, Alexander explores the intimate intermingling of personal relations with the traumatic events in public sphere. In her 1992 novel ,*Nampally Road*, Alexander gives fictional form to a true episode of the rape of a muslim woman in Hyderabad in police custody. According to Alexander, women already feel marginal and when this is coupled with situations of violent disorder, it brings about a fragmentation of the patriarchal mode and of the marginalization of female

• **Research scholar** Department of English L.N.M.U. Darbhanga

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:26:23 +05'30'

ISSN NO. 2348-6228
Impact Factor: 2.132

2018-19, Sl. No.-14

Current Journal

JOURNAL FOR ALL RESEARCH

A Blind Peer Reviewed Manthly Journal

An international research Referred Journal Related to Law, Human Rights, Literature, Language, Science, Commerce, Management, Communication and Social Science

Vol. 5.2 No. 18, April-2018

UGC Approved Journal

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:27:03 +05'30'

CONTENT

- समकालीन कविता में नारी और समाज
  डॉ0 आर0पी0 वर्मा 1-6
- भूमण्डलीकरण के युग में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन में निहित विश्वबोध
  चित्रा पाण्डेय
  डॉ0 संतोष कुमार सिंह 7-10
- श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्रीरामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन : पं0 राम किंकर उपाध्याय की दृष्टि में
  डॉ0 अमरेन्द्र सिंह 11-16
- मैथिलीशरण गुप्त के काव्य 'भारत भारती' में राष्ट्रवाद
  डॉ0 आर0पी0 वर्मा 17-19
- विद्यार्थियों में राष्ट्रीय विरासत सम्बन्धी शैक्षिक सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन : एक दृष्टि
  राजीव कुमार
  डॉ0 संतोष कुमार सिंह 20-21
- Banking Industry: Evolution And Growth
  Dr. Sugandha Pandey 22-24
- Jnana,Karma and Bhakti in the Gita
  DR.AmiyaKrishna 25-29
- **आदिवासी साहित्य में महाश्वेता देवी का योगदान**
  डॉ0 नीरजा यादव 30-32
- Quaternary Formations Of The Middle Son Valley A Study Of Palaeogeography And Prehistory
  Arun Kumar 33-37
- ललित विस्तर में वर्णित वस्त्र, आभूषण एवं श्रृंगार प्रसाधन
  अमित कुमार 38-39
- मैला आँचल में स्त्री जीवन का यथार्थ
  पूनम कुमारी 40-43
- Harappan Trade Route With Special Reference Of Trade Links
  Shweta Singh 44-48
- संस्कृत साहित्य में नाटक की उत्पत्ति और विकास
  पुष्पा कुमारी 49-51
- **Development of Social Skills among Mentally Retarded Students**
  Dr. Arvind Kumar ray 52-54
- **A COMPARATIVE STUDY : FEMINISM AND SOME SIGNIFICANT INDIAN FEMINIST VOICES**
  ARTI KUMARI 55-60
- मिथिला का सामाजिक–आर्थिक जीवन
  डॉ0 सरोज कुमार रजक 61-62
- हिंदी उपन्यास साहित्य को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की मौलिक देन
  –डॉ. रवीन्द्र पाठक 63-66
- Role of Arbuscular Mycorrhizal (AM) fungi in sustainable Agriculture
  Author: Nitin Kumar
  Navneet Kumar Mishr 67-71

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:27:46 +05'30'

Impact Factor : 2.132

A COMPARATIVE STUDY : FEMINISM AND SOME SIGNIFICANT INDIAN FEMINIST VOICES

ISSN :- 2348-6228

ARTI KUMARI*

Abstract -

The term 'feminism' was derived from the Latin word 'Femina' meaning 'woman' and was first used with regard to it the issues of equality and Women's Rights Movement. Ever since antiquity, there have been women fighting to free their half of the population of the world from male oppression. Feminism is neither fad nor a logical extension of the civil rights movement, but the protest against the legal, economic and social restrictions on the basic rights of women which have existed throughout history and in all civilizations. Naturally, the principles of feminism have been articulated long ago. The definition of the term 'feminism' differs from person to person. According to the French models of 'feminism' it implies sexual expression. If we take into account the British models, all feminists slowly become respectable, or acclaimed into male world order. If we consider American models, they are more outspoken. Chaman Nahal in his article, " Feminism in English Fiction" defines feminism as " a mode of existence in which the woman is free of the dependence syndrome: whether it is the husband or the father or the community or whether it is a religious group. When women free themselves of the dependence syndrome and lead a normal life , my idea of feminism materializes."

Today many people feel that feminism has almost ended because it has nearly won the war at most of the fronts by achieving for women equality with men in all walks of life- political, social, economic e.t.c. But the fact is that the feminist movement is still going quite all over the world with the prospects of getting stronger in the near future. This paper aims at covering feminism and a comparative study of some bold and significant Indian feminist voices.

Keywords-Feminism , Patriarchal Society, Violence against women, Indian female psyche, Freedom, Feminist voices, Equality

"One is not born, but rather becomes a woman. No biological , psychological Or economic fate determines the figure that the human female presents in Society ; it is civilization as a whole that produces this creature ,intermediate between male and eunuch , which is described as feminine."

Feminism is a movement influenced by the idea postulated , popularized and precipitated by thinkers and authors like Alice Walker, Naomi Littlebear, Judith Felterbey , Michele Wallace ,Lillian Smith , Elaine Showalter, Simone de Beauvoir, Kate Millett and others. It is a modern movement expressing protest against the male domination. It provides strategies for change. The aim of feminists is to understand women's oppression keeping in mind race, gender, class and sexual preference.

Today many people feel that feminism has almost ended because it has nearly won the war at most of the fronts by achieving for women equality with men in all walks of life- political , social, economic etc . But the fact is that the feminist movement is still going quite strong all over the world with the prospects of getting stronger in the near future. The origin of violence against women is seen in subordination of women in the world. Women are called womanly only when they regard themselves as existing solely for the use of men. In *Manusmriti* , Manu has given secondary place to women. The same thing is reflected in Islam, and Christianity. Great thinkers like Aristotle, Rousseau, Hegel, Sartre, Freud, and Nietzsche consider women inferior.

According to Simone de Beauvoir, "The situation of woman is that she is a free and autonomous being like all human creatures – nevertheless finds herself living in a world where men compel her to assume the status of the other."

* Department of English L. N. M. U. Darbhanga

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c488ba35e0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfd37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:28:27 +05'30'

2018-19, Sl. No.-15

www.svu.edu.in ISSN (P): 2348-7097

Venkateshwara International Journal of Multidisciplinary Research

(Bi-annual Double Blind Peer Reviewed Referred Journal)

Vol. 04 Issue: 02 July-Dec.: 2018

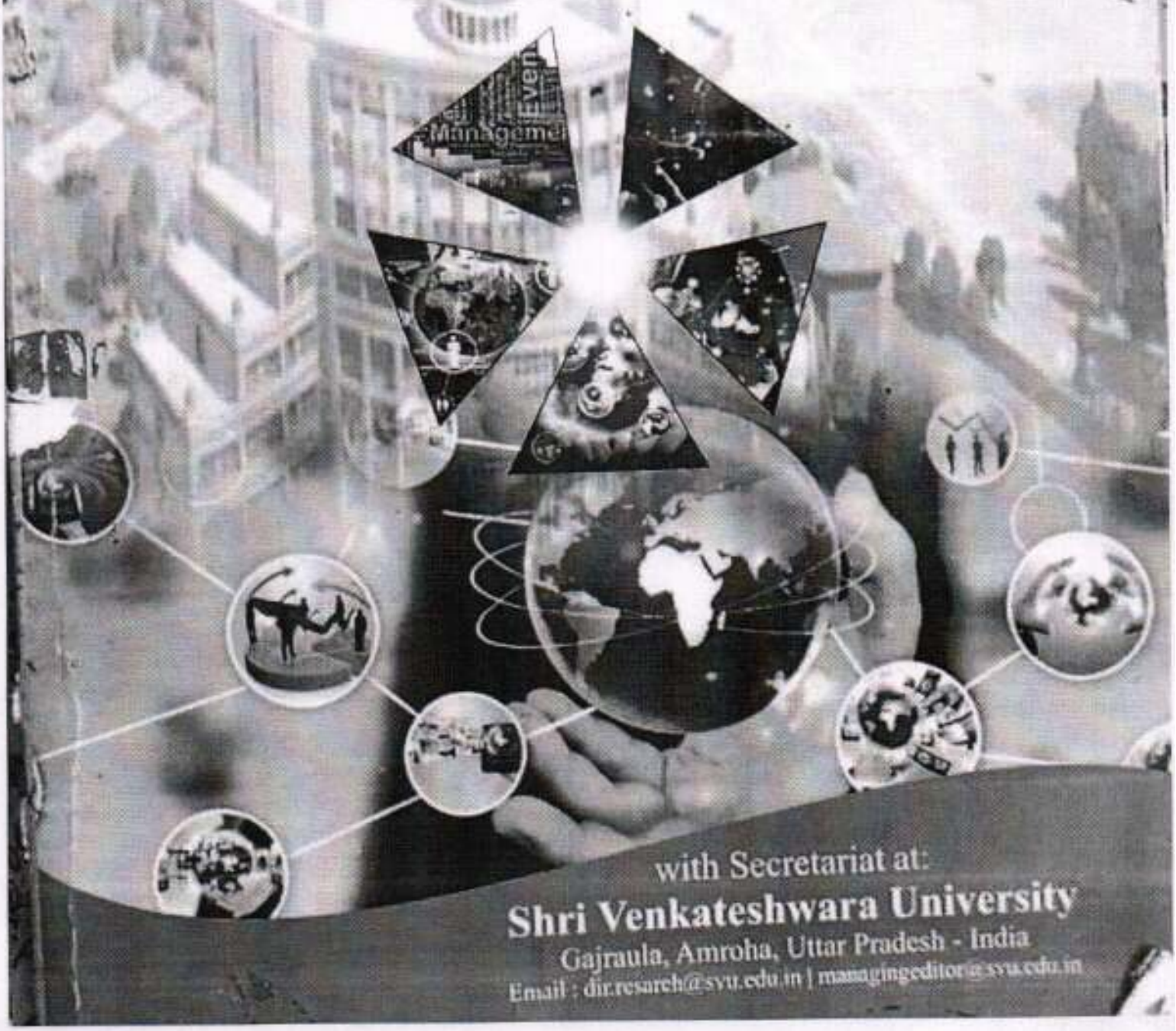

with Secretariat at:
Shri Venkateshwara University
Gajraula, Amroha, Uttar Pradesh - India
Email : dir.resarch@svu.edu.in | managingeditor@svu.edu.in

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37a0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:29:10 +05'30'

Dr. Shailesh Kumar Singh

10. **Anthelmintic Activity of Pulp and Seed Extracts of Cucumis Melon** 69-73

Veer Bala

11. **Emerging Trend in Cinema: An Eco-Critical Approach** 74-83

Shefali Sharma & Dr. Uma Mishra

12. **माध्यमिक स्कूल के छात्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करना: एक प्रेरक तकनीक** 84-86

आराधना सिंह

13. **विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग का कर्तव्यों से विमुख होना** 87-90

दीप्ति भटनागर

14. **भारतीय न्यायशास्त्र और महिलाएं** 91-96

डॉ0 सोनिका चौधरी, अनिल कुमार जायसवाल

15. **Social entrepreneurship in Angul: A Comprehensive Study of Organizations by Social and Business Emphases in Mission** 97-103

Kishan Digal & Prof. Pradyot Keshari Pradhan

16. **व्याकरण की उपादेयता एक अनुशीलन** 104-107

डॉ० मनीषा कुमारी

17. **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की भूमिका** 108-114

डॉ० प्रदीप कुमार गुप्ता

18. **Protection of human rights in developing nations and its impact On social changes** 115-130

Dr Manoj Kumar

19. **Diasporic Consciousness in Meena Alexander's Manhattan Music** 131-135

Arti Kumari

20 **राँची व खूंटी जिले के महिला अपराधियों का विभिन्न परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन** 136-145

आस्था

21 **जनधिक्य का आर्थिक विकास पर प्रभाव** 146-150

डॉ० संजय कुमार कन्धव

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:29:56 +05'30'

Vol. 04, Issue- 02, July-Dec. 2018
ISSN: 2348-7097

Venkateshwara International Journal of Multidisciplinary Research (VIJMR)

DIASPORIC CONSCIOUSNESS IN MEENA ALEXANDER'S MANHATTAN MUSIC

Arti Kumari
Research Scholar, L.N.M.U,Darbhang

Abstract

The term 'Diaspora' which was originally used for the Jewish dispersion from their native land has connotations of expatriates , exiles , immigrants ,political refugees etc. This phenomenon of migration and dispersion is not new to the contemporary world of human beings. Even after the settlement of nomads as communities these people experienced dislocation from their homeland. The reasons and factors for migration vary but the immigrants share common experiences of dislocation. The migrants are not only geographically displaced but they carry with them 'socio-cultural baggage' , to use V. Anyaram's phrase. William Safran in his paper "Diasporas in Modern Societies : Myths of Homeland and Return" encapsulates that the immigrants "continue to relate personally or vicariously , to that homeland in one way or another , and their ethno – communal consciousness and solidarity are importantly defined by the existence of such a relationship". Writers like Bapsi Sidhwa and Meena Alexander remain attached to their Asian roots and therefore highlight a distinctive national consciousness in their works by constantly invoking images of their native land from memory. In the present paper an attempt has been made to investigate or recognize the elements of diasporic consciousness in Meena Alexander's Manhattan Music.

Keywords : Diaspora , transnationalism , hybridity , identity crisis.

Introduction

Meena Alexander is a prolific writer and an internationally acclaimed poet and scholar . She was born in Allahabad into a Syrian Christian family from Kerala and was raised in India and Sudan and got her Ph.D in England. She returned to India at age twenty- two as a college teacher for a couple of years before moving to New York City with her Jewish American husband. As Ngugi Wa Thiong'o introduces in the preface of Fault Lines, Alexander's life is characterized by multiplicity;

Multiple religions – Christianity , Judaism , Buddhism , Hinduism -

are part of her growing up. She dwells in multiple places she calls

home, although quite often they are temporary abodes on her way

to elsewhere, crossing borders of geography, culture, and language.

India, Africa, Europe, and the United States are her home at different

times, but they are also her places of exile which she longs for home..

She dwells in many languages….Malayalam , the language of her

Kerala childhood(,) Arabic, the language of her home in Africa(,)

French and English, the language of colonial impositions…. (xi-xii)

Because of such multiplicity in life, Alexander has developed her distinctive

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5f3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:30:40 +05'30'

2018-19, Sl. No.-16

ISSN : 2249-6742
UGC Serial No.: 40965

Shodh Pravah

JOURNAL FOR ALL RESEARCH

AN INTERNATIONAL RESEARCH REFERRED JOURNAL

A Blind Peer Reviewed Quarterly Journal

VOLUME : 8.4 NO. : 3

JANUARY-MARCH 2019

Chief-Editor
Dr. Shivdeepak Sharma

Sub-Editor
Dr. Keshav Kishor Kashyap

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:31:24 +05'30'

- शिक्षा, राष्ट्रीयता और मदन मोहन मालवीय
  मंगला कुमारी 160-162
- Bt COTTON AND ENVIRONMENTAL HISTORY IN INDIA
  Suman Kumar Verma 163-168
- भारत में संविधान एवं संविधानवाद
  सुमित कुमार सिंह 169-170
- सोशल मीडिया: कैंसर रोगियों की स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता 171-172
  डॉ सन्तोष कुमार
- Mental Health In Relation To Emotional Itelligence Among Adolescence Students 173-175
  Dr. Sangita Kumari
- Impact on Small Scale Industries of Goods and Service Tax (GS 176-180
  Mukesh Kumar
- नागार्जुन का नारी–सशक्तीकरण 181-182
  डॉ० पूनम कुमारी
- वर्तमान समय में गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता 183-185
  नूतन गुप्ता
- भारतीय पुनर्जागरण के लक्षण – एक ऐतिहासिक समीक्षा ... 186-188
  कल्याणी कुमारी
- नेपाली के गीतों में उनकी प्रगतिशील–चेतना 189-191
  डॉ0 आर्य सिन्धु
- **Women Empowerment a sort of paradox in Indian society** 190-194
  DR. ARTI KUMARI
- खगड़िया जिला के विभिन्न नदियों में बाढ़ की प्राकृतिक भू–दृश्य : एक भौगोलिक अध्ययन 195-198
  मुकेश कुमार
- सामाजिक संरचना को बनाये रखने में धार्मिक विश्वास का महत्व 199-201
  डॉ. आर. के. मौर्या
- ।।श्रीमद्भगवद्गीता में योगनिष्ठा।। 202-203
  डॉ0 ऋषिकेश कुमार
- सावधान! नीचे आग है: कोयलांचल के खदानों में खान मजदूरों की दारुण व्यथा 204-205
  अनुपम भारती
- सिवान जिले की जनसंख्या वृद्धि एवं उसका प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन 206-208
  रमेश कुमार रजक
- **Home Environment and Socio-economic status on Academic Achievement** 209-214
  Jolly Sinha
- इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास 214-21
  डॉ. रवीन्द्र पाठक
- ग्रामीण औद्योगीकरण उदारीकरण मॉडल एवं श्रम स्वरूप में परिवर्तन 217-21
  डॉ. कृष्ण कुमार सिंह
- कृषि का वितरण प्रारूप : रोहतास जिला का भौगोलिक अध्ययन 220-22
  डॉ0 गौतम कुमार
- मानवीय नैतिकता और सद्गुणों की नैतिकता: विलियम के. फ्रैंकना के संदर्भ में 223-22
  प्रीति कुमारी
- मैथिली साहित्यमे कवी वर चन्दा झाक योगदान 225-22
  प्रीति कुमारी
- भारत में कश्मीर समस्या एवं अन्य वैश्विक महाशक्तियाँ 227-2
  राजकुमार राय
- "भारत राष्ट्र का शक्ति सम्राट् श्री हनुमान्" 229-3
  डॉ० कुमारी
  अनिता राय 236-2

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c620665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:32:08 +05'30'

UGC Serial No. : 40965

ISSN : 2249-67[illegible]

Women Empowerment a sort of paradox in Indian society

DR. ARTI KUMARI*

Abstract:-

"One is not born, but rather becomes a woman. No biological, psychological or economic fate determines the figure that the human female presents in society, it is civilization as a whole that produces this creature that mediate between male and eunuch, which is described as feminine."

Today many people feel that feminism has almost ended because it has nearly won the war on most fronts by achieving for women equality with men in all walks of life- Political, social, economic e.t.c. But the fact is Women in India has been subject to discrimination, sexual exploitation and social taboos. In male dominated Indian society women is still "secondary living." On the one hand it promises Women empowerment ensuring Women greater freedom and equality in all spheres on the other hand rape, murder, molestation, sexual exploitation, domestic violence, female foeticide, dowry e.t.c. presents how Women empowerment is a sort of paradox in contemporary Indian society.

Keywords:-

Women Empowerment, violence, Feminism Indian Society

"A feminist is anyone who recognizes the equality and full humanity of men and Women."

- Goloria Steinem

Women in Indian society have been subject to discrimination, sexual exploitation, malnutrition and social boycott since the early 19th century. In male dominated Indian society woman is still "Secondary living." No doubt, a sizeable section of society, especially elite class, makes no discrimination between the sexes. By and large, however, women do not enjoy an equal status with men. Joseph Conrad has rightly said, "Being a Woman is terribly difficult task, since it consists principally in dealing with men."

Even an educated, joy-oriented woman can pursue a career only if she does not neglect her preordained domestic duty. Whether a Woman is a scientist, doctor, lawyer, artist or a writer, the discharge of her feminine duties must take priority. No wonder a married woman who takes her profession or academic career too seriously is frowned upon. And that is why many Indian women shun marriage, for they fear that it would stand in the way of their success in their respective fields. Jaspal Kaur Singh has rightly said:

On the face of it, progressive, self-assertive women appear caught in a dilemma, in that ideology that promises self-expression, liberation and transformation through political action is characterized by their simultaneous marginalization, and that nationalist resistance has often been resolved in a revivalist direction, reifying traditional gender differences."

The origin of violence against women is seen in the subordination of women in the world. In Manusmriti, Manu has given secondary place to women. The same thing is reflected in Islam and Christianity. Great thinkers like Aristotle, Rousseau, Hegel, Sartre, Freud and Nietzsche consider women inferior. According to Simone de Beauvoir, "The situation of Woman is that she is a free, autonomous being like all human creatures – nevertheless finds herself living in a world where men compel her to assume the status of the other. The Hindu moral code known as "The Laws of Manu" denies woman as existence apart from that of her husband or his family, and since the publication of Bankim Chandra Chatterjee's Rajmohan's wife in 1864 a significant number of authors have portrayed Indian Women as loge-suffering wives and mother, silence by Patriarchy. The ideal of the traditional, oppressed woman persisted in a culture permeated by religious images of virtuous goddesses devoted to their husband, the Hindu

• Guest Faculty,Department of English B.R.B.College, Samastipur L.N.M.U. Darbhanga

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:32:53 +05'30'

2019-20, Sl. No.-02

ISSN 0975-8690 UGC List No 44958 Impact Factor 3.214

THE ETERNITY

An International Multidisciplinary Peer Reviewed and Refereed Research Journal

Volume X No. 1-2 January-June 2019

Patron
Prof. Dilip K. Dureha

Editor-in-chief
Dr. Yatendra K. Singh

Editors
Prof. Surendra Singh
Dr. Priyanka Singh
Dr. Vinit Mehta

Associate Editor
Priti Singh

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=115e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:33:45 +05'30'

❖ कला और कलाकार 274-278

डा0 सीमा वर्मा

❖ **Technique & Writing Style of Meena Alexander** 279-288

Dr. Arti kumari

❖ **Agricultural Development inNawada District of Bihar: A Geographical Study** 289-294

Praveen Shankar

❖ सामाजिक सुधार में डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर और नेल्सन मंडेला का योगदान 295-301

राकेश कुमार रजक

❖ भोजपुर जिला बढ़ती जनसंख्या एक अध्ययन 302-306

डा0 संगीता कुमारी

❖ सम्पर्क भाषा और राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी भाषा की भूमिका 307-314

डॉ0 ममता सक्टा

❖ मनरेगा व ग्रामीण विकास –एक विश्लेषण 315-318

सोनी कुमारी

❖ नई तालीम शिक्षा पद्धति की वर्तमान शिक्षा के सन्दर्भ में उपादेयता 319-325

डा0 विनय कुमार प्राचार्य

❖ **Interaction between a Carbon Nanotube and Plasmonic Nano Particle on the Basis of Electro Magnetic Thing Theory** 326-330

Dr. Naresh kumar

❖ होम रूल लीग आन्दोलन और पत्रकारिता 331-339

अक्षय कुमार

❖ **A Sociological Enquiry of Gandhian Philosophy** 340-347

Dr. Vikramaditya Rai

❖ बलिराजगढ़ की ऐतिहासिकता एवं पुरातत्त्व 348-351

मंदीप कुमार चौरसिया

❖ बुद्धचरिते दार्शनिकतत्त्वानि 352-354

डॉ. शशिकान्त त्रिपाठी

❖ महात्मा गांधी के आर्थिक स्वराज की विचारधारा के विकास में बिहार की भूमिका 355-358

डॉ० मनोज कुमार

❖ उत्तर वैदिक काल में शूद्रों की स्थिति 359-362

डॉ0 सिद्धार्थ कुमार मिश्र

❖ **Reading Shashi Tharoor's *The Great Indian Novel:* A Postmodern Allegory** 363-372

Dr. Rahul Chaturvedi

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=1f5e7dc5d3fe4f4cbcfdb2cff610883d, 2.5.4.20=9a26c48bba35a0d7e739e2ded42c5fb36d17826c266eab1c623066 5c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:34:36 +05'30'

Technique & Writing Style of Meena Alexander

Dr. Arti kumari
Guest Faculty, Department of English, B.R.B.College, Samastipur, L.N.M.U. Darbhanga

Abstract

"Passionate , lyrical , evocative ,brilliant , ironic , Meena Alexander was a leading member of a very special generation of women writers. At home, on several continents , in exile from all of them, they are creating a multicultural sensibility for the late twentieth century'

Born in a Syrian Christian family from Kerela , Meena Alexander had left an indelible imprint on the history of women novelists in English . She was born in Allahabad , India. on February 17, 1951. She was raised in both India and the Sudan in North Africa . She received a bachelor"s degree in French and English from Khartoum University and a doctorate degree in English from Nottingham University in England. Alexander"s collections of poetry include Atmospheric Embroidery, Birthplace with Buried Stones, Quickly Changing River, Raw Silk and Illiterate Heart(2002) , the winner of a 2002 PEN OPEN BOOK Award. Her ninth collection , In Praise of Fragments will be published Posthumously by Night boat Books in February 2020. Her work has been widely anthologized and translated into several languages including Malayalam, Hindi, Arabic, Italian, Spanish , French, German and Swedish. Polyglot and sensual Alexander"s work had been influenced and mentored by Indian poets Jayanta Mahapatra and kamala Das as well as the American poets Adrienne Rich and Galway Kinnel.

Alexander was also the editor of Indian Love Poems (Alfred A . knof, 2005), the author of the novels Nampally Road (1991) and Manhattan Music (1997) and The Shock of Arrival: Reflections on Postcolonical Experience (1996) , a volume of poems and essays . Her works of criticism included Poetics of Dislocation , Women in Romanticism , Mary Wollstonecraft,Dorothy Wordsworth and Mary Shelley (1988) ,

BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY

Digitally signed by BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
DN: c=IN, o=PERSONAL, pseudonym=e1f5e7dc5d1f5e4fc0d0b2cf01109f3d, 2.5.4.20=9b26c48bba3a8d0d1b9d0d6d9d0c5fb36d1f826c296ed1c6230665c88c80e5d, postalCode=848101, st=BIHAR, serialNumber=e0babd3af874637d81a7f738b832c08713f5dfaf37e0f69d8f3c4ef46ca413a0, cn=BIRENDRA KUMAR CHOUDHARY
Date: 2023.04.26 13:35:29 +05'30'